YANTRA SHAKTI

दुर्लभ यन्त्र एवं उनके व्यावहारिक प्रयोगों का अनूठा संग्रह
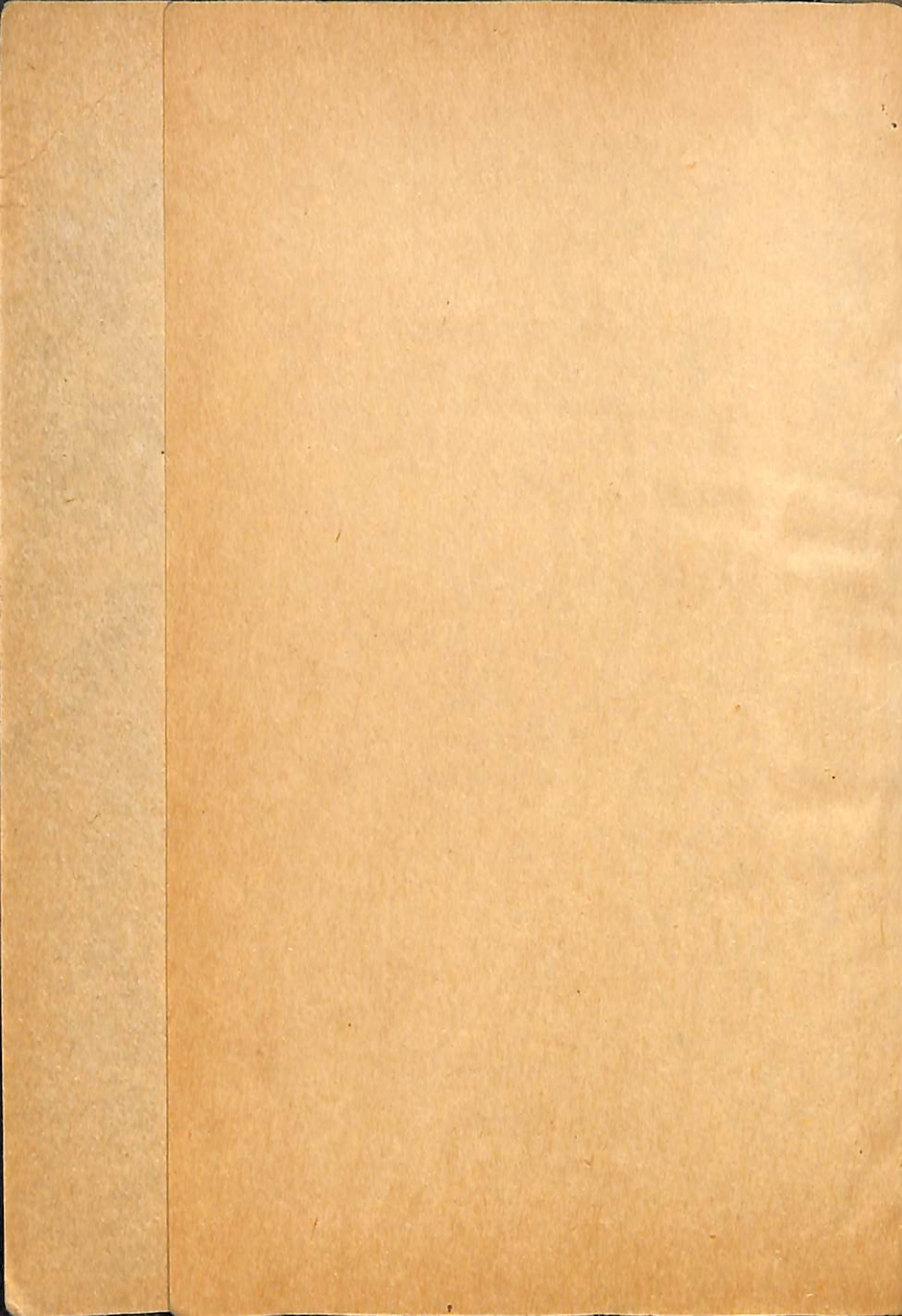
यन्त्र शक्ति

यन्त्र-शक्ति

YANTRA-SHAKTI

[अङ्कयन्त्र, बीजयन्त्र तथा घण्टाकर्ण-कल्प आदि अनेक महत्त्वपूर्ण यन्त्रों का अनूठा संग्रह

द्वितीय भाग

लेखक :

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी, एम० ए०

(दीक्षानाम श्री रुद्रदेवानन्दनाथ)

पी-एच० डी०, डी० लिट्० साहित्य-सांख्ययोगदर्शनाचार्य

रंजन पब्लिकेशन्स

१६, अन्सारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
१६, अन्सारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-११०००२

फोन : ३२७८८३५

संशोधित संस्करण : १९९३

मूल्य : २५ रुपये

मुद्रक :
गोयल प्रिन्टर्स,
दिल्ली-११००३२

दो शब्द

मानवीय चेतना के घेरे में चिन्तन के अनन्त प्रकारों ने जन्म लिया है। भारतीय-संस्कृति के उपासना-तत्त्व का विस्तार भी उससे शून्य नहीं है। सुख की खोज में भटकते हुए मानव के लिये सभी प्रकार के उपाय उपलब्ध करवाये गये हैं। कुछ उपाय सर्व-सुलभ हैं और कुछ गुरुगम्य। जो सर्वसुलभ हैं उनका प्रयोग भी उनके वास्तविक प्रयोगविधान को ठीक तरह से समझे बिना करना खतरे से खाली नहीं है। फिर गुरुगम्य तो गुरु द्वारा जानने ही चाहिये।

आज के व्यस्त जीवन में सभी यह चाहते हैं कि गुरुपरम्परा के ज्ञान, उनसे दीक्षा प्राप्त करना, उनके द्वारा बतलाये विधान के अनुसार पुरश्चरण करना आदि एक कठिन कार्य है, इससे मुक्त रहते हुए कुछ सरल साधन उपलब्ध हों।

हमने यहां ऊपर बताई गई कठिनाइयों से बचने के लिए सरल-सरलतम पद्धति से सिद्ध किये जाने योग्य यन्त्रों का संग्रह किया है तथा ध्यान रखा है कि हमारी शास्त्रीय-परम्परा का भी लोप न हो। इसके लिये यहां प्रत्येक यन्त्र के पहले उससे सम्बद्ध विधि का भी स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।

हम यह तो नहीं कहेंगे कि गुरुपरम्परा का ज्ञान, दीक्षा और पुरश्चरण का त्याग करके भी इन यन्त्रों की साधना की जा सकती है, परन्तु यह अवश्य कहेंगे कि इस संग्रह में दिये गये यन्त्रों की

साधना में उतनी कठिनाइयां नहीं हैं, क्योकि इनके विधान सरल हैं तथा जो स्नान-सन्ध्याशील और गायत्रीमन्त्र की दीक्षा से दीक्षित हैं, वे हमारे द्वारा **'मन्त्रशक्ति'** में दिखाई गई सरल दीक्षाविधि के अनुसार दीक्षित होकर यन्त्रसिद्धि कर सकते हैं।

हमने इससे पूर्व 'यन्त्र शक्ति' के नाम से ही एक पुस्तक पहले प्रकाशित करवाई है वह प्रथम भाग के रूप में है। उसमें यन्त्रों के बारे में **'परिचय विभाग'** में विस्तार से लिखा है, इसलिये यहां संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही यह भी ज्ञातव्य है कि इस **द्वितीय भाग में** बहुत से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध यन्त्रों का संग्रह है और उनकी प्रमाणिक विधि भी संग्रहीत कर दी है।

हमारे द्वारा लिखित **मन्त्रशक्ति, तन्त्रशक्ति** और **यन्त्रशक्ति** (भाग १) को पाठकों ने बहुत ही पसन्द किया और **'मन्त्रशक्ति' तंत्रशक्ति** का तो दूसरा संस्करण भी निकल चुका है। इसके लिए प्रशंसात्मक तथा जिज्ञासात्मक अनेक पत्र भी आते रहते हैं। एतदर्थ हम पाठकों का आभार स्वीकार करते हैं और आशा करते हैं कि इसी प्रकार ग्रन्थों को पढ़कर हमारा उत्साह बढ़ाते रहेंगे।

मतिर्धर्मे रतिः सत्ये भक्तिरीशे कृतिः शुभे।
यतिवृत्तौ नतिः पूज्ये कुशलाय कल्पताम्॥

—डा. रुद्रदेव त्रिपाठी

एक दृष्टि में

प्राचीन महर्षियों ने मानव की सुविधाओं के लिये अटूट परिश्रमपूर्वक उपासना के उत्तम साधन प्रस्तुत किये हैं।

यन्त्र की उपासना एक सर्वोत्तम साधन 'गागर में सागर' का यन्त्र एक स्पष्ट उदाहरण है। यन्त्र में अपार सिद्धियां निहित हैं।

यन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति सुलभ है।

श्रद्धा और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला यन्त्र-साधक अतिशीघ्र निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

अंक यन्त्र, अक्षर-यन्त्र, बीजयन्त्र और मन्त्र-यन्त्रों की सरल साधना 'यन्त्र-शक्ति' की अपूर्व देन है।

कामना के अनुसार साधना के लिये पृथक्-पृथक् यन्त्रों का चयन और उनका शास्त्रीय-विधान सिद्धि का सोपान है।

शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य, तथा वैष्णव सम्प्रदाय के मानने वाले चारों वर्ण के लोगों के लिये इस ग्रन्थ में समुचित साहित्य संकलित है।

सरल भाषा, उत्तम सरणि, वास्तविक तथ्य और सर्वसुलभ विधि का समावेश 'यन्त्र शक्ति' की अपनी विशेषता है।

प्रायः १५० प्रकार के भिन्न-भिन्न कामनाओं की पूर्ति करने में सक्षम दुर्लभ यन्त्रों का विवरण।

'**घण्टाकर्णकल्प**' और प्रायः १७ प्रकार के प्रयोग इसमें प्रथम बार प्रकाशित हैं।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के यथावत् चित्र द्वारा लिखे गये यन्त्र और बीजमन्त्रों की आकृति में बने हुए यन्त्र भी '**यन्त्र-शक्ति**' के आकर्षक तत्त्व हैं।

विषय-सूची

परिचय-विभाग

१. सत्यज्ञान का प्रमुख द्वार— साधना ६

२. साधना और सिद्धि का एकमात्र 'यन्त्र' ११

३. मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र १३

४. यन्त्रों के अद्भुत चमत्कार १६

५. प्रस्तुत संग्रह के सम्बन्ध में १९

प्रयोग-विभाग

सर्वयन्त्र-मन्त्र-तन्त्रोत्कीलन-प्रयोगः २५

१. पञ्चदशी-महायन्त्र-कल्प (सप्तवार प्रयोगसहित) २९

२. पञ्चदशी-यन्त्र के अन्य ८ प्रयोग (पुरश्चरणविधिसहित) ३४

३. पञ्चदशी-यन्त्र और प्रयोग विधि (८ विधान) ३९

४. श्रीशिवताण्डव तन्त्र और पञ्चदशी यन्त्र ५०

५. विंशाङ्क-महायन्त्र-कल्प (बीसा यन्त्र विधि) ५६

६. बीसा यन्त्र के विभिन्न प्रकार एवं उनके प्रयोग ६२
(विष्णु, कृष्ण एवं दुर्गा-नवार्ण के तीन प्रयोग यन्त्रों सहित)

७. श्रीमहालक्ष्मी-विंशाङ्क-यन्त्र विधानम् (५ यन्त्र) ६७

८. बीसा यन्त्र कल्प (षट्कोण, स्वस्तिक एवं मुस्लिम यन्त्र सहित) ७४

९. ब्रह्मयामल और बीसा यन्त्र (सात वारों के प्रयोग) ७८
(बाला त्रिपुरसुन्दरी, नवार्ण, इन्द्राक्षी तथा अन्य बीसा यन्त्र)

१०. विविध रोगनाशक यन्त्र (१५ प्रकार) ९७
११. विविध कार्यसाधक अङ्क-यन्त्र (१९ प्रकार) १०५
१२. दुर्लभ अक्षय सिद्धिप्रद यन्त्र (६ प्रकार) ११९
१३. अक्षर-यन्त्र और अक्षराङ्क-यंत्र (१४ प्रकार) १२९
१४. विविध आकृति-यन्त्र १३८
१५. गायत्री-यन्त्र और उनके प्रयोग (२ यन्त्र) १४६
१६. श्रीघण्टाकर्ण-महायन्त्र-साधना १५०

१

सत्यज्ञान का प्रमुख द्वार—'साधना'

सत्य का ज्ञान करने की **'इच्छा'** होना ही मानव के पूर्वार्जित पुण्यों का फल है। इच्छा-मात्र से कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। इच्छा के साथ ही उसे प्राप्त करने का मार्ग भी ज्ञात होना चाहिये, नहीं तो हवा में हाथ मारने से जिस प्रकार कुछ फल नहीं मिलता उसी प्रकार परिश्रम के व्यर्थ होने में कोई शंका नहीं रहती। अत: **'ज्ञान'** आवश्यक है। ठीक है, आपकी इच्छा हो रही है, आप उसके बारे में ज्ञान रखते हैं, परन्तु कर्म नहीं करते, तो क्या आप अपने मनोरथ की सिद्धि में सफल हो सकते हैं? बिना हाथ हिलाये सामने थाली में परोसा हुआ भोजन अपने आप आपके मुंह में चला जाएगा? कभी नहीं। इसलिये **'क्रिया'** भी परम आवश्यक है।

इस **'इच्छा, ज्ञान और क्रिया'** रूप त्रिपुटी का सम्मिलित स्वरूप ही सिद्धि का सोपान है। जब किसी भवन के सोपान-सीढ़ियों पर चढ़ना हो तो पहले उसके प्रमुख द्वार पर पहुंचना होगा। उस द्वार को पार करके ही आप ऊपर पहुंच सकेंगे। इसी प्रकार सत्यज्ञान रूपी भवन में पहुंचने के लिए सर्वप्रथम उस भवन के प्रमुख द्वार पर पहुंचना अत्यावश्यक है। यह द्वार **'साधना'** है।

साधना के सहारे उस सिद्धि के द्वार पर पहुंच जाने पर इच्छाएं उन्मुक्त होती हैं, ज्ञान उन्हें नीर-क्षीर-विवेक की दृष्टि प्रदान कर संक्षिप्त बनाता है और क्रिया किसी एक निश्चित लक्ष्य की सिद्धि के लिये ही प्रयास करने का आदेश करती है।

'सत्य क्या है?' इसे जानने के लिए जिस प्रकार इच्छा, ज्ञान और क्रिया की आवश्यकता है, उसी प्रकार साधना की भी आवश्यकता है। इसीलिये कहा

जाता है—**न सिद्धिः साधनां विना।** अर्थात् साधना के बिना सिद्धि नहीं मिलती है।

साधना का कोई एक निश्चित रूप नहीं है। अनन्त साधकों के लिए साधना के अनन्त रूप हों, यह स्वाभाविक भी है। जिस प्रकार एक रोग की एक ही दवा नहीं होती, किन्तु रोगी के शारीरिक तत्त्वों के अनुसार दवाइयां भी अनेक होती हैं। उसी प्रकार साधना के लिए भी अनेक प्रकारों का विकास हुआ है। वैदिक, दार्शनिक, योगी, तान्त्रिक, शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन, बौद्ध आदि अनेक मत और उनके प्रकाशक शास्त्रों की भारत में क्या कमी है ?

फिर साधना करने वाले साधकों ने जिन-जिन प्रकारों से साधनाएं कीं, देश, काल, पद्धति और देव-विशेष की कृपा-प्राप्ति से जिस-जिस को जो-जो फल मिले, उनके आधार पर भी साधना में विस्तार आया। आज इसके लिए सैकड़ों पन्थ और हजारों ग्रन्थ मिलते हैं और कुछ न कुछ नए ग्रन्थ बनते भी रहते हैं। इन सबके झमेले में पड़ा हुआ व्यक्ति "क्या करूँ ? कैसे करूँ ? किसे करूँ ?" इसी चिन्ता में डूबा रहता है।

जैसे-जैसे मानव का जीवन-क्षेत्र बढ़ता जाता है, उसकी इच्छाएं और अपेक्षाएँ भी बढ़ती जाती हैं। जब मन में इच्छाओं और आवश्यकताओं की उछल-कूद चलती है तो उन्हें शान्त करने के लिए कुछ न कुछ उपाय ढूंढ़ने ही पड़ते हैं। लौकिक उपायों का सहारा जितना कठिन होता है उससे सरल साधन प्रभु कृपा-प्राप्ति है। प्रभु की कृपा से असाध्य भी सुसाध्य बन जाता है। वह दुर्लभ को भी सुलभ बना देता है। अतः उसकी शरण में जाना ही श्रेयस्कर है और शरण प्राप्ति का उत्तम साधन भी साधना ही है।

२

साधना और सिद्धि का एक साधन-'यन्त्र'

शास्त्रकारों ने मनुष्य की स्थिति और शक्ति का अनुमान बहुत पहले कर लिया था। वे जानते थे कि कलियुग में मनुष्य अल्पायु, अशक्त एवं अल्पज्ञ होगा, किन्तु उसकी भावना और आकांक्षा अनन्त आकाश जैसी व्यापक होगी। वह परमाणु युग में पहुंच कर मन की गति के समान गति वाले विमानों के युग में प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए अधिक समय नहीं दे पाएगा। किन्तु सफलता के लिए उसकी छटपटाहट विलम्ब को सहन करने में कभी तत्पर नहीं होगी। फिर दीर्घकालीन तपस्या की तो बात ही कहां?

सम्भवत: यही कारण है कि 'यन्त्र' का आविष्कार हुआ। यन्त्र एक ऐसी वस्तु है जो साधना का भी साधन है और सिद्धि का भी। यन्त्र का निर्माण करके आप प्रतिष्ठा कर लीजिए और अपनी नित्य-पूजा में रखिए। नियमानुसार साधना करते रहिये। जब अच्छे पर्व के दिन आयें, भोजपत्र पर अथवा अन्य सूचना के अनुसार उसको कुछ संख्याओं में लिखकर पास रख लें। समय आने पर उसका स्वयं उपयोग करें और जिसे आवश्यकता हो उसे भी उपयोग के लिए प्रदान करें। इस तरह यन्त्र से आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण दोनों ही सहज सिद्ध हो जायेंगे।

'भुवनेश्वरीक्रमचन्द्रिका' के रचयिता श्रीअनन्तदेव ने स्मृति का वाक्य उद्धृत करते हुए यन्त्र का माहात्म्य वर्णित किया है—

शरीरमिव जीवस्य दीपस्य स्नेहवत् प्रिये।
सर्वेषामपि देवानां तथा यन्त्रं प्रतिष्ठितम्॥

भगवान् शिव पार्वती को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं—हे प्रिये!

जिस प्रकार जीव के लिए शरीर आवश्यक है और दीपक के लिए तैल आवश्यक है उसी प्रकार सभी देवताओं के लिए यन्त्र आवश्यक है।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि जैसे जीव को अभिव्यक्त करने अथवा आश्रय देने के लिए शरीर की अत्यन्त आवश्यकता है उसी पकार यन्त्र में प्रतिष्ठित होकर देवता अभिव्यक्त होते हैं और जैसे तैल के विना दीपक से प्रकाश उपलब्ध नहीं हो सकता वैसे ही बिना यन्त्र के देवताओं की कृपा का प्रकाश नहीं प्राप्त हो सकता।

'ताण्डवतन्त्र' में यन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति देते हुए कहा गया है—

यन्त्र्यते सकलं विश्वं यन्त्रमित्यभिधीयते।
यन्त्रं सन्त्रायते त्रातं यन्त्रार्थस्तु उदीरितः॥

टीका—'यन्त्र्यते नियम्यते इति यन्त्रं, यद्वा यमयति निगृह्णाति असाधून्, त्रायते अनुगृह्णाति साधूनिति यन्त्रम्।' अर्थात् जिससे सारे विश्व का नियन्त्रण होता है वह यन्त्र कहलाता है। यन्त्र की रक्षा होने पर वह रक्षक की रक्षा करता है। नियन्त्रण के साथ ही असाधुओं का निग्रहण और साधुओं का अनुग्रहण भी यन्त्र शब्द का अर्थ है। इसीलिए तो कहा जाता है—**'यन्त्रं देवानां गृहम्'**—यन्त्र देवताओं का गृह है।

साधन की सबलता और साधना की प्रबलता पर सिद्धि अवलम्बित रहती है। यदि साधक ने यन्त्रनिर्माण अच्छे ढंग से किया है, यन्त्र-लेखन से सम्बद्ध शास्त्रीय निर्देशों की विधि का समुचित पालन किया है, यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा विधिवत् हुई है और उससे सम्बन्ध रखने वाले देवता के मन्त्र का कार्यानुसारी विनियोग करके जप किया है तो निश्चय है कि उसके सभी कार्य सुचारु रूप से सफल होंगे और अवश्य होंगे।

३

मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र

यन्त्रों के प्रकारों का वर्णन करते हुए हमने यन्त्रशक्ति (भाग १) में लिखा है—यन्त्रों के अनेक प्रकारों में १. रेखात्मक, २. आकृतिमूलक, ३. बीज-मन्त्रगर्भित, ४. अंकगर्भित तथा ५. मिश्रविधिमूलक यन्त्र महत्त्वपूर्ण हैं। इस सम्बन्ध में विशेष ज्ञातव्य यह है कि चाहे किसी भी प्रकार का यन्त्र हो, उसमें मन्त्र और तन्त्र दोनों की पूर्ण आवश्यकता रहती है। इसीलिए 'शक्तिसंगम-तन्त्र' में बीजात्मक यन्त्रों को सर्वोत्तम कहा है तथा निर्बीज यन्त्रों को शववत् बतलाया है। परन्तु इस कथन में एक विकल्प यह है कि केरल, गौड, काश्मीर आदि में प्रचलित सम्प्रदायों की अपनी-अपनी गुरु परम्परा ही इसमें प्रमाण है, अतः कहीं यन्त्र में बीज-मन्त्रादि लिखे जाते हैं और कहीं नहीं। कुछ आचार्यों का यह भी कहना है कि जिन यन्त्रों में बीज या मन्त्रादि नहीं होते हैं उनमें पूजा के समय भावना की जाती है।

यन्त्र के निर्माण से पहले ही यह निश्चय कर लेना चाहिए कि किस कार्य की सिद्धि के लिए यन्त्र बनाना है तथा इसका किस प्रकार से उपयोग करना है? क्योंकि उसी के आधार पर आकृति, लेखन का आधार, लेखनीय वस्तु, लेखनी, समय, स्थान एवं प्रकार भी बदलते रहेंगे। शक्तिसंगम-तन्त्र के १५ से ५५ पटल तक तथा ६३ से ६६ तक के पटलों में धारण करने योग्य यन्त्रों के बारे में विस्तार-पूर्वक विधान बताए हैं। वहीं 'यन्त्र-ध्यान-प्रकरण' में सृष्टि, स्थिति एवं लय के क्रम से बीज लेखन द्वारा रेखाओं में चैतन्य-भावना का प्रकार भी दिखाया गया है। तन्त्र-प्रयोग भी यन्त्र का आवश्यक अंग है जिसे वस्तु के आधार पर उपयोग में लाया जाता है।

केरल लिपि में एक **'यन्त्रार्णव'** ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ है, जिसमें यन्त्रो के निर्माण, पुरश्चरण और साधना प्रकार के साथ ही कामनाओं के अनुसार अनेक प्रकार के यन्त्रों का भी वर्णन किया है। 'सिंहसिद्धान्तसिन्धु' में में गोस्वामी शिवानन्द ने यन्त्र के बारे में महत्त्वपूर्ण उद्धरण देते हुए कहा है—

देवस्य यन्त्ररूपस्य यन्त्रव्याप्तिमजानता ।
कृतार्चनादिकं सर्वं व्यर्थं भवति शाम्भवि ! ॥

अर्थात् यन्त्ररूप देवता के यन्त्र की व्याप्ति का ज्ञान किए बिना जो कुछ पूजा-प्रयोगादि किये जाते हैं, वे व्यर्थ होते हैं।

आज बाजारों में ऐसे ग्रन्थों की कमी नहीं है जिनमें बहुत से यन्त्र मन्त्र लिखे मिल जाएँ, किन्तु वस्तुतः उनका जो साधन क्रम है उसका निर्देश उनमें नहीं दिया जाता। हमने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि प्रत्येक यन्त्र से सम्बद्ध विधान अवश्य रहे। इससे जो भी कार्य किया जाएगा उसकी सफलता पूर्ण होगी।

शास्त्रों में यह भी निर्देश है कि यदि किसी मन्त्र-यन्त्र की एक बार साधना करने से सफलता न मिले तो उसके लिए पुनः प्रयास करना चाहिए और उसके प्रति किसी प्रकार की अनास्था एवं अपशब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूर्वजन्म के संस्कारों की न्यूनता के कारण कभी-कभी फल में विलम्ब हो जाता है।

बुद्धिमान् एवं निष्ठावान् व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपने द्वारा किये जाने वाले कर्म में पूरी सावधानी रखें और आत्मनिरीक्षण करते रहें कि कहीं मुझ से कोई भूल तो नहीं हो रही है ? साथ ही गुरुदेव तथा इष्टदेव से क्षमायाचना पूर्वक प्रार्थना करते रहें।

प्रार्थना के लिए निम्नलिखित पद्य उत्तम हैं—

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर[१] ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं बुद्धिहीनं च यत्कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव, प्रसीद परमेश्वर ॥
यन्त्रराज ! नमस्तेऽस्तु सर्वरूपधरानघ ।
कृपया हर मे विघ्नं यन्त्रसिद्धि प्रयच्छ मे ॥

यन्त्र-प्रयोग से सम्बद्ध जिन-जिन तन्त्र-प्रयोगों (कलम, कागज, स्याही, स्थान, काल, दिशा, कर्म आदि) का जिस प्रकार का निर्देश ग्रन्थ में दिया हो उसका भी पूरा ध्यान रखना चाहिए तथा उनका निश्चित रूप से पालन करना चाहिए। साथ ही वस्तुशुद्धि पर भी सावधान रहें। इससे सिद्धि प्राप्ति में सहायता मिलती है।

---

१. यहां यदि देवी सम्बन्धी प्रार्थना हो तो 'देवि' और परमेश्वरि' ऐसा परिवर्तन करके बोलना चाहिये।

४
यन्त्रों के अद्भुत चमत्कार

यन्त्रों के प्रति भारतीय जनमानस में ही नही, अपितु विश्व मानव के मन में पूर्ण सम्मान और श्रद्धा है। धर्म और देवता में श्रद्धा न रखने वाले लोग भी यन्त्र के रूप में विकसित आकार-प्रकारों की वस्तुओं को अपने पास रखकर अथवा धारण करके प्रसन्न होते हैं। यन्त्रों की महाप्रभावशालिता से मुग्ध मानव ने अपने उपयोग की समस्त वस्तुओं में उनके रूपों को अंकित किया है। हम देखते हैं कि विश्व की विशालतम स्थापत्य कला की प्रतिकृतियों में आकृतिमूलक विभिन्नताओं के कारण ही जनसमुदाय उसके प्रति आकृष्ट बना रहता है। इस तत्त्व को भले ही आज का मानव भूल गया हो, पर प्राचीन मनीषी यन्त्रों के तात्त्विक अनुसन्धान से भली-भांति परिचित थे और यही कारण था कि वे उसी प्रकार की संरचना किया करते थे। मानव शरीर की रचना स्वयं यन्त्रमय है। इसके अंग-प्रत्यंगों का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने पर त्रिकोण, चतुष्कोण आदि बने हुए स्पष्ट प्रतीत होने लगते हैं। इतना ही क्यों ? जब हम बैठने, उठने और झुकने आदि की क्रियाएं करते हैं तो उनसे भी यन्त्रात्मक आकृतियां सहज ही बन जाती हैं। ये आकृतियां बाह्य और आभ्यन्तर दोनों ही रूपों में हमारे लिए लाभप्रद होती हैं। शारीरिक आसन, योगासन के रूप में किए जाने पर शरीर को स्वस्थ बनाने में जितने सहायक होते हैं उतने ही आध्यात्मिक चेतना जागृत करने में भी सहायता करते हैं। यह बात शास्त्रों में बड़ी स्पष्टता से कही गई है--'सिद्धि के लिए कामनानुसार आसनों का आधार अवश्य ग्रहण करना चाहिए।'

सौ में से पचास प्रतिशत व्यक्ति ऐसे मिल जाएंगे जो किसी भी धर्म के अनुयायी होने पर यन्त्रशक्ति के प्रति पूर्ण श्रद्धावान् होते हैं। किसी के गले में,

किसी की भुजा पर, किसी की उंगली में तो किसी के घर में—पूजा में, दीवार पर, चित्रों में—यन्त्र अवश्य होंगे। धार्मिक प्रतीक के रूप में यन्त्रमय प्रतीक भी इसी प्रकार अनेक मिल जाएंगे। जितनी भी सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित धार्मिक देव-प्रतिमाएं हैं, जितने भी धार्मिक भवन-मन्दिर हैं, सभी के मूल में यन्त्रों की स्थापना अवश्य है। तिरुपति, नाथद्वारा, जगन्नाथ पुरी, अम्बाजी, काञ्ची आदि में विराजमान यन्त्रराजों को प्रसिद्धि तो सभी को विदित ही हैं।

ऐसे यन्त्रों के बारे में जनोक्तियों और किंवदन्तियों की भी कमी नहीं है। भिन्न-भिन्न प्रकार के ऐसे उदाहरणों से हमारी आस्था सुदृढ़ बन जाती है। यहां दो-चार उदाहरण देना हम उचित मानते हैं। यथा—

(१) एक नगर में एक साधक रहते थे। वे अपनी साधना के कारण सर्वमान्य थे। एक बार उस नगर के महाराजा की शोभायात्रा निकली और उस साधक के घर के आगे हाथी से उतर कर साधक को प्रणाम करने के लिए उसके सचिवों ने आग्रह किया, किन्तु अभिमानवश राजा ने वैसा नहीं किया।

साधक ने परम्परा का त्याग एवं अपमान की भावना को निर्मूल बनाने के लिए शिष्यों के आग्रह से एक यन्त्र लिखकर सड़क पर रखवा दिया। फल यह हुआ कि राजा जिस हाथी पर बैठा हुआ था, वह दिग्भ्रान्त हो गया और वहीं घूमने लगा। लाख प्रयत्न करने पर भी आगे नहीं बढ़ता था। अन्त में राजा ने उतर कर साधक से क्षमा-याचना की और यन्त्र हटाया गया तभी वह आगे बढ़ा।

(२) एक यन्त्रसाधक सर्पों का विष अपने यन्त्रों के प्रभाव से उतारा करता था। एक बार कोई उच्च जाति का सर्प उस पर रुष्ट हो गया और उसने साधक को काट लिया और वह कहीं दूर चला गया। साधक ने अपनी अर्ध चेतनावस्था में एक यन्त्र लिखा और साथ वालों से कहा कि मेरे अचेतन हो जाने पर भी मुझे मृत समझ कर जलाना मत। वह सर्प वापस लौट कर मेरा जहर पी लेगा। वह अचेतन हो गया। काफी समय तक प्रतीक्षा की।

सर्प के न आने पर उसे श्मशान ले जाकर दाह कर दिया। दाह होते-होते वहां सर्प आया और अपना फन पटक-पटक कर वह वहीं मर गया। सभी देखते रह गए और अपने किए पर पछताए।

(३) सुनते हैं कि मथुरा में श्रीबल्लभाचार्यजी महाराज ने विश्राम घाट पर एक यन्त्र ऐसा लगाया था कि उसके नीचे से निकलने पर मियां जी की दाढ़ी उड़ जाती थी और सिर में चोटी निकल जाती थी। यह किसी मौलवी द्वारा लगाये गये उस यन्त्र का प्रतीकार था, जिससे हिन्दुओं की चोटी उड़कर दाढ़ी आ जाती थी।

संसार का ऐसा कोई कार्य नहीं जो यन्त्रों के द्वारा सिद्ध नहीं हो। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि यन्त्र ही वह शक्ति है जिसके द्वारा समस्त चराचर की सिद्धियां सुलभ बनती हैं।

हमारे लिए परम उपकारी आचार्यों ने प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए यन्त्रों का निर्देश किया है। और यह भी लिखा है कि किसी एक यन्त्र को सिद्ध करके उसके द्वारा भी हम अपनी इच्छानुसार उसके प्रयोग करके कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

५

प्रस्तुत संग्रह के सम्बन्ध में

हमने **'यन्त्र शक्ति'** भाग १ में यन्त्र साहित्य के बारे में प्रायः ८० पृष्ठों में बहुत ही विस्तार से परिचय दिया है। प्रत्येक यन्त्र-साधक को इस परिचय-विभाग से लाभ उठाना चाहिए और यंत्रसाधना में प्रवृत्त होने से पूर्व सभी ज्ञातव्य विषयों को समझ लेना चाहिए। विधि भ्रष्ट होने पर सिद्धि तो दूर रही, अपितु विपरीत फल होने की आशंका बनी रहती है, इसलिए सब प्रकार की विधि का ज्ञान उससे प्राप्त हो सकेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

किसी भी कार्य में शंका अथवा संशय होने पर तत्तद् विषय के ज्ञाता से ज्ञान प्राप्त करना साधक के लिए हितकर है। आदरपूर्वक गुरु द्वारा उपदेश प्राप्त करने वाले का मार्ग निर्विघ्न होता है, उसका पथ प्रशस्त होता है और बाधाएं दूर होती हैं। अतः यथासम्भव श्रद्धापूर्वक गुरु बनाना चाहिए। यदि सम्भव न हो तो भगवान् शिव को गुरु बनाकर उनसे दीक्षा लेनी चाहिए।[1]

प्रथम भाग में **'प्रयोग विभाग'** के अन्तर्गत यन्त्रधारण विधि और यन्त्र-पूजन विधि का भी शास्त्रीय विधान दिया है, जिसमें यंत्र प्रतिष्ठा भी निर्दिष्ट है। यही विधान अन्य यंत्रों के बारे में भी समझना चाहिए, केवल यह ध्यान रहे कि जहां-जहां यन्त्र के प्रयोगों के साथ विशेष विधान का उल्लेख किया गया है, वहां उसका पालन अवश्य किया जाए।

यंत्र-शक्ति (भाग १) में गणेश, भैरव, महामृत्युञ्जय, सूर्य, मंगल, शनि एवं अन्य ग्रह, कार्तवीर्यार्जुन तथा दस महाविद्याओं के यंत्र दिए हैं। प्रत्येक की

---

१. इस 'शिवदीक्षा' की विधि 'मंत्र-शक्ति' में दी है। वहीं देखें।

शास्त्रीय विधि बताई गई है और कामनानुसार उनका प्रयोग करने का प्रकार भी विस्तार से समझाया गया है।

'यंत्र-शक्ति' को देखकर अनेक साधकों ने तथा यंत्रशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। साथ ही उनकी ओर से यह भी आग्रह किया गया कि **"सर्वसाधारण कामनापूरक यन्त्रों का संग्रह भी विधिसहित प्रकाशित किया जाए तो साधक जगत् का बड़ा कल्याण होगा।"** इसी प्रेरणा के कारण हमने यह **'यन्त्र-शक्ति'** का **दूसरा भाग** संकलित किया है।

इसमें सर्वप्रथम **'पञ्चदशी-यन्त्र'** और **'विंशाङ्क-यन्त्र'** के विधान दिए गए हैं। भारतीय जन-जीवन में पन्द्रहिया और बीसा के नाम से ख्यातिप्राप्त इन यंत्रों का विधान अनेक शास्त्रों में वर्णित है, किन्तु उसका शुद्ध रूप से प्रकाशन किसी ने नहीं किया है। प्रायः यह देखा जाता है कि सामान्य लेखक और प्रकाशक सस्ती प्रसिद्धि के लिए न तो शास्त्रों का विधिवत् ज्ञान प्राप्त करते हैं और न आदर करते हैं। इस पर भी एक और कमी एवं दुःख की बात यह होती है कि प्रूफ की शुद्धता पर भी ध्यान नहीं देते। ऐसे अशुद्ध विधानों से साधक—**'भार्यां रक्षतु भैरवी'** के स्थान पर **'भार्यां भक्षतु भैरवी'** का पाठ करें तो क्या आश्चर्य ? और सफलता क्या मिलेगी। यह भी सहज समझा जा सकता है।

हमारी प्रारम्भ से ही यह दृढ़ धारणा रही है कि **"पाठकों को प्रामाणिक साहित्य प्रदान किया जाए। शास्त्रों की उपेक्षा नहीं हो। अनुसन्धान (रिसर्च) की दृष्टि को प्राथमिकता दी जाए। व्यर्थ के आडम्बरों को दूर किया जाए। नैतिकता को गिराने वाले तथा अश्लील प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले साहित्य को किसी भी तरह स्थान नहीं दिया जाए। जहां तक सम्भव हो, विषय को सर्वाङ्गपूर्ण रूप से प्रकाशित किया जाए। किसी भी प्रकार का मिथ्या आग्रह-दुराग्रह न रखते हुए शुद्ध, स्वच्छ, आत्मोन्नतिकारक तथा अध्यात्म-जीवन के लिए उपयोगी विषय को सरल, निश्छल एवं निरावरण रूप में प्रस्तुत किया, जाए जिससे सभी पाठक अपने उस लक्ष्य की ओर अग्रसर बनें।"**

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मंत्र-शक्ति, तंत्र-शक्ति और यंत्र-शक्ति (भाग १) के अनुसार ही इस द्वितीय भाग में कल्प, वारों के अनुसार प्रयोग, लिखित यंत्रों को सिद्ध करने के प्रयोग; विष्णु, कृष्ण, दुर्गा, नवार्ण, लक्ष्मी, बालात्रिपुरा, तथा इन्द्राक्षी आदि देवी देवताओं के १५ और २० संख्या के विभिन्न यंत्र दिए हैं। यंत्रों के प्रकारों में अंकयंत्र का महत्त्व बतलाते हुए लाख की संख्या तक के यंत्र यहाँ आप प्राप्त कर सकेंगे। १. अक्षरात्मक, २. बीजमंत्रात्मक, ३. मंत्रात्मक और ४. अङ्क-मंत्र-बीजात्मक यंत्रों का संकलन भी इसकी अपनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आकार की दृष्टि से भी पाठक देखेंगे कि सबसे पहली बार इसमें बीजमंत्राक्षराकृति वाले यंत्र प्रकाशित हुए हैं। फल की दृष्टि से प्रभु कृपा प्राप्ति, आध्यात्मिक उन्नति, रोग-शमन, दारिद्र्य निवारण, लक्ष्मी प्राप्ति तथा अन्य सामान्य सिद्धियों के लिए भी अनेक यंत्र सविधि निर्दिष्ट हैं। अन्त में **'घण्टाकर्ण कल्प'** का संग्रह इसकी अपनी विशेषता में चार चाँद लगाता है।

विशेष यह कि प्रस्तुत प्रयोग-विभाग के प्रारम्भ में हमने **"सर्व-यंत्र-मन्त्र-तन्त्रोत्कीलन-प्रयोग'** भी साधकों के लिए दिया है जिसका सारांश हिन्दी में इस प्रकार है—

भगवती पार्वती ने भगवान् शिवजी से आगम और निगम से सम्बद्ध बीज, बीजोदय, बीज-समुदाय, मंत्र, मंत्र-संहिता एवं उनके ऋषि-छन्द आदि क्रमशः सुनने के पश्चात् सब प्रकार के यंत्र, मंत्र और तंत्रों का उत्कीलन पूछा। उन्होंने कृपा करके वह सुनाया। इसके प्रारम्भ में शिवजी ने पार्वती की प्रशंसा की और तत्पश्चात् (१) विनियोग, (२) न्यास, (३) ध्यान, (४) उत्कीलन-मन्त्र, तथा (५) सर्वशापविमोचक श्रीत्रिपुरामातृका स्तोत्र हैं।

इस प्रकार यह संग्रह पाठकों के हाथ में प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष है और श्रीयंत्रसाम्राज्ञी भगवती त्रिपुरसुन्दरी से यही प्रार्थना करते हैं कि वह हमारी

इस ऋषि-प्रणीत धरोहर का आदरपूर्वक उपयोग करने वाले साधकों की सभी सत्कामनाएं पूर्ण करे।

मातस्त्वत्पदपङ्कजभ्रमरतां प्राप्ताः कृपावार्धय:,
श्रीमन्तो गुरवः प्रभूतयशसां गन्धैः क्षितौ व्यापृताः।
तेषामेव मुखात् परागकणिकाः सम्प्राप्य काश्चिन् मुदा,
ग्रन्थेऽस्मिन् विनिवेदिता नहि मनाग् गर्वोऽस्ति मे कश्चन् ॥ १ ॥
श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी पातु मां गुरुरूपिणी।
यन्त्रशक्तिश्चरणयोस्तस्या एव समर्पये ॥ २ ॥
श्रीषोडशानन्दनाथपदकञ्जालिगुञ्जितुः।
श्रीरुद्रानन्दनाथस्य कृतिरेषाऽस्तु भूतये ॥ ३ ॥

—डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी

प्रयोग-विभाग

अथ

सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलनप्रयोगः

पार्वत्युवाच

देवेश परमानन्द भक्तानामभयप्रद ।
आगमा निगमाश्चैव बीजं बीजोदयस्तथा ॥ १ ॥
समुदायेन बीजानां मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता ।
ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम् ॥ २ ॥
धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञानं च विकल्पनम् ।
निर्विकल्पविभागेन तथा षट्कर्मसिद्धये ॥ ३ ॥
भुक्तिमुक्तिप्रकारश्च सर्वं प्राप्तं प्रसादतः ।
कीलनं सर्वमन्त्राणां शंस यद् हृदये वचः ॥ ४ ॥
इति श्रुत्वा शिवानाथः पार्वत्या वचनं शुभम् ।
उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवाम् ॥ ५ ॥

शिव उवाच

वरानने हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः ।
साक्षीभूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा ॥ ६ ॥
त्वया पृष्टं वरारोहे ! वक्ष्याम्युत्कीलनं हि तत् ।
उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत् ॥ ७ ॥
पुरा तव मया भद्रे ! समाकर्षणवश्यजा ।
मन्त्राणां कीलिता सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः ॥ ८ ॥
तवानुग्रहप्रीतत्वात्सिद्धिस्तेषां फलप्रदा ।
येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम् ॥ ९ ॥
शृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिलं जगत् ।
यस्य सिद्धिर्भवेत्तिष्ठ मया येषां प्रभावकम् ॥ १० ॥

अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे ।
संजीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तं पुनर्ध्रुवम् ॥ ११ ॥
यस्य स्मरणमात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा ।
अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १२ ॥

(१) अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीसर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्राणाम्
उत्कीलनमन्त्रस्तोत्रस्य मूलप्रकृतिर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः,
निरञ्जनो देवता क्लीं बीजं ह्रीं शक्तिः,
ह्रः लौं कीलकं सप्तकोटिमन्त्रयन्त्रतन्त्रकीलकानां
सञ्जीवनसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

(२) अथ ऋष्यादिन्यासाः

ॐ मूलप्रकृतिऋषये नमः (शिरसि)
ॐ जगतीच्छन्दसे नमः (मुखे)
ॐ निरञ्जनदेवतायै नमः (हृदि)
ॐ क्लीं बीजाय नमः (गुह्ये)
ॐ ह्रीं शक्तये नमः (पादयोः)
ॐ ह्रः लौं कीलकाय नमः (सर्वाङ्गे)

अथ करहृदयादिन्यासाः

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासाः ।

(३) अथ ध्यानम्

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं,
ज्योतिःप्रकाशमनिशं महतो महान्तम् ।

कारुण्यरूपमतिबोधकरं प्रसन्नम्
विध्यं स्मरामि सततं मनुजावनाय ॥ १ ॥
एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा ।
वाञ्छितं फलमाप्नोति मन्त्रसञ्जीवनं ध्रुवम् ॥ २ ॥

उत्कीलनमन्त्राः

(१) ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रादीनाम् उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

(२) ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं एकपञ्चाशदक्षराण्युत्कीलय उत्कीलय स्वाहा ॥

(३) ॐ जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्राणां सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा ।
ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मातृकाक्षराणां सर्वेषाम् उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ।

(४) ॐ सोहं हं सो हं ११ ॐ जूं सौं हं हंसः ॐ ॐ ११ हं जूं हं सं गं ११ सोहं हं सो यं ११ लं ११ ॐ ११ यं ११ ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तोत्रकवचादीनां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

(५) ॐ सोहं हं सः जूं संजीवनं स्वाहा ।

(६) ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणाम् उत्कीलनं स्वाहा ॥

—×—

"सर्वशापविमोचकं श्रीत्रिपुरामातृकास्तोत्रम्"

ॐ ॐ प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे ।
इं ईं शक्तिस्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च ॥ १ ॥
ऋं ॠं रञ्जितदीप्ताय लृं लॄं स्थूलस्वरूपिणे ।
एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं अः शिवाय च ॥ २ ॥

कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुडगामिने ।
ङं चं श्रीचन्द्रभालाय छं जं जयकरायते ॥ ३ ॥
झं ञं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च ।
थं दं धं नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रमयाय च ॥ ४ ॥
बं भं मं बलवीर्याय यं रं लं यशसे नमः ।
वं शं षं बहुवादाय सं हं लं क्षं स्वरूपिणे ॥ ५ ॥
दिशामादित्यरूपाय तेजसे रूपधारिणे ।
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥ ६ ॥
मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः ।
प्राणेशायै क्षीणदायै सं संजीव नमो नमः ॥ ७ ॥
निरञ्जनस्य देवस्य नामकर्मविधानतः ।
त्वया ध्यातं च शक्त्या च तेन संजायते जगत् ॥ ८ ॥
स्तुताहमचिरं ध्यात्वा मायाया ध्वंसहेतवे ।
संतुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः ॥ ९

ब्रह्माणं चेतयन्ती विविधसुरनरांस्तर्पयन्ती प्रमोदाद्,
ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगमजपमनुं षट्पदं प्रेरयन्ती ।
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुतदमनी साप्यहंकारमूर्ति-
स्तुभ्यं तस्मै च जाप्यं स्मररचितमनुं मोचये शापजालात् ॥ १० ॥

इदं श्रीत्रिपुरास्तोत्रं पठेद्भक्त्या तु यो नरः
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते ॥ ११ ॥

इति सर्वशापविमोचकं श्रीत्रिपुरामातृका— स्तोत्ररूपं

सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रोत्कीलनं सम्पूर्णम् ॥

१

पंचदशी-महायन्त्र-कल्प

अंक यन्त्रों में पंचदशी-यन्त्र का माहात्म्य अति प्रसिद्ध है। यह यन्त्र नौ कोष्ठकों में एक से नौ (१ से ९) तक के अंकों से बनता है। इसका निर्देश तन्त्रों में इस प्रकार आता है—

'भगवती पार्वती ने कैलाश शिखर पर विराजमान शिव से पञ्चदशी-यन्त्र का विधान लोकहित की दृष्टि से पूछा और भगवान शिव ने कृपा करके इसे बताया—

॥ श्रीगणेशाय नम. ॥

पार्वत्युवाच—
कैलाश-शिखरासीनं गौरी पृच्छति शङ्करम्।
पञ्चदशी-विधिं ब्रूहि लोकानां हितकारणम्॥
ईश्वर उवाच—
शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि पञ्चदशी-विधानकम्।
सन्ति नानाविधा लोके यन्त्राः सर्वेऽपि कीलिताः॥
पञ्चदशीमहायन्त्रकल्पः सिद्धिप्रदायकः।
गुह्याद् गुह्यतमो लोके देवानामपि दुर्लभः॥

शिव ने कहा कि हे देवि! यद्यपि अनेक प्रकार के अन्य यन्त्र बहुत से हैं, किन्तु वे कीलित हैं। इसलिए मैं सिद्धि-प्रदायक, अति गुप्त एवं देवताओं के लिए भी दुर्लभ ऐसे 'पञ्चदशीमहायन्त्र' का कल्प कहता हूं। यह कहकर इसका मन्त्राधार बतलाया और यन्त्र का स्वरूप बतलाते हुए कहा—

जलमग्निं तथा पृथ्वीयन्त्राणि च समर्थयेत्।

इस पञ्चदशी यन्त्र के जलतत्त्व, अग्नि तत्त्व, वायु तत्त्व तथा पृथ्वी-तत्त्वात्मक स्वरूप होते हैं तथा उनमें १ से आरम्भ कर ६ की सख्या तक के नौ कोष्ठक होते हैं, जिनकी गणना करने पर संख्या पन्द्रह की आनी चाहिए। यथा—

चन्द्रो नेत्रस्तथा वह्निर्वेदबाणशरास्तथा।
मुनिनागग्रहा ज्ञेयाः पञ्चदशी-प्रकीर्तिताः॥

इस प्रकार इस यन्त्र के आगे बताये गये रूपों में अंकों के परिवर्तन से अनेक रूप प्राप्त होते हैं।

इन यन्त्रों की साधना में विभिन्न पद्धतियों का आलम्बन किया जाता है तथा कामना के अनुसार भिन्न-भिन्न वस्तुओं का, मन्त्रों का और लेखन-प्रक्रियाओं का शास्त्रों में निर्देश मिलता है जिनकी तालिका इस प्रकार है—

[१] प्रकार···

(१) तत्त्व फारसी नाम	(२) वर्ण	(३) राशि
१-जलतत्त्वात्मक—आकी	ब्राह्मण	कर्क, वृश्चिक, मीन,
२-अग्नितत्त्वात्मक—आतशी	क्षत्रिय	मेष, सिंह, धनु,
३-वायुतत्त्वात्मक—बादी	वैश्य	कन्या, वृषभ, मकर,
४-पृथ्वीतत्त्वात्मक—खाकी	शूद्र	तुला, कुम्भ, मिथुन

(४) वार	(५) अंक भरने की दिशा
१ गुरु, शुक्र	पूर्व से आरम्भ करके पश्चिम तक,
२ मंगल, रवि	पश्चिम से पूर्व तक,
३ बुध, चन्द्र	दक्षिण से उत्तर तक,
४ शनि	उत्तर से दक्षिण तक,

इसी प्रकार कौन सी स्याही से किस वार को किस वस्तु पर किस वस्तु की लेखनी द्वारा किस कार्य के लिए पञ्चदशी-यन्त्र का प्रयोग किया जाता है ? यह सब **'पञ्चदशीयन्त्र-कल्प'** में विस्तार से इस प्रकार दिया है—

(मारण-प्रयोग)

१-रविवारेऽर्कदुग्धेन श्मशानभस्मना लिखेत् ।
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये च निक्षिपेत् ॥

विस्फोटकं जायते मृत्युरष्टोत्तरं जपेत् ।
पञ्चदशी-विलोमेन सन्ध्याकाले विशेषतः ॥

अर्थात्—रविवार के दिन (आक के पत्र पर), आक के दूध में चिता की राख मिलाकर कीकर अथवा लोहे की लेखनी से पञ्चदशी यन्त्राङ्कों को विलोम करके अर्थात् ९ से आरम्भ करके १ अंक तक सायंकाल के समय यन्त्र लिखे और उसे जिस पर मारण-प्रयोग करना हो उसका नाम लिखकर (१०८ मन्त्र जपादि विधि करके) यन्त्र को चिता में डाल दे। ऐसा करने से उस व्यक्ति के शरीर में फोड़े निकल आयेंगे और अन्त में उसकी मृत्यु हो जाएगी।

(वशीकरण-प्रयोग)

२-चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वां च केशरम् ।
श्वेतगुञ्जा-समायुक्तं कपिलादुग्धमध्यतः ॥
यन्त्रं च लिखितं सम्यग् यदा कण्ठे तु धार्यते ।
राजा वश्यमवाप्नोति अन्यलोकेषु का कथा ॥

अर्थात्—सोमवार के दिन श्वेतदूर्वा, केशर, श्वेतगुञ्जा और कपिला गाय का दूध इन सबको मिलाकर स्याही बनाए तथा भोज-पत्र पर पञ्चदशी-यन्त्र को लिखकर कण्ठ में धारण करे तो राजा भी वश में हो जाता है, तब अन्य लोगों की तो बात ही क्या ?

(उच्चाटन-प्रयोग)

३-भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं सपक्षकम् ।
यन्त्रे च तस्य नामानि लिख्यन्ते मौनपूर्वकम् ॥

तस्य द्वारं खनेद् भूमावुल्लङ्घ्योच्चाटनं भवेत् ।
कुटुम्बादि-नराः सर्वे यदि शक्रसमो रिपुः ॥

अर्थात्—मंगलवार के दिन कौए के रक्त से कौए की पंख की लेखिनी के द्वारा कागज पर यह यन्त्र बनाए और उसमें शत्रु का नाम लिखें। लिखने के समय मौन धारण करे। इस यन्त्र को शत्रु के दरवाजे पर जमीन खोदकर उसमें गाड़ दे। इससे यदि शत्रु इन्द्र के समान प्रबल हो तब भी कुटुम्ब सहित उसका उच्चाटन हो जाता है।

(मोहन-प्रयोग)

४-**बुधवारे**—गृहीत्वा तु नागकेशर-रोचनम् ।
सर्षपतैलसंयुक्तं लिखित्वा मन्त्रमुत्तमम् ॥
वर्तिका क्रियते तस्य वलयेन् मन्त्रभावतः ।
त्रिकाले ज्वालयेद् दीपं मोहयेत् पृथिवीपतिम् ॥

अर्थात्—बुधवार के दिन नागकेशर और गोरोचन से बनी स्याही से (दाड़िम की लेखनी द्वारा कागज पर) यन्त्र लिखे तथा सरसों के तैल का दीपक लगाकर यन्त्र की वत्ती बना कर मोहन करने के लिए 'क्लीं' बीज का स्मरण करते हुए उस बत्ती को प्रातः मध्याह्न और सायंकाल को जलाए। इससे मोहन होता है।

(आकर्षण-प्रयोग)

५-**गुरुवारे** हरिद्रां च रोचनं तगरं घृतम् ।
यन्त्रं रात्रौ समालिख्य तस्य नाम तु मध्यके ॥
आसनाधः खनेच्चैव सर्वस्याकर्षणं ।

अर्थात्—गुरुवार के दिन रात्रि में गोरोचन, तगर और घृत मिलाकर उसकी स्याही से दाड़िम की लेखिनी द्वारा भोजपत्र पर यन्त्र लिखे और उसमें जिसका आकर्षण करना हो उसका नाम लिखे। फिर उस यन्त्र को बैठने के आसन के नीचे गाड़ दें। इससे आकर्षण होता है।

(ऋद्धिकर प्रयोग)

६-**भृगुवारे** सकर्पूरं वच्छकुष्ठमधु समम् ।
ऋद्धिः स्वयं समायाति प्राणैः सह धनैरपि ॥

अर्थात्—शुक्रवार के दिन कपूर, वच्छ, कुठ और मधु को मिला कर उसकी स्याही से दाड़िम या चमेली की लेखनी द्वारा उत्तम भोजपत्र पर यन्त्र लिखे और उसे धारण करे तो ऋद्धि स्वयं प्राण और धन के साथ प्राप्त होती है ।

(मृत्युकर-प्रयोग)

६-**शनिवारे** चिताकाष्ठं पञ्चदशी-विलोमतः ।
लिख्यन्ते यस्य वर्णानि श्मशाने खनयेद् भुवि ॥
कुक्कुटस्य च रक्तेन म्रियते नात्र संशयः ।

अर्थात्—शनिवार के दिन चिता के अंगारे (कोलसे) से स्याही बनाकर चिता की लकड़ी से बनी लेखनी द्वारा कागज पर मंत्र लिखे और उसमें शत्रु का नाम लिखकर उसे श्मशान में गाड़ दे । इससे शत्रु की मत्यु हो जाती है ।

इस प्रकार ये सात वारों के प्रयोग मिलते हैं । इनमें उच्चाटन तथा मारण जैसे उग्र कर्म नहीं करना ही उत्तम है । क्योंकि जहां तक सम्भव हो किसी का उपकार ही करना चाहिये, अपकार नहीं ।

२

पञ्चदशीयन्त्र के अन्य प्रयोग

(१) चतुर्वर्ग फलप्राप्ति—

वटवृक्षतले मन्त्रं भूमिमध्यगतं लिखेत् ।
वटशाखीयलेखन्या मिताहारो दृढ़व्रतः ॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां लिखेद् धमर्थिमोक्षदम् ।

वट वृक्ष के नीचे सात का अंक बीच में रखकर वटशाखा की लेखनी से यन्त्र लिखे। मन्त्रलेखन के लिए कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का दिन ले और उस दिन अल्पाहार करे एवं दृढव्रत का पालन करे। इससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मन्त्र संख्या १०,००० तक होनी चाहिए।

(२) बन्धमोक्ष तथा स्वामी की प्रीतिप्राप्ति—

दाडिमवृक्षलेखिन्या सहस्र यन्त्रमालिखेत् ।
बन्धमोक्षकरं स्वामिप्रीतिकरं परम् ॥

दडिम की लेखिनी से (भूमि पर) एक हजार मन्त्र लिखने से बन्धन से मुक्ति और स्वामी की प्रसन्नता होती है।

(३) दारिद्र्यनाश—

ब्रह्मवृक्षस्य लेखिन्या यन्त्रं त्रयशतं लिखेत् ।
भूमिमध्ये तु दारिद्र्य-नाशनं भवति वध्रुम् ॥

पलाश के वृक्ष की लेखनी से भूमि पर तीन सौ बार यन्त्र लिखने से अवश्य ही दरिद्रता का नाश होता है।

(४) सर्वकामसिद्धि—

गोमूत्रं मनःशिलां च कर्पूरं तगरं लिखेत्।
भूर्जपत्रे सहस्रं वा अश्वत्थवृक्षमूलके ।।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
प्राप्नोति विपुलान् भोगानिन्द्रतुल्यो नरो भवेत् ।।

गोमूत्र, मैनसिल, कपूर और तगर को मिलाकर उसकी स्याही से भोजपत्र पर अश्वत्थ-पीपल के नीचे बैठकर १ हजार मन्त्र लिखे। इससे जिन-जिन कामनाओं की इच्छा करता है वे सब पूरी होती हैं तथा साधक अनेक प्रकार के सुख-भोगों को प्राप्त करके इन्द्र के समान होता है।

(५) वाक्‌सिद्धि—

बिल्वपत्ररसं ग्राह्यं हरितालं मनःशिलाम् ।
बिल्वशाखीयलेखिन्या, सहस्रं द्वितयं लिखेत् ।।
एकान्ते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च ।
वाचासिद्धिश्च जायेत् नान्यथा शङ्करोदितम् ।।

बिल्वपत्र का रस निकाल कर उसमें हरताल और मैनसिल पीसकर मिला दे और उस स्याही से (जमीन पर) बिल्ववृक्ष की कलम से यह मन्त्र लिखे। दो हजार मन्त्र लिखने से वाणी सिद्ध हो जाती है। यह भगवान् शङ्कर ने कहा है। अतः निष्फल नहीं होता।

(६) रिपुनाशकर—

अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रे समालिखेत् ।
अष्टोत्तरशतं चैव रिपुनाशकरं परम् ।।

(क) आक के पत्तों के रस से उसी के पत्तों पर १०८ मन्त्र लिखने से शत्रु का नाश होता है।

(ख) कीकर के वृक्ष का बन्दा उस यन्त्र के साथ रखने से शत्रु के शरीर

में ज्वर और शूल होने लगता है। यदि शत्रु इन्द्र के समान भी हो तब भी यह प्रयोग निष्फल नहीं होता है।

हरिद्रेण लिखेद् यन्त्रं जलेनैव तु स्नापयेत्।
अष्टोत्तरशतं चैव मध्ये पाषाणस्तम्भनम्॥
रिपुद्वारे खनेद् भूमौ सीहीकण्टं तु यन्त्रकम्।
कलहो जायते नित्यं भ्रातृ-पुत्रादिबान्धवैः॥

(क) हल्दी से यन्त्र १०८ लिखे और उन्हें दो पत्थरों के बीच रख दे। फिर उन पर पानी डाले। इससे शत्रु का स्तम्भन होता है।

(घ) शत्रु के दरवाजे पर एक सीही का कांटा लगाकर उन यन्त्रों को गाड़ दे तो भाई, पुत्र और अन्य बन्धुओं के साथ झगड़ा हो जाता है।

(७) ताव तिजारी नष्ट हो—

अपामार्गरसेनैव लिख्यते यन्त्रभूर्जके।
एकाहिकं द्वितीयं च तृतीयं ज्वरनाशनम्॥

अपामार्ग (आंधीझाड़ा) के रस से यह यन्त्र लिखकर बांधने से एक दिन का, दो दिन का और तीन दिन का जो बुखार होता है वह नष्ट हो जाता है।

(८) विवाद में विजय प्राप्ति

भृङ्गराजरसेनैव यन्त्रं संलिख्य भूर्जके।
धारयेद् वामबाहौ तु विवादे विजयो भवेत्॥

भांगरे का रस निकाल कर उससे भोजपत्र पर यह यन्त्र लिखे और इसे बांई भुजा पर धारण करे तो विवाद में विजय प्राप्त होती है।

इस तरह पञ्चदशी यन्त्र के अनेक प्रयोग तन्त्रग्रन्थों में बताये गये हैं। विस्तार भय से यहां इतने ही दिये हैं।

पुरश्चरण-विधि

यन्त्रों के लेखन की संख्या के अनुसार फल—

अयुतं विलिखेद् देवि ! वन्दिमोचनकर्मणि ।
अयुतं द्वितयं कृत्वा, गतं राज्यमवाप्नुयात् ।।

हे देवि ! बन्दी को छुड़ाना हो तो १० हजार यन्त्र लिखे और यदि २० हजार यन्त्र लिखे जाएं तो गया हुआ राज्य प्राप्त हो जाता है ।

अयुतं त्रितयं कृत्वा भूविजयी विजायते ।
शापानुग्रहसामर्थ्यं भवेद् वेदायुते शिवे ।।

३० हजार मन्त्र लिखने पर पृथ्वी पर विजय प्राप्त होती है, तथा यदि ४० हजार लिखे जाएँ तो शाप और कृपा की शक्ति प्राप्त होती है ।

बाणायुतप्रयोगेण वाक्सिद्धिश्च भवेद् ध्रुवम् ।
रसायुतं लिखित्वा वै जलमध्ये विनिक्षिपेत् ।।
जलक्षेपेण मार्गेण पृथ्वीशं तु वशं नयेत् ।

४० हजार यन्त्र लिखने से निश्चित रूप से वाक्सिद्धि होती है । ६० हजार यन्त्र लिख कर उन्हें जल में प्रक्षिप्त करे । ऐसा करने से जल बहने का जो मार्ग है उस भूमि का जो स्वामी हो उसे भी वश में कर लेता है ।

सप्तायुतं लिखेद् धीमान् साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ।
अष्टायुतं लिखेद् यो वा इष्टसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

७० हजार यन्त्र लिखने पर साधक बुद्धिमान् और लक्ष्मीवान् होता है । ८० हजार यन्त्र जो लिखता है उसको इष्टसिद्धि प्राप्त होती है ।

लक्षमात्रं लिखेद् यो हि शिवतुल्यो भवेत् क्षणात् ।।

१ लाख बार यन्त्र जो लिखेगा वह शीघ्र ही शिव के समान होगा ।

प्रत्यहं विलिखेद् देवि, शतं वा तु तदर्धकम् ।
त्रिशतं वा लिखेद् देवि, सहस्रं वा तदर्धकम् ।।

प्रतिदिन ५०, १००, ३००, ५०० अथवा १००० यन्त्र लिखने चाहिएं।

एवं क्रमेण कथितः पुरश्चर्याविधिस्तव।
एवं यः कुरुते मर्त्यस्तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥

हे देवि; इस प्रकार यह पुरश्चरण की विधि तुम्हें बतलाई है। इसके अनुसार जो मनुष्य करेगा उसको सिद्धि प्राप्त हो जायेगी।

इन यन्त्रों के लिए यद्यपि अलग-अलग मन्त्र भी हैं तथापि दो मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) ॐ ह्रीं श्रीं ह्रः (ह्‌ रः)

(२) ॐ ह्रीं पञ्चदशि मम सिद्धिं देहि देहि स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं।

यन्त्र का मूल स्वरूप

८	१	६
३	५	७
४	९	२

३

पञ्चदशी यन्त्र और प्रयोग विधि

पहला विधान

साधना करने से पूर्व गुरुबल, ग्रहबल दिखाकर शुभ मुहूर्त से कार्यारम्भ करें।

सर्वप्रथम स्वच्छ स्थान में एकान्त कमरे में लिपाई-पुताई करके गोमय से लिपवा दें और यदि पक्का फर्श हो तो पञ्चगव्य से मार्जन करें। तदनन्तर स्नान आदि से निवृत्त होकर आसनादि विधि करके नित्य कर्म सम्पन्न करें। आसन लाल ऊन का हो। लाल वस्त्र पहनें और जप की माला भी लाल रंग की ही ग्रहण करें। पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके भूतशुद्धि करें। फिर हाथ में जल लेकर संकल्प बोलें जिसमें अपने अभीष्ट कार्य का उल्लेख भी करें। और—'मम पञ्चदशाङ्कयन्त्रलेखनार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं च भूत-लिपिमन्त्रजपं करिष्ये' इतना कहकर पुनः जल छोड़ें। फिर १०८ बार ॐ अं आं इं ईं इत्यादि मातृका अक्षरों का जप करें। तदनन्तर किसी दूधवाले आम आदि वृक्ष के पटिये पर रोली, गुलाल या हल्दी फैलाकर उदुम्बर, दाड़िम (अनार), चमेली, बिल्वपत्र अथवा अन्य किसी पेड़ की कामनानुसार बनाई हुई कलम से नौ कोष्ठक वाला अपने वर्ण का पन्द्रह का यन्त्र लिखें। सर्वप्रथम रेखाएँ बनायें। चार सीधी और चार खड़ी, कोष्ठक बन जाने के बाद इसमें अंक भरें। पहला अंक लिखते समय—'प्रथमं शैलपुत्रीति' ऐसा बोलें अथवा 'ॐ शैलपुत्र्यै नमः' ऐसा बोलकर लिखें। नौ दुर्गाओं के नाम इस प्रकार हैं—

१. प्रथमं शैलपुत्रीति — ॐ शैलपुत्र्यै नमः।
२. द्वितीयं ब्रह्मचारिणी — ,, ब्रह्मचारिण्यै नमः।

३. तृतीयं चन्द्रघण्टेति	,, चन्द्रघण्टायै नमः ।
४. कूष्माण्डेति चतुर्थकम्	,, कूष्माडायै नमः ।
५. पञ्चमं स्कन्दमातेति	,, स्कन्दमात्रे नमः ।
६. षष्ठं कात्यायनीति च	,, कात्यायन्यै नमः ।
७. सप्तमं कालरात्री च	,, कालरात्र्यै नमः ।
८. महागौरीति चाष्टमम्	,, महागौर्यै नमः ।
९. नवमं सिद्धिदात्री च	,, सिद्धिदात्र्यै नमः ।

अकों के साथ क्रमशः "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस नवार्ण मन्त्र के एक-एक अक्षर को भी बहुधा लिखते हैं।

पहली बार पटिये पर १ अथवा ५ यन्त्र लिखकर उनकी 'ॐ **भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा**' इस मन्त्र से आवाहन आदि षोडशोपचार से पूजा करें। तदनन्तर इसी मन्त्र का १०८ बार जप करें। यदि अधिक यन्त्र लिखने का नियम बना लिया जाए तो कलम को आड़ी चलाकर उसी से यन्त्र मिटाते जाएं और फिर लिखें। गन्धाक्षत या प्रणाम करके इसी प्रकार लिखते जाएं। इस प्रकार सामान्य पुरश्चरण, नौ हजार का, मध्यम १५ हजार का और उत्तम सवा लाख लेखन से पूर्ण होता है। फिर दशांश के क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कर प्रयोग करें।

दूसरा विधान—(वर्णमाला जपसहित)

षट्कोणात्मक अथवा बीजमन्त्रात्मक पञ्चदशी यन्त्र की पहले आकृति बना लें। तदनन्तर वर्णमाला के ९ खण्डों में से एक एक खण्ड लिखते जाएं तथा यन्त्र में अंक भरते जाएं। जैसे १. अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं २. लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः। ३. कं खं गं घं ङं। ४. चं छं जं झं ञं। ५. टं ठं डं ढं णं। ६. तं थं दं धं नं। ७. पं फं बं भं मं। ८. यं रं लं वं। ९. शं षं सं हं। इनको पूरा लिख लेने के बाद गन्धाक्षत करके प्रणाम करें फिर दूसरा यन्त्र लिखें।

समय और श्रद्धा के अनुसार इस पद्धति में और भी अनेक विस्तार किए

जाते हैं। जिनमें प्रणव, मायाबीज अथवा कामनानुरूप अन्य बीज लगाकर अन्त में नमः लगाना आदि हैं।

तीसरा विधान

शरद पूर्णिमा के दिन चन्द्रोदय से आरम्भ करके चन्द्रास्त तक यह यन्त्र लिखें। आदि में आरम्भ क्रिया, संकल्प-पूजादि तथा अन्त में हवनादि कर्म करें। इससे सब प्रकार की इष्टसिद्धि होती है।

चौथा विधान (विजय यन्त्र लेखन)

पञ्चदशी यन्त्र का विजय-यन्त्र बनाने के लिए धनतेरस, रूप चौदस और दीपमालिका इन तीन दिनों में लेखन होता है। लिखने की विधि में पहले उपवास करके गले में हीरे अथवा सुवर्ण की माला और शरीर पर नये वस्त्र— धोती और दुपट्टा धारण कर अष्टगन्ध के द्वारा चाँदी की कलम से प्रतिदिन २७-२७ यन्त्र लिखे जाते हैं। अथवा नौ दिन में यह यन्त्र-प्रयोग पूर्ण होता है जिसमें प्रतिदिन ९-९ यन्त्र लिखे जाते हैं। पञ्चदशी यन्त्र के एक पंक्ति में ३-३ यन्त्र तीन पंक्तियों में लिखें। लिखने के लिए पर्याप्त बड़ा कागज लेना चाहिए। नौ यन्त्रों का एक बड़ा कोष्ठक बना लें। फिर उसमें १ से ८१ अंक तक लिखें। ऐसे नौ बड़े कोष्ठकों में बढ़ती संख्या लिखकर [१] ७२९ तक लिखें और उसका पूजन करके रख दें। बाद में प्रतिदिन क्रमशः [२] १४८ [३] २१८७, [४] २८१६, [५] ३६४५ [६] ४३७४ [७] ५१७३ [८] ५८३२ और [९] ६५६१ तक लिखर दीपावली को प्रयोग पूर्ण करें।

इस तरह यह कुल ८१ कोष्ठकों में ६५६९ अंकों के लेखन से पूर्ण होता है। यह सिद्ध प्रयोग है। यन्त्र को सिद्ध करके जहां द्रव्य रखा हो वहां रखने से लक्ष्मी स्थिर रहती है।

पांचवां विधान (विजय पताका यन्त्र)

आदिपुराण में इसी यन्त्र को 'जयपताका यन्त्र' कहा है इसकी प्रतिष्ठा के लिए "ॐ ह्रीं क्लीं क्रों श्रीविजययन्त्राय नमः" का जप करें।

और यन्त्र के चारों ओर नीचे लिखे पांच पद्य लिखें—

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधतीं मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः ।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिताद्,
छिन्द्यान्नः सहसा पदस्त्रिभिरथ ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥
देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा,
त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथ त्रिब्रह्म वर्णास्त्रयः ।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तू त्रिवर्गादिकं,
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥२॥
लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीमध्वनि,
क्रव्यादद्विपसर्पभाजि शबरीं कान्तारदुर्गे गिरौ ।
भूतप्रेतपिशाचजम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवीं,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदंस्तारां च तोयप्लवे ॥३॥
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रीङ्कारी त्रिपुरा परापरमती माता कुमारीत्यसि ॥४॥
आईपल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रिक्रमाद्यक्षरैः,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथ क्षान्तश्च तैस्तैः स्वरैः ।
नामानि त्रिपुरे भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते,
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिसहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥५॥

(ये पद्य सिद्ध स्तोत्र 'लघुस्तव' से लिये गये हैं।)

प्रयोग के दिनों में हविष्यान्न का ही भोजन करें।

छठा विधान

एकान्त पूजागृह में आसन पर बैठकर अपने समक्ष एक जल से भरा हुआ तांबे का कलश रखें उस पर तर्भाणा अथवा छोटी थाली रखकर उसमें गेहूं,

सुपारी और श्रीफल रखे। बाद में उसे रेशमी लाल वस्त्र ओढ़ा दे। उसे एक पटिये पर रखकर उसके समक्ष घी का दीपक और अगरबत्ती जलाए। यन्त्र लिखने के समय तक धूप-दीप रहने चाहियें। यन्त्र लिखने से पूर्व अपने वर्ण के अनुसार निम्नलिखित मंत्र का जप करना चाहिए—

१-ब्राह्मण के लिए मन्त्र—ॐ **ह्रीं गौरि रुद्रदेवते योगेश्वरि स्वाहा।**

२-क्षत्रिय के लिए मन्त्र—ॐ **ह्रीं ह्रौं मम कार्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

३-वैश्य के लिए मन्त्र —ॐ **गणपतये नमः सर्वभूतवशं कर्तुं हुं रुहे नमः**

ॐ **कारो हुं नमः।**

४-शूद्र के लिए मन्त्र—ॐ **ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।**

प्रत्येक वर्ण के साधक को इन मन्त्रों के अनुसार १५००० जप करना चाहिए। जप के लिए सोना, चांदी, तांबा या रुद्राक्ष के मनकों की माला का प्रयोग उत्तम है। तांबे के पतरे पर अपने वर्ण के अनुसार पन्द्रह का यन्त्र खुदवा लेना तथा शुभ-मुहूर्त में यन्त्र-प्रतिष्ठा-विधि के अनुसार स्नानादि करा कर उस पर अष्टगन्ध अथवा केशर से यन्त्र लिखे और विधिवत् पूजा करे। पूर्व या उत्तर दिशा में मुंह रखकर जप करे। १५ हजार जप पूरे होने पर दशांश हवनादि करना चाहिए। कुमारिका और बटुक को भोजन कराये।

तदनन्तर भोजपत्र अथवा नागरबेल के पान पर यन्त्र लिखना आरम्भ करे। जितने यन्त्र प्रतिदिन लिखे जाएं उनकी संख्या रखकर सायंकाल को उन्हें नदी में बहा दे। १० हजार यन्त्र लिखने पर एक यन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में यथारुचि प्रयोग करे।

सातवां विधान

पूर्वलिखित पद्धति से कलश स्थापना करके पूजा करे। तदनन्तर नीचे लिखें मन्त्र की १० माला जप करे।

ॐ ह्रीं हृल्लेखायै विद्महे ॐ ऐं ॐ ह्रीं
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।
श्री भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।।

१० दिन तक मध्यरात्रि में इसका जप करके ३२ यन्त्र भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखे। यन्त्र लेखन के समय भी यही मन्त्र जपता रहे। फिर यन्त्रों को प्रणाम करके कलश पर रख दे। ग्यारहवें दिन हवनादि करके इन ३२ यन्त्रों में से ८ का हवन करे। ८ को जल में प्रवाहित करे। ८ को पृथ्वी में गड्ढा खोदकर गाड़ दे और शेष ८ यन्त्रों को जंगल में अथवा किसी बगीचे में लगे आम के पेड़ पर बांध दे और आम के पेड़ से प्रार्थना करे—

सुधासम महावृक्ष आम्रदेव नमोऽस्तुते।
त्वां समर्पये, सिद्धि मे देहि सर्वार्थसिद्धये ।।

इस तरह प्रार्थना करके उस वृक्ष की पूजा करे और यन्त्रों को वापस ग्रहण करे। इन यन्त्रों को आवश्यकतानुसार स्वयं प्रयोग में लाये और जिसे आवश्यकता हो उसे प्रदान करे। इस यन्त्र को पानी में धोकर पिलाने और मार्जन करने से सर्वाधिक उपद्रव भी शान्त होते हैं।

प्रयोग के पश्चात् जो भी द्रव्यलाभ हो उसमें से १६वाँ हिस्सा भगवती की पूजा में खर्च करे। शेष अपने कार्य में लेवे।

आठवां प्रयोग

ॐ अस्य श्रीपञ्चदशीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीत्रिपुरा-देवता श्रीं बीजं ऐं शक्तिः ह्रीं कीलकं ममेह जन्मनि अमुककामनासिद्धये अमुकसंख्याक-यन्त्रलेखनपूर्वक मन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः (शिरसि)। पङ्क्तिश्छन्दसे नमः (मुखे)। त्रिपुरादेवतायै नमः (हृदये)। श्रीं बीजाय नमो (गुह्ये)। ऐं शक्तये नमः (पादयोः)। ह्रीं कीलकाय नमः (नाभौ)। विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर-हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां वां अगु० । हृदयाय० । ॐ ह्रीं वीं तर्जनी० । शिरसे० । ॐ ह्रूं वूं मध्यमा० । शिखायै० । ॐ ह्रैं वैं अनामिका० । कवचा० । ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठि० । नेत्र० । ॐ ह्रः वः करतल० । अस्त्राय० ।

ध्यान—

बालार्कद्युतितेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नानाभूषणभूषितां सुविमलां रत्नासने संस्थिताम् ।
हस्तैः पाशधनुः सृणिं सुरुचिरं पद्मं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

इस प्रकार न्यास और ध्यान करके यथाप्राप्त उपचारों से प्रतिष्ठापूर्वक यन्त्र का पूजन करें और नीचे लिखे संख्यावाले मन्त्रों से भी यन्त्र की पूजा करें।

ॐ एकस्मै परमात्मने नमः द्वाभ्यामश्विनीकुमाराभ्यां नमः । त्रिभ्यो ब्रह्मविष्णुरुद्रभ्यो नमः । चतुर्भ्यो वेदेभ्यो नमः । पञ्चभ्यः पृथिव्यादिभूतेभ्यो नमः । षड्भ्य ऋतुभ्यो नमः । सप्तभ्यो मुनिभ्यो नमः । अष्टभ्यो वसुभ्यो नमः । नवभ्यो निधिभ्यो नमः ।[1]

तदनन्तर 'ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं पञ्चदश्यै स्वाहा' इस मन्त्र से नैवेद्य अर्पित करे ।

पूजा-यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

सुन्दरि ८	ॐ १	महा ६
ह्रीं ३	क्लीं ५	त्रिपुर ७
श्रीं ४	स्वाहा ०	ऐं २

जप-मन्त्र

यथाशक्ति नियमित रूप से यन्त्र लिखे और तत्पश्चात् 'ॐ **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महात्रिपुरसुन्दरि स्वाहा**' इस मन्त्र का जप करे। इससे सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

१. इन सब के पहले ॐ लगायें ।

पञ्चदशी यन्त्रों के अन्य विविध प्रकार

(१) ब्राह्मण वर्ण

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(२) क्षत्रिय वर्ण

४	३	८
७	५	१
२	७	९

(३) वैश्यवर्ण

२	९	४
७	५	३
६	१	८

(४) शूद्र वर्ण

६	७	२
१	५	९
८	३	४

(५) विप्र के लिये अशुभ

६	१	८
७	५	३
२	९	४

(६) क्षत्रिय के लिये अशुभ

२	६	६
९	५	१
४	१	८

(७) वैश्य के लिए अशुभ

४	९	२
३	५	७
८	१	६

(८) शूद्र के लिए अशुभ

८	३	४
१	५	९
६	७	२

अंकों के लेखन-क्रम के आधार पर यह वर्ण-विचार लिखा गया है। १ से ४ तक ब्राह्मणादि वर्ण के लिए शुभ कारक यंत्र हैं, जबकि ५ से ८ तक के यंत्र जिस वर्ण के लिए अशुभ लिखे गए हैं उन्हें छोड़ कर शेष के लिए मध्यम समझें। इन सभी यंत्रों में ५ का अंक मध्य में है। इसी प्रकार अन्य अंकों को

भी मध्य में लाया जा सकता है जिनके विधान एवं फल अन्य होंगे। षट्कर्म के सभी प्रयोग इस यंत्र द्वारा सम्पन्न होते हैं। अतः पूर्ण रूप से विधि-विधान ठीक तरह से ज्ञात करके प्रयोग करें। अवश्य सफलता मिलेगी।

विशेष—इन चार वर्णों के आधार पर बताये गये यंत्रों के लेखन-काल में चन्द्र बल का तथा लेखन वस्तु का विचार भी करना आवश्यक माना जाता है। तदनुसार—

(१) विप्र वर्ण के लिये—मिथुन, तुला और कुम्भ के चन्द्र में रक्त चन्दन, हिंगलू अथवा अष्टगन्ध।

(२) क्षत्रिय वर्ण के लिये—धनु व मेष के चन्द्र में काली स्याही में बरास कपूर मिलाकर।

(३) वैश्य वर्ण के लिये—वृषभ के चन्द्र में अष्टगन्ध से।

(४) चतुर्थ वर्ण के लिये—वृश्चिक और मीन के चन्द्र में काली स्याही से।

यही यंत्र बीजमंत्रों की आकृति और षट्कोणाकृति में भी लिखा जाता है जो कि इस प्रकार है—

(९)

(१०)

(११)

(१२)

(१३)

ऐं

वि १ डा

८ मुं ६

क्लीं ३ ५ ७ यै

४ २

चा ९ ह्रीं

च्चे
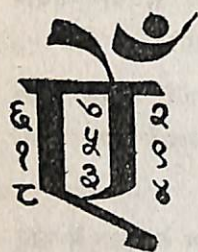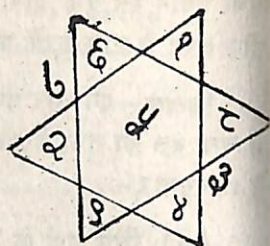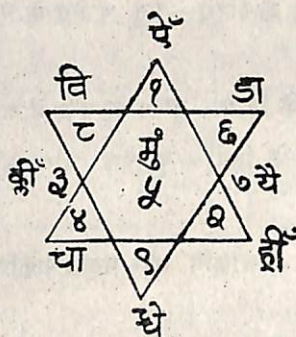
लिखित यन्त्रों को सिद्ध करने के प्रयोग

नियमित संख्या में लिखे हुए यंत्रों का क्या किया जाए ? इसके लिए ग्रन्थों में कुछ निर्देश प्राप्त होते हैं। उनके अनुसार—

(१) कागज पर १००८ यंत्र लिखकर उन्हें अलग-अलग कैंची से काट कर प्रत्येक यंत्र को आटे में गुड़ मिलाकर गोली बना लें और मछलियों को खिलाएं। इससे यंत्र सिद्ध हो जाता है।

(२) भोज पत्र पर अष्टगन्ध से १००८ बार यंत्र लिख कर अलग-अलग करके पानी में बहाने से यंत्र सिद्ध होता है।

(३) बिल्वपत्र पर १००८ बार यंत्र लिखकर तिल, घृत और खीर के साथ होम करने के यंत्र सिद्ध होता है।

(४) लिखित यंत्रों की संख्या के चार भाग कागज या भोजपत्र पर लिखे हों तथा १ भाग वृक्ष के पत्तों पर लिखे हों। इस तरह सब लिखकर उनका विभाग कर लें और पहला भाग पृथ्वी में गाड़ दें। दूसरा भाग आटे की गोलियों में मिला कर मछलियों को खिलाएं। तीसरा भाग आटे की गोलियों में मिला कर चूहों के बिल में डाल दें। चौथा भाग आकाश में हवा के साथ उड़ा दें तथा पाँचवां हिस्सा वृक्ष के पत्तों पर लिखा हुआ घी आदि के साथ मिलाकर होम कर दें। इससे यंत्र सिद्ध हो जाता है।

विशेष—अन्य लेखन-यंत्रों का भी विधान इसी प्रकार किया जा सकता है।

हवन में कामना की दृष्टि से विशेष वस्तुओं का जैसे सफेद सरसों, नीम के पत्ते, हरताल, वच, ब्राह्मी, कूट, मूथा, नमक, घृत और शहद आदि का भी प्रयोग होता है।

हमारे पास और भी कुछ पाण्डुलिपियां प्राप्त हैं, जिनमें पांच-दशी-यंत्र' को ही मुख्य मान कर बहुत-से नये-नये प्रयोग दिए हैं तथा उनके द्वारा शरीर के रोगों के निवारण के लिए धारण करना, अथवा शाबर मंत्र-जप करते अन्य विधि-विधान करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। यहाँ अधिक विस्तार के भय से उन पर कुछ नहीं लिखकर आगे केवल शिव-ताण्डव-तंत्र के विधान का परिचय दे रहे हैं।

४

श्रीशिवताण्डव तन्त्र और पंचदशी यन्त्र

पंचदशी यंत्र के अनेक प्रयोग एवं लेखन-प्रकारों का विस्तृत वर्णन हमने पिछले प्रकरण में दिया है। इस यंत्र का अनेक तंत्रग्रंथों में वर्णन आया है जिनमें यंत्र का स्वरूप यद्यपि एक ही रहा है तत्रापि प्रयोगानुसारी लेखन में बहुत सी नवीनताओं का समावेश किया गया है। शिवताण्डव-तंत्र में इस यंत्र का विधान विस्तार से प्राप्त होता है, जिसका सारांश हम यहाँ पाठकों एवं साधकों की जानकारी के लिए देना उपयुक्त समझते हैं।

ग्रन्थ-परिचय

यह तंत्र मुख्यतः पंचदशी (१५ अंक वाले) एवं चतुस्त्रिशती (३४ अंक वाले) यंत्रों पर नवीन दृष्टि प्रदान करता है। श्रीदक्षिणामूर्ति एवं भगवती पार्वती के संवादरूप में यह तंत्र चौदह पटलों में पूर्ण हुआ है[१] तथा इस पर गोविन्दसूरि के पुत्र नीलकण्ठ पण्डित ने महाराजा अनूप सिंह जी की प्रेरणा से व्याख्या लिखी है।[२]

---

१. इति श्रीद्रक्षिणामूर्ति-पार्वतीसंवोदे सर्वतंत्रोत्तमे नगेन्द्रप्रयाणे श्रीशिवताण्डवीये षोडशकोष्ठलेखनप्रकरणकथनं नाम चतुर्दशः पटलः।

२. इति श्रीमत्समस्तसामन्तचूडामणिमरीचिमञ्जरीसमर्चितपादपीठोपान्त-भूमिना श्रीमहाराजाधिराजकर्णमहाशयसूनुना श्रीमदनूपसिंहेन प्रेरित-पद-वाक्य-प्रमाण-मर्यादाधुरन्धर-चतुर्द्धर-वंशावतंसगोविन्दसूरिसूनोर्नील कण्ठस्य कृतौ श्रीशिवताण्डवीयांङ्कयन्त्रव्याख्यानेऽनूपात्तसंषोडशनवकोष्ठलेखनप्रकथनं समाप्तम्। समाप्तायं सटीको ग्रन्थो यंत्राणाम्॥

ग्रन्थकार ने प्रारम्भ में यंत्र, तदुपयोगी ज्ञान एवं विभिन्न वस्तुओं का वर्णन करते हुए तान्त्रिक दृष्टि से प्रयोज्य संज्ञाओं का निर्देश किया है। तदनन्तर यंत्र निर्माण, प्रतिष्ठा, अभिमंत्रण एवं प्रयोग का विवेचन दिया है। प्रत्येक यंत्र की रेखाओं का निर्माण करके उसके कोष्ठकों में अंक भरने का विवरण देते हुए लिखा है कि—

तेष्वङ्कान् लिखेत् प्राज्ञः सम्यग् विज्ञानतत्परः।
इष्टाङ्क-पूरणोपायं ततो वक्ष्यामि साम्प्रतम् ॥ ८१५ ॥
अशेषं नवकोष्ठेषु नास्ति शेष-प्रपूरणम्।
प्रकृतेर्द्विगुणं कृत्वा त्रिगुणं वा चतुर्गुणम् ॥ ८२५ ॥
पूरयेदनया रीत्या नवकोष्ठे क्रमादरात्।

अर्थात् बुद्धिमान् साधक उन कोष्ठकों में ज्ञानपूर्वक अंकों को भरे। इसी कारण इष्टांक भरने का उपाय मैं बतलाता हूं। ये अंक नौ कोष्ठों में ही भरने चाहियें। शेष कुछ नहीं रखें। अंकों का प्रारम्भ कहां से किया जाए। इसके लिए लिखा है कि—प्रकृति को दुगुनी, तिगुनी या चौगुनी करके क्रमशः लिखे। और इसी बात को टीकाकार ने समझाया है कि—

एक से नौ तक के अंक **'प्रकृति'** कहलाते हैं। इस प्रकृति को साध्य और साधक के वर्णों से योग करे तथा विहितांक के द्वारा उनमें भाग दे। इससे जो अवशेष रहें उनका और प्रकृति का गुणन करके अंक लिखे। शेषांक गुणित सभी अंक यथास्थान लिखे।

साध्य और साधक के वर्णांक जानने के लिए वहीं बतलाया है कि—

साध्यस्तु देवता ज्ञेया साधकः कार्यलोलुपः ॥ २।११४ ॥

'अर्थात् साध्य तो देवता और साधक जिसे अपने कार्य की सिद्धि की इच्छा हो वह होता है।' इतना बतलाकर कार्य की दृष्टि से यंत्रनाम और उसकी साध्य देवता का उल्लेख इस प्रकार किया है—

यन्त्रनाम	साध्य देवता
१—सिद्धयंत्र	त्रिपुरा
२—वश्य यंत्र	मातंगी
३—सम्मोहन यंत्र	शिखिपिच्छा
४—भूतविद्रावण यंत्र	त्वरिता
५—जगद्विजय ,,	विरजा
६—त्रैलोक्यमोहन ,,	चण्डिका
७—आपद्हर ,,	हिंगुला
८—सर्ववश्यकर ,,	कुलसुन्दरी
९—आकर्षण ,,	मधुमती
१०—निधिदर्शक ,,	भोगिनी
११—बालरक्षाकर ,,	शीतला
१२—स्तम्भन ,,	बगला
१३—जगन्मोहन ,,	भुवनेश्वरी
१४—महापदप्रद ,,	दुर्गा
१५—मारण ,,	धूमावती
१६—दुष्टनिवारण ,,	लघुश्यामा
१७—मारीशमन ,,	विचित्रा
१८—दुर्घट (अप्राप्यप्राप्तिकर)	ज्वालांशुमालिनी
१९—दुःखहर ,,	त्रिभुवनेश्वरी
२०—सिद्धिकर ,,	मातंगी
२१—सारस्वत (विद्या) प्रद ,,	काली
२२—भयापह ,,	वनदुर्गा

२३—विषनाशन ,,	ललिता
२४—कीटहर ,,	नीलसरस्वती
२५—नानाकूटहर ,,	सुमुखी
२६—लूताविस्फोटनाशन ,,	कुरुकुल्ला
२७—ज्वरदाहहर ,,	भैरवी (त्रिपुरेश्वरी)
२८—कुष्ठरोगहर ,,	विरजा
२९—चिन्ताहर ,,	भवानी
३०—मोक्षकर ,,	वैष्णवी
३१—वन्दिमोक्षकर ,,	चामुण्डा

तेरहवें पटल में नवकोष्ठक यत्र के इन प्रकारों के मूल में पंद्रह संख्यावाले यंत्र की ही प्रधानता है, तथापि १. प्रकृति २. साध्य और ३. साधक के योग, गुणन तथा भाग के द्वारा जो अंक बनते हैं उन्हीं से आगे के अंक लिखे जाते हैं और उनसे बना हुआ यंत्र 'विजय-यंत्र' के समान विभिन्न संख्याओं वाला बनता है।

साधक वर्णांक ज्ञान

साधक के वर्णांक का ज्ञान अगले पृष्ठ पर अंकित वर्णांक सूचक कोष्ठक से किया जाता है। इसके अनुसार नाम के जितने अक्षर हैं उन सब के अंक लिख लें। साथ ही अक्षरों के साथ जो स्वर की मात्रा हों उनके भी अंक लिखें। बाद में उन सब का योग करके उन्हें वर्णांक मानें।

इसी प्रकार कोष्ठकों में कौन सा कोष्टक पहला होगा इसका निर्देश भी स्वतंत्र रूप से श्लोकों में दिया गया है और सामान्यतः **'पूरयेत् पूर्वमार्गेण'** यह निर्देश है। मंत्रों की साधना, प्रतिष्ठा एवं धारण स्थान आदि के बारे में भी भिन्न-भिन्न निर्देश दिये गये हैं। अंकपूरण का क्रम एक समान नहीं हैं।

साधक-वर्णांकज्ञानाय कोष्ठकम्

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	०
८	५	८	२	३	४	१	७	६	७	६	४	१	२	३	५	
कह	ख	गक्ष	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	०
२	३	५	८	५	८	२	३	४	१	७	६	७	६	४	१	
थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
२	३	७	८	५	८	२	३	४	१	७	६	७	६	४	१	

अथवा

८ अ	५	८	२	३	४	१	७	६	७	६	४	१	२ अ	३	५
अ घ न	आ ङ ष	इ च फ	ई छ ब	उ ज भ	ऊ झ म	ऋ ञ य	ॠ ट र	ऌ ठ ल	ॡ ड व	ए ढ श	ऐ ण ष	ओ त स	औ थ क ह	अं द ख	अः ध ग क्ष

कहीं मंत्रिगति, हस्तिगति, वाजिगति आदि भी सम्मिलित किये हैं। जो शतरंज की मोहरों के समान गति के सूचक हैं।

भगवान् श्री दक्षिणामूर्ति शिव ने उपर्युक्त यंत्रों के कथन के साथ ही बहुधा यह भी बतलाया है कि इस यंत्र का धारण करके ही मैंने तुम्हारा मोहन, अन्धकासुरनाश, त्रिपुर-विजय आदि कार्य किये। आदि। अतः यह कहा जा सकता है कि 'पंचदशी-यंत्र' की महिमा अति विस्तृत है। विस्तार भय से हमने यहाँ संक्षेप में यह दिखलाया है। भगवत् कृपा हुई तो हम इस ग्रंथ के मूल तथा टीका दोनों को आधार बनाकर स्वतंत्र रूप से हिन्दी भाष्य सहित इसका प्रकाशन शीघ्र ही करेंगे।

---

१. इसी ग्रंथ के चौदहवें पटल में चौंतीसा यंत्र के विभिन्न प्रकार एवं साधना पद्धति का कथन हुआ है।

५

विंशांकमहायन्त्र-कल्प

[बीसा यन्त्र विधि]

नमस्ते देवदेवेश ! सर्वशास्त्र-विशारद ।
विंशाङ्कस्य विधिं ब्रूहि भक्तानां हितकारक ! ॥ १ ॥

हे देवाधिदेव, सर्वशास्त्रज्ञ ! तथा भक्तों के हितकारी (कृपा करके) विंशाङ्क यंत्र की विधि कहिए ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सुन्दरीयंत्रमुत्तमम् ।
विंशाङ्कस्य च माहात्म्यं ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मकम् ॥ २ ।

(भगवान् शिव ने कहा कि) मैं अब बीस की संख्या से बने हुए सुन्दरी-यंत्र, जो कि ब्रह्मा, विष्णु और शिवस्वरूप है उसके माहात्म्य तथा विधि का कथन करता हूं ।)

(यहां से आगे २७ अन्य पद्यों से इस यंत्र का माहात्म्य वर्णन किया है । यह मंत्रमहोदधि में संगृहीत तथा 'विश्वसारोद्धारतंत्र' का पाठ है ।)

यन्त्र निर्माण विधि—

वसुनन्दहुताशननेत्रमुनीश्वरदिक्पतिवेदरसैः क्रमशः ।
रचितं किल विंशतियंत्रमिदं धनधान्ययशः सुखसिद्धिकरम् ॥

वसु ८, नन्द ९, हुताशन ३, नेत्र २, मुनि ७, ईश्वर ११, दिक्पति १०, वेद ४ तथा रस ६ इन अंकों से क्रमशः बना हुआ यह बीसा यंत्र धन, धान्य, यश, सुख और सिद्धि को देने वाला है ।

मायाबीजान्तरीभूतमज्ञानेन्धन-दाहकम् ।
भावनावशमापन्नः साक्षाद् यंत्रमयो भवेत् ॥

यह बीसायंत्र मायाबीज 'ह्रीं' में लिखकर अथवा पूजन-जप आदि में ह्रीं बीज लगाकर प्रयोग करने से अज्ञानरूपी लकड़ियों को जलाने वाला है। जिस-जिस भावना के वशीभूत होकर पूजन की जाती है वह साक्षाद् यंत्रमय बन जाता है।

इति सञ्चिन्त्यैकचित्तः स्थिरासनो मौनी 'ॐ गुरवे नमः, ॐ गं गणपतये नमः' इति नत्वा प्रजापतिं प्रार्थयेत्—

इस प्रकार मन में भावना करके एक चित्त, स्थिर आसन वाला तथा मौन होकर 'ॐ गुरवे नमः ॐ गं गणपतये नमः' यह बोलते हुए प्रणाम करके भगवान् प्रजापति-शिव की प्रार्थना करे।

ॐ प्रजानाथ नमस्तेऽस्तु प्रजापालन-तत्पर ।
प्रसन्नो भव मे देव ! यंत्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥

प्रजा का पालन करने में तत्पर हे प्रजानाथ भगवान् शिव, आपके लिए नमस्कार है। आप मुझ पर प्रसन्न होवें। हे देव, मुझे यंत्र-सिद्धि प्रदान कीजिए।

ये केचित् प्रेत-कूष्माण्डा भैरवा भूतनायकाः ।
ते सर्वे विलयं यान्तु प्रजानाथ ! नमोऽस्तुते ॥

प्रेत, कूष्माण्ड, भैरव और भूतनायक आदि जो कोई (मेरे इस कर्म में विघ्न करने वाले) हों वे यहां से दूर चले जाएं। हे प्रजानाथ आपके लिए नमस्कार है।

प्रयच्छ सिद्धिमतुलां यंत्रराजात् सुदुर्लभाम् ।
त्वत्प्रसादादहं नाथ ! कृतकृत्यो भवाम्यरम् ॥

हे नाथ ! आप मुझे इस यंत्रराज की पूजा के द्वारा अत्यंत दुर्लभ ऐसी अपार सिद्धि प्रदान कीजिए। आपकी कृपा से मैं कृतकृत्य सफल बनूं (यही कामना है)।

इति गिरीशं सम्प्रार्थ्य मौनी यंत्रं लिखेत्—

इस प्रकार भगवान शिव की प्रार्थना करके मौन रहते हुए यंत्र लिखे—

यन्त्र लिखने की सामग्री

चंदनागुरु-कस्तूरी-रक्तचंदन-कर्पूर-कुङ्कुम-देवदारु-कुष्ठैरष्टगंधादिभिर्दाडिमादि-लेखिन्या भूर्जपत्रे प्रसिद्धयंत्रे वा 'ॐ ह्रीँ ॐ' इत्युच्चारणपूर्वकं नवकोष्ठकाङ्कितं कृत्वा प्रथमं 'ॐ ह्रीँ ॐ' इत्युच्चारणपूर्वकं लिखेत्—।

चंदन, अगर कस्तूरी, लाल चंदन, कपूर, कुंकुम-केसर, देवदारु और कुठ इन आठों का अष्टगंध बनाकर अनार, कुशा, सुवर्ण अथवा चांदी की लेखनी से भोजपत्र अथवा (यंत्र लिखने के योग्य पत्ते आदि पर) किसी प्रसिद्ध यंत्र पर 'ॐ ह्रीँ ॐ' मंत्र बोलते हुए पहले रेखाएं खींच कर नौ कोष्ठक बनाए। बाद में यही मंत्र बोलते हुए उन कोष्ठकों में अंक लिखे।

यंत्र की आकृति इस प्रकार है—

मायाबीज-गर्भ-विंशाङ्कयन्त्र अथवा विंशाङ्क-यन्त्र[1]
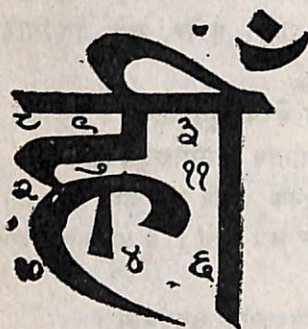
८	९	३
२	७	११
१०	४	६

यन्त्रपूजा विधि—

एवमेव विधिनाऽष्टोत्तरशतसंख्यकानि यंत्राणि लिखित्वा नाना-पुष्पैः सम्पूज्य कृष्णागुरुधूपं च दत्वा पुष्पवासिततैलेन दीपं दद्यात्।

---

१. इन यंत्रों के अन्य अनेक प्रकार होते हैं जिन्हें अगले प्रकरणों में देखें।

इस प्रकार उपर्युक्त विधि से १०८ यंत्र लिखकर अनेक प्रकार के पुष्पों से यंत्र की पूजा करके काले अगर की धूप तथा फूलों से सुगन्धित तैल का दीपक लगाये।

एवं यंत्रं सम्पूज्य पुनरपि दीपं प्रज्वाल्य पश्चिमाभिमुख संस्थाप्य—

ॐ भो भो जलेशवसन, सर्वकार्य-प्रसाधक।
सवीर्यं कुरु मे कार्यं, हर विघ्नान् नमोऽस्तुते॥

इति वरुणं सम्प्रार्थ्य 'इमं दीपं वरुण ! तुभ्यमहं सम्प्रददे' इति दीपं दत्त्वा नानापुष्पैः सम्पूज्य यंत्राग्रे मूलमंत्रं जपेत्।

इस प्रकार यंत्र की पूजा करके एक और दीपक जलाये तथा पश्चिम की ओर उसे रखकर—

हे समुद्ररूपीवस्त्र को धारण करनेवाले वरुणदेव ! हे सब कार्यों को सिद्ध करने वाले ! मेरे (यंत्र साधना में वाञ्छापूर्तिरूप) कार्य को सवीर्य—सब प्रकार से बलवान् बनाइये तथा विघ्नों को दूर कीजिये। आपके लिए नमस्कार है। इस तरह वरुणदेव की प्रार्थना करके दीपक को स्पर्श करते हुए "हे वरुणदेव ! यह दीपक मैं आपको समर्पित करता हूं" यह बोले। तदनन्तर दीपक की अनेक पुष्पों से पूजा करे और फिर यंत्र के सामने मंत्र जप करे।

मन्त्रजपविधान

ॐ अस्य श्रीविशाङ्कस्य यंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः विशाङ्का-भवानी देवता ॐ बीजं ह्रीँ शक्तिः श्रीँ कीलकं मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थे (अथवा अमुककार्यसिद्धयर्थे) जपे विनियोगः।

यह बोलकर विनियोग के लिये जल छोड़ें। तदनन्तर न्यास करें।)

न्यास—१. ॐ ब्रह्मर्षये नमः (शिरसि)

२. अनुष्टुप्छंदसे नमः (मुखे)

३. विशाङ्काभवानीदेवतायै नमः (हृदये)

४. ॐ बीजाय नमः (गुह्ये)
५. ह्रीं शक्तये नमः (पादयोः)
६. श्रीं कीलकाय नमः (नाभौ)
७. विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)

करन्यास तथा अङ्गन्यास 'ॐ ह्रीं ॐ' मंत्र से करें।

(करन्यास) (हृदयादि न्यास)

यथा—१. ॐ ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः।
२. ,, तर्जनीभ्यां नमः। शिरसे स्वाहा।
३. ,, मध्यमाभ्यां नमः। शिखायै वषट्।
४. ,, अनामिकाभ्यां नमः। कवचाय हुम्।
५. ,, कनिष्ठिकाभ्यां नमः। नेत्रत्रयाय वौषट्।
६. ,, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।

ध्यान—उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां,
रक्तालिप्त-पयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं,
देवीं बद्ध-हिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्

इसके पश्चात् यंत्र की मानसोपचार पूजा करें—

ॐ ह्रीं ॐ लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि।
,, यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।
,, रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि।
,, वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।
,, सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।

मूल-मन्त्र

ॐ **ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्ववाञ्छितं देहि देहि स्वाहा।**

इस मंत्र का १००० जप करके—

अनेन जपेन श्रीविशाङ्का भवानी देवता प्रीयताम्

इतना कहकर जल छोड़े। तथा क्षमा प्रार्थना करे।

एवं जपं निवेद्य तद्दशांशेन तर्पण-मार्जन-ब्राह्मणभोजनादीन् कुर्यात्।

इस तरह जप-निवेदन करके जप का (यदि प्रतिदिन हवन करना हो तो) दशांश १ माला द्वारा खीर, चीनी, घृत, शहद, पंचामृत और पञ्चखाद्य[1] से हवन करे। फिर उसका दशांश क्रम से तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। वैसे यह विधि पूरे जप के प्रयोग के अंत में ही की जानी उचित है।

अस्य पुरश्चरणमष्टाशीतिदिनात्मकम्। संख्यासमाप्तौ पृथक्-पृथक् यंत्रं गोधूमान्नेन वटिं कृत्वा जले क्षिपेत्। मत्स्यस्य वटिका भक्षणाद् वरुणस्तुष्यति। रात्रौ वरं ददाति। एवं कृते यंत्रसिद्धिः।

इस यंत्र के पुरश्चरण का प्रयोग अट्ठासी दिन का है। जिस दिन संख्या-समाप्ति हो, उस दिन यंत्रों को अलग-अलग गेहूं के आटे की गोलियों में रखकर पानी में डाले। इन गोलियों के मछलियों के खाने पर वरुण देवता प्रसन्न होते हैं और रात्रि में वरदान करते हैं। ऐसा करने से यंत्र सिद्ध होता है।

मौनं च ब्रह्मचर्यं, भूमिशयनं तथा चरेत्।
गोधूमचूर्णघटितं, तैलपक्वं प्रभक्षयेत्॥
न घृतं भक्षयेत् तावयावद्यन्त्रं समाप्यते।

पुरश्चरण के दिनों में मौन, ब्रह्मचर्य और भूमि पर शयन करना चाहिए। गेहूं के आटे की बनी हुई तथा तैल में बनी हुई वस्तु खाये। जब तक यंत्र का पुरश्चरण पूर्ण न हो तब तक घृत नहीं खाना चाहिये।

---

१. पांच प्रकार की मिठाइयां।

६

बीसा यन्त्र के विभिन्न प्रकार एवं उनके प्रयोग

जिस प्रकार 'पञ्चदशी-अङ्क' के यंत्रों के कल्प, विधि और प्रयोग तथा आकृतियां अनेक प्रकार की हैं, उसी प्रकार विंशाङ्क बीसा-यंत्र के भी कल्प, विधि प्रयोग और आकृतियों की बहुलता है। यह यंत्र १. केवल अंकों वाला तथा २. मंत्राक्षर सहित अंकों वाला इस प्रकार दो रूपों में प्राप्त होता है। मंत्राक्षरों की दृष्टि से इसके बहुत से भेद हैं जिनमें १: विष्णु, २. श्रीकृष्ण, ३. दुर्गा, ४. गायत्री, ५. बाला त्रिपुरा, ६. इन्द्राक्षी, ७. महालक्ष्मी, ८. सूर्यादि-ग्रह आदि के यंत्र प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त **ब्रह्मयामलतन्त्र** में दिये गये सात वारों के यन्त्र तथा विविध संख्यात्मक-यन्त्र भी मध्य में मन्त्र लिखे हुए महत्त्वपूर्ण हैं।

बीसा-यन्त्र केवल सनातनधर्मावलम्बियों में ही नहीं अपितु जैन, बौद्ध, पारसी, सिख, मुसलमान आदि सभी धर्मों के मानने वालों में सम्माननीय एवं आराध्य है। यहां हम इसके कुछ प्रकार एवं उनके प्रयोग दे रहे हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. श्रीविष्णु बीसा यन्त्र—

विधि—यह यन्त्र चन्दन की अथवा आम की चौकी पर श्वेत चन्दन से तुलसी की लेखनी द्वारा लिखकर अथवा ताम्बे के पतरे पर खुदवा कर नित्य

पूजा करें तथा भगवान् विष्णु का स्वरूप समझकर यथाविधि तुलसी पत्र चढ़ायें। बाद में '**ॐ नारायणाय**' इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। यदि संभव हो तो यन्त्र पर विष्णुसहस्रनाम के प्रत्येक नाम के साथ तुलसी-पत्र चढ़ाएं और अधिक शीघ्र सिद्धि के लिए उक्त मन्त्र का प्रत्येक नाम के साथ सम्पुट
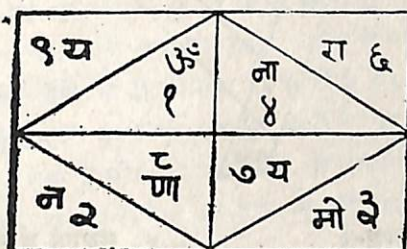
लगाकर पुष्प-पत्र आदि चढ़ाएं। इससे भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर सब मनः कामना पूर्ण करते हैं।

२. श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र
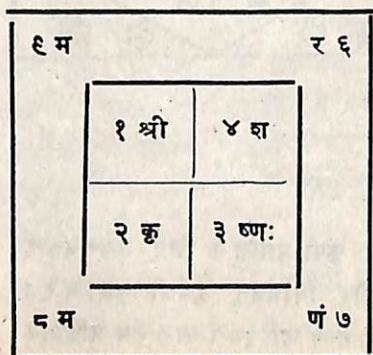
इस यन्त्र को भी ऊपर बताई हुई विधि से तैयार करके पूजा करें और **'श्रीकृष्णः शरणं मम'** इस मन्त्र का जप करें। सब कार्य सिद्ध होंगे।

३. श्री दुर्गा नवार्ण बीसा यन्त्र-१
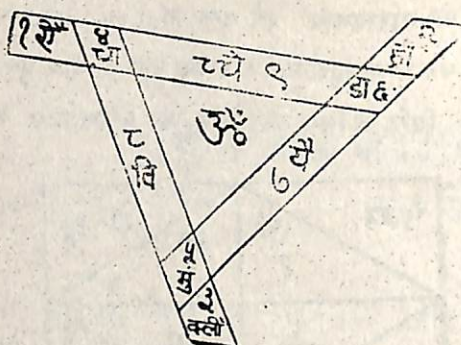
४. नवार्ण बीसा यन्त्र-२
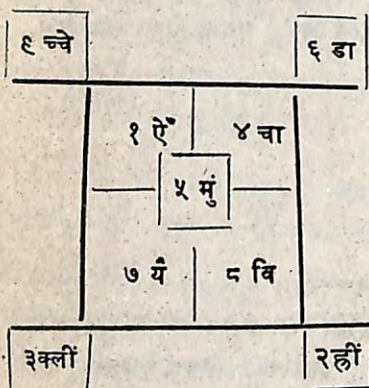
५. नवार्ण बीसा यन्त्र-३
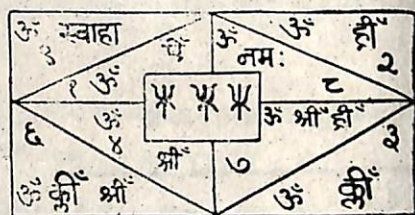
१—नवार्ण बीसा यन्त्र (पहला)

इनमें से पहला यन्त्र भगवती दुर्गा की कृपा प्राप्ति के लिए ऊपर बताई हुई विधि से तैयार करके प्रतिष्ठित करें और विधिवत् इसकी पूजा करें। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस नवार्ण मन्त्र का १०८ बार जप प्रतिदिन

करें। साथ में दुर्गासप्तशती के चतुर्थ अध्याय (शक्रादि स्तुति) अथवा सिद्ध-कुञ्चिकास्तोत्र का पाठ करें। देवी की प्रसन्नता के लिए भोजपत्र पर यन्त्र लिखकर धारण करें। इससे लक्ष्मी-प्राप्ति, रोग-निवारण तथा शत्रु-नाश आदि सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

२—नवार्ण बीसा यन्त्र (दूसरा)

यह दूसरा यन्त्र देवी की आकृति में भी लिखा जाता है। इसमें बीच वाला भाग सिर, दोनों आस-पास वाले भाग दो भुजाएं, बीच में चार कोष्ठक छाती और उदर भाग तथा नीचे के दो कोष्ठक दो स्वरों के रूप में बनाकर लिखे जाते हैं। वैसे यह यन्त्राकृति सर्वतोभद्र तथा नौ अंकों से भी पूर्ण है। इसमें न तो कोई दो अंक एक साथ हैं और न किसी अंक की आवृत्ति दी हुई है और यह नौ कोष्ठकों में भी पूरा हुआ है। इस दृष्टि से भी यह महत्त्वपूर्ण है। इसकी विधि भी ऊपर बताए अनुसार है।

३—नवार्ण बीसा यन्त्र (तीसरा)

यह तीसरा यन्त्र पहले दो की अपेक्षा कुछ विशेष महत्त्व रखता है। इसके बीच में तीन त्रिशूल त्रिगुणात्मिका शक्ति महाकाली, महालक्ष्मी और महा-सरस्वती के आयुधों के प्रतीक हैं। इसमें भी नौ कोष्ठक और नौ अंक हैं तथा साथ-साथ में बीज मन्त्र भी लिखे हैं।

इस यन्त्र को लिखकर विधिवत् स्थापना और पूजा करके '**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं नमः। मम मनोवाञ्छितं फलं देहि स्वाहा**' इस मन्त्र के १२००० जप १२ दिन में अथवा ९ दिन में पूर्ण करें। बाद में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन आदि करें। इससे सब प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। इस यन्त्र की नित्य पूजा और १०८ बार मन्त्र जप से भी पूर्ण लाभ होता है।

(६) कल्याणकारी सिद्ध बीसा यन्त्र

यह यन्त्र विधिवत् ताम्रपत्र पर बनाकर अथवा भोजपत्र पर लिखकर

सामने रख लें और "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः" इस मन्त्र का जप करते हुए यन्त्र की पूजा करें। बाद में इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। कुछ समय भक्तिपूर्वक यन्त्र को भगवत्स्वरूप मान कर ध्यान करें। इससे सब प्रकार का मनोरथ पूर्ण होता है। २७ दिन का प्रयोग इसके लिए करना चाहिए। आकृति इस प्रकार है—

	ॐ	ऐं	ॐ	
ॐ	१	९	१०	ॐ
श्रीं	१४	७ २ ॐ ३ ८	६	ह्रीं
ॐ	५	११	४	ॐ
	ॐ	क्लीं	ॐ	

७

श्रीमहालक्ष्मीविंशांक-यन्त्र विधानम्

प्रथमं चतुरस्रं च चतुरस्रं ततो बहिः।
ऐन्द्रं रेखाद्वयं चैवं याम्ये चैव ततो लिखेत् ॥ १ ॥

प्रतीची द्वौ ततो लेख्यौ कुबेरं च ततो लिखेत् ।
पूर्वकोणे रविं चैव अग्निकोणे हुताशनम् ॥ २ ॥

याम्ये चैवाब्धिकं चैव नैऋते दिक् ततो लिखेत् ।
प्रतीच्यां वसु सलिख्य वायव्ये द्विस्ततो लिखेत् ॥ ३ ॥

उत्तरे त्रिदशं चैव ईशान्यां बाणमेव च ।
ईशान-नैऋतिदिशोः काकाक्षि वेदमेव च ॥ ४ ॥

अग्निकोणे रसं चैव वायव्यां नवमेव च ।
मध्ये मन्त्रं श्रियं चैव विंशयन्त्रं प्रकीर्तितम् ॥ ५ ॥

इसके अनुसार एक लघु चतुष्कोण बनाये। फिर उसके बाहर बड़ा चतुष्कोण बनाये। इसके बाद पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में दो-दो खड़ी रेखाएँ खींचे। पूर्वकोण में १२, अग्निकोण में ३, दक्षिण में ४, नैऋत्य में १०, पश्चिम में ८, वायव्य में २, उत्तर में १३, ईशान में ५, ईशान तथा नैऋत्य में १ और ४, अग्निकोण में ६, वायाव्य में ९ अंक लिखे।

इस यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

(१) श्रीमहालक्ष्मी विंशाङ्कयन्त्र

पूर्व

ईशान कोण	५	१२	३	अग्निकोण
उत्तर	१३	१ ६ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा ९ ४	७	दक्षिण
वायव्य कोण	२	८	१०	नैर्ऋत्यकोण

पश्चिम

अष्टगन्धैर्लिखित्वा तु कर्गदे भूर्जपत्रके ।
ॐ श्रीं मायाकामबीजप्रणवां योनिमाहरेत् ॥ ६ ॥

स्वाहान्ते मन्त्रराजोऽयं जपेदेवं शुचिस्मितः ।
जपादेव प्रसिद्ध्येत मन्त्रराजस्त्रिवर्गकः ॥ ७ ॥

यह यन्त्र कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ ऐं स्वाहा' अथवा 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा' इस मन्त्रराज का पवित्रता और प्रसन्नतापूर्वक जप करे । इस प्रकार धर्म, अर्थ और कामना की पूर्ति करने वाला यह मन्त्र जपमात्र से ही सिद्ध हो जाता है

न्यासं ध्यानं न वा पूजा न न्यासो न च भावना ।
विलिखेद् यन्त्रराजं च त्रिसहस्रं सुसम्मतम् ॥ ८ ॥

न्यास, ध्यान, पूजा, अन्य प्रकार के मन्त्रादि न्यास तथा विविध प्रकार की भावना आदि कुछ भी न करके केवल इस यन्त्रराज को तीन हजार बार लिखे । (इसी से यह सिद्ध हो जाता है ।)

(इसी प्रकार और भी सभी देवताओं के बीसा यन्त्र प्राप्त होते हैं। इस यन्त्र को पञ्चदशी यन्त्र में बताई हुई विधि के अनुसार प्रतिदिन आम के पटिए पर गुलाल फैलाकर अनार की कलम से अथवा किसी थाली में गन्ध से नित्य लिखने का भी विधान प्राप्त होता है।)

अनया संख्यया देवि ! चत्वारिंशद्दिनं लिखेत् ।
तावद् लिखेद् यन्त्रराजं यावत् संख्या समाप्यते ।। ९ ।।

इस प्रकार ऊपर बताई हुई तीन हजार संख्या में इस यन्त्र को ४० दिनों में लिखें। अथवा जब तक संख्या समाप्त न हो, तब तक लिखता रहे।

पुनर्गोधूमचूर्णेन वेष्टयित्वा जले क्षिपेत् ।
मत्स्यैस्तु भक्ष्यमाणेऽस्मिन् वरुणस्तेन तुष्यति ।। १० ।।

तदनन्तर गेहूं के आटे में उन यन्त्रों को लपेटकर गोलियां बनाए और पानी में डाले। मछलियों के द्वारा वे गोलियाँ खाने पर वरुणदेव उस से प्रसन्न होते हैं।

ब्रह्मचर्यं चरेत् तावद् दशम्यां मौनपूर्वकम् ।
गोधूमचूर्ण--घटितं तैलपक्वं च भक्षयेत् ।। ११ ।।

न घृतं भक्षयेत् तावद् यावद् यन्त्रं समाप्यते ।
विघ्नान्न गणयेद् देवि सिद्धिं नैव प्रकाशयेत् ।। १२ ।।

जब तक यह यन्त्र-लेखनरूप अनुष्ठान चलता हो, तब तक मौनपूर्वक रहे। गेहूं के आटे से बनी और तेल से पकाई हुई वस्तु का भोजन करे। जब तक यन्त्र-लेखन पूर्ण न हो तब तक घृत नहीं खाए। बीच में विघ्न आएं तो उनसे डरे नहीं। यदि कुछ सिद्धि दिखाई दे तो उसे प्रकट न करे।

गात्ररोगं न गणयेत् पुनर्जन्म-विचिन्तया ।
एवं कृतपुरश्चर्यः साक्षाद् ब्रह्ममयो भवेत् ।। १३ ।।

शरीर में कोई रोग हो जाए तो उस पर ध्यान न दे। इस शरीर को नश्वर मानकर यह सोचे कि यह तो बार-बार जन्म लेता है और अनेक योनियों

को धारण करता है। इस प्रकार पुरश्चरण पूर्ण होने पर साधक साक्षात् ब्रह्मरूप बन जाता है।

न बाध्यन्ते ग्रहास्तं वै भक्षयन्ति न पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं भवेत् ॥ १४ ॥

इस यन्त्र के साधक को ग्रह पीड़ित नहीं करते हैं, सर्प नहीं डसते हैं, विष का उस पर प्रभाव नहीं होता तथा अन्य कष्टप्रद पेय भी उसके लिए अमृत बन जाते हैं।

परसैन्यस्तम्भनं च परकाय-प्रवेशनम्।
यन्त्रराजे वशीभूते किं न सिद्धयति भूतले ॥ १५ ॥

शत्रुसेना का स्तम्भन और परकाया-प्रवेश जैसे कर्म भी इस यन्त्रराज के सिद्ध होने पर सिद्ध हो जाते हैं। पृथ्वी पर ऐसी कौन सी वस्तु है जो इससे सिद्ध नहीं होती ?

खेचरीमेलनं तस्य भूचरीमेलनं भवेत्।

खेचरी और भूचरी जैसी यौगिक क्रियाओं की सिद्धि भी इस यन्त्र के प्रभाव से होती है।

लिखित्वा यन्त्रराजं तु तूले कौलालखर्परे ॥ १६ ॥
आक्रम्य वामपादेन धृत्वा तं चाप्यधोमुखे।
प्रजपन् मन्त्रराजानमष्टोत्तरशतं सुधीः ॥ १७ ॥

इस यन्त्रराज को कपास से बने वस्त्र पर अथवा कुम्हार के यहाँ से लाए गए खप्पर पर लिखकर उसको उलटा रखे और उस पर बांया पैर रखकर १०८ बार मन्त्र का जप करे।

अमुकमाकर्षयामिति स्वाहान्ते पल्लवं वदेत् ॥ १८ ॥
चक्रवर्तिनमाकर्षेद् मुहूर्तेन स्वमालयम्।
आनयेत् प्रहरार्धेन भूचरान् यक्षराक्षसान् ॥ १९ ॥

प्रत्येक मन्त्र में 'स्वाहा' के बाद 'अमुकं आकर्षयामि' यह पल्लव जोड़कर

---

१. यहां अमुक के स्थान पर जिसे आकृष्ट करना हो उसका नाम लगायें।

जप करे। इससे कुछ ही समय में चक्रवर्ती को भी अपने यहां बुलाया जा सकता है। पृथ्वीवासी, यक्ष और राक्षसों को भी इससे आधे प्रहर में लाया जा सकता है।

प्रहरैकेन देवेशि ! पाकशासनमासनात्।
चालयेन्नात्र सन्देहो वरुणं धननायकम् ॥ २० ॥
दिक्पालान् विदिशापालान् प्रहरैकेन सुव्रते।
अथवा किमिहोक्तेन धनाढ्यो जायते ॥ २१ ॥

हे देवेशि ! एक प्रहर मात्र में इस यन्त्र के प्रभाव से इन्द्र का आसन भी डोल जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। वरुण, कुबेर, दिक्पाल और विदिशाओं के अधिपति सभी कृपा करते हैं और साधक धनाढ्य बन जाता है। इसमें विशेष कहने से क्या लाभ है ? यह निश्चित है।

इस प्रकार 'विंशांक-यन्त्र' का माहात्म्य बड़ा विस्तृत है। इसीलिए लोक में प्रसिद्ध है कि **'जिसके पास बीसा उसका क्या करेगा जगदीशा'** इति।

(२) नवकोष्ठक बीसा यन्त्र

अथवा (३)
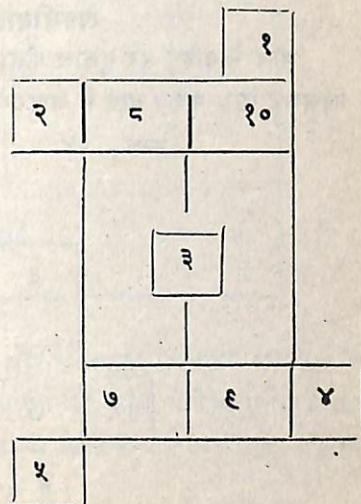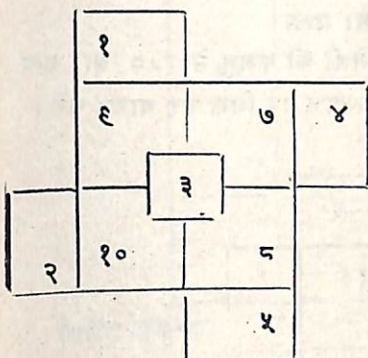
इस यन्त्र का मूलमन्त्र इस प्रकार है—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्वांछितं देहि देहि स्वाहा।' यह यन्त्र अष्टगन्ध से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र अथवा कागज पर १०८ बार लिखें और चन्दन, सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करें।

८८ दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए। शुक्लपक्ष की द्वितीया से आरम्भ करके प्रतिदिन १ हजार मूलमन्त्र का जप भी करें। यथासम्भव प्रतिदिन एक माला से हवन भी करें। हवन सामग्री में खीर, चीनी, घृत, शहद और बिल्व पत्र का प्रयोग होना चाहिए। हवन का समय रात्रि सर्वोत्तम है। हवन के बाद साथ ही १० मन्त्र से तर्पण करना चाहिए। अनुष्ठान के नियमों का पालन आवश्यक है। अन्तिम दिन स्वप्न में सिद्धेश्वर प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं, तथा धनधान्य समृद्धि प्राप्त होती है।

सम्भव हो तो एक यन्त्र सुवर्ण पत्र पर बनाए और उसी पर प्रतिदिन १०८ संख्या में लिखे यन्त्रों को रखकर उनकी पूजा तथा बाद में उनका हवन सामग्री के साथ होम कर दें।

लक्ष्मीदाता बीसा यन्त्र

आम के पटिए पर गुलाल फैला कर चमेली की कलम से १०८ बार यन्त्र लिखकर सिद्ध करे। बाद में अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर धारण करे।

यन्त्र—२४
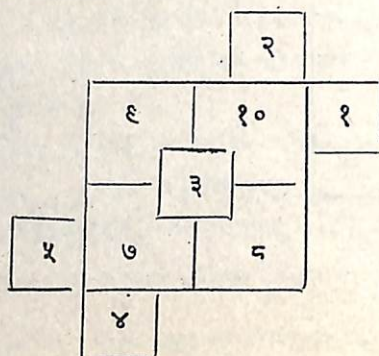
(५) लक्ष्मीप्रद सिद्ध बीसा

रविपुष्य अथवा गुरु-पुष्य के दिन पीला वस्त्र धारण कर पीले आसन पर पीली माला –'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः' मन्त्र का प्रतिदिन जप करते हुए ६२ दिन तक नीचे लिखा यन्त्र एक निश्चित सख्या में लिखे। ६३वें दिन इसी यन्त्र को चांदी के पत्र पर खुदवा कर पहले लिखे यन्त्रों के ऊपर उसे रखे और पूजा करे। पुरश्चरण-विधि से अन्य पूर्ति करके लिखे। यन्त्रों में से एक को तांवीज में रखकर धारण करें। चांदी का यन्त्र तिजोरी में रखे। लक्ष्मी-प्राप्ति धन-धान्य वृद्धि एवं सुख-समृद्धि हो।

<table>
<tr><td>महालक्ष्म्यै</td><td colspan="2">×</td><td>नमः</td></tr>
<tr><td>९</td><td colspan="2">श्रीं</td><td>६</td></tr>
<tr><td rowspan="2">ॐ</td><td>१</td><td>४</td><td rowspan="2">ह्रीं</td></tr>
<tr><td>७</td><td>८</td></tr>
<tr><td>३</td><td colspan="2">क्लीं</td><td>२</td></tr>
</table>

विशेष सूचना

बीसा-यन्त्र भारतवर्ष के सभी धर्म और सम्प्रदायों में बहुत लोकप्रिय है। अतः इस यन्त्र के प्रकार और प्रयोग-विधान भी बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। अनेक साधकों ने इसके प्रयोग से सिद्धियां प्राप्त की हैं, इसीलिये छोटे-बड़े भेद-प्रभेद भी इसमें बहुत हो गये हैं।

८

बीसा यन्त्र कल्प

प्रायः मन्त्रांदि के साथ विधान, मन्त्र और यन्त्र का मिलन भाग्योदय से होता है। मंत्र के साथ यंत्र होने से आराधना करने वाले को शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। बीसा यन्त्र का आलेखन अष्टगन्ध से करना चाहिए और जब सब कोठे तैयार हो जायें तब बीच में जो यंत्र छः कोण वाला आगे बताया है उसमें प्रथम बांयी तरफ के कोठे में दो का अंक लिखना, फिर तीन का, चार का, छै, सात, आठ और दस का अंक लिखकर यंत्र लेखन को पूरा करने के बाद आसपास में मंत्र लिखना। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं चितपिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वं ज्ञापनं ज्ञापय ज्ञापय स्वाहा।

इस मंत्र को ऊपर कोठे में से प्रारम्भ कर बताए अनुसार लिखे। जैसे 'ॐ ह्रीं' लिखा, बाद में दूसरे कोठे में 'चितपिंगल', तीसरे से नीचे के कोठे में 'दहं-दह', चौथे बायीं तरफ के कोठें में **'ज्ञापनं'** लिखे और नीचे दाहिनी ओर के कोठों में 'हन हन' लिखे। बायीं ओर के कोने में 'पच पच सर्वं' लिखे। ऊपर के बायीं ओर के कोने में 'ज्ञापय ज्ञापय' लिखना। ऊपर के दाहिनी ओर के कोने में 'स्वाहा' लिखना। इस तरह से यंत्र तैयार करना।

सिद्धि प्राप्त करने के हेतु एक यन्त्र ताम्र पत्र पर लेखन-विधान के अनुसार तैयार कराना और भोजपत्र या कागज पर लिखे हुए दस-बीस यंत्र भी साथ रखकर सिद्ध कर लेना चाहिए। ये यत्र किसी को देने में भी काम आ सकते हैं। इस तरह यन्त्र बनाकर आगे के विधान पर ध्यान दें।

सिद्धि करते समय एकान्त जगह देखना चाहिए जहां जनता का आना जाना न हो और पीपल का वृक्ष हो। उसके नीचे स्थापना-ध्यानार्थ जगह शुद्ध करा लेनी चाहि। कीड़े-मकोड़े वाली भूमि नहीं होनी चाहिए। अखण्ड ज्योति की रक्षा का ध्यान रखना उचित है। इस तरह की समस्त क्रिया को शुद्ध मन से करा सकें ऐसे सेवक अथवा सहायक को अवश्य रखना चाहिए। पीपल के पत्ते पर एक सौ साठ बार यंत्र मंत्र सहित लिखना और पीपल की लकड़ी से घृत लगा कर पत्तों को रख देना, फिर मन्त्र का १००८ जप करना। फिर सामने एक कुण्ड बनाकर पीपल की लकड़ियों को कपूर से जलाकर मन्त्र बोलते जाना और स्वाहा बोलते ही घृत या यन्त्रलिखित पत्ता और दशांग धूप हवन सामग्री छोड़ते जाना। इस तरह से चालीस दिन तक करना चाहिए। प्रयोग चले जितने केवल दूध या दूध की वस्तु ही ग्रहण करे। शुद्ध जल पिये। भूमि पर शयन करे। जप का समय पिछली रात्रि का है।

सिद्धि के समय शरीर व वस्त्र-शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए। शीघ्र सिद्धि की इच्छा हो तो विशेष उत्साहित होकर त्रिकाल मन्त्र जप करना चाहिए। संध्या के समय बराबर साधना और देव के फल-नैवेद्य नित्यमेव करते रहना। पुष्प गुलाब या मालती के चढ़ाना। इस तरह करे तो रात्रि में स्वप्न आवे जिसका ध्यान रखना और सिद्धि प्राप्त होने के बाद जब कार्य हो तो यन्त्र को सामने रख एक माला फेर कर सो जाने से शुभाशुभ फल और व्यापार के अंक का ज्ञान होगा, जिसे स्मरण रख शुभ कार्य करते रहना।

जो मंत्र कागज—भोजपत्र पर बनाए हैं उनमें से एक अपने पास में रखकर कार्य करने से लाभ होगा। धर्म, नीति, श्रद्धा, संयम को मत भूलना। धर्म से ही विजय पा सकते हैं। यन्त्र इस प्रकार है—

२७. षट्कोणगर्भ समन्त्रकं विशाङ्क-यन्त्रम्
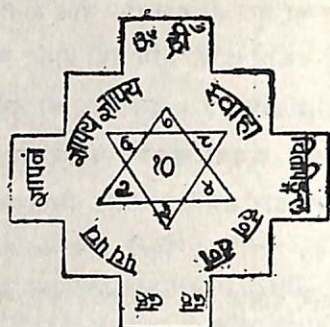
२८. विघ्ननाशक स्वस्तिकाकृति बीसायंत्र
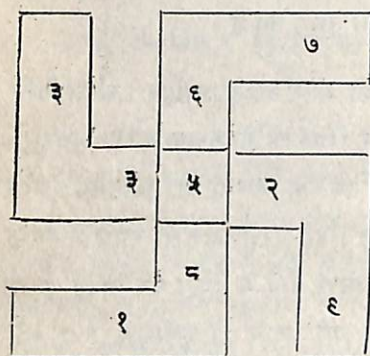
इस यन्त्र को सिद्धियोग, दीपावली अथवा होली के दिन अनार की लेखनी से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करे और ताबीज में डालकर दाईं भुजा अथवा गले में धारण करने से सभी विघ्न दूर होते हैं और शुभ फल प्राप्त होते हैं।

२९. मुस्लिम बीसायन्त्र

यह यन्त्र जुम्मेरात को लोबान की धूप देते हुए पश्चिम में मुंह करके लिखा जाता है। इसके पास रखने से सभी प्रकार के लाभ होते हैं। अन्य नीचे बताये दो यंत्रों के लिखने का प्रकार भी यही है।

(३०)

या फरमाइल	२	या जबराइल
३	१०	७
या दरदाइल	८	या तनकोइल

बगदाद शरीफ में महबूब मियां के रोजे में लिखा हुआ बीसा यन्त्र

(३१)

४			७
	६	३	
	९	२	
१			८
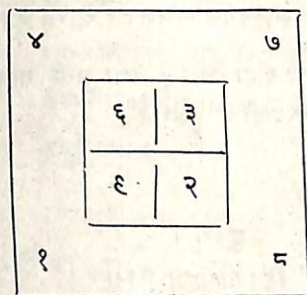
आगरे की जुम्मा मस्जिद में लिखा बीसा यन्त्र

(३२)

९
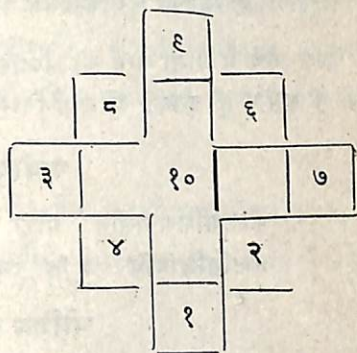
ब्रह्मयालम और बीसा यन्त्र

जिस प्रकार पञ्चदशी-यन्त्र का विस्तार अन्यान्य तन्त्रग्रंथों में प्राप्त होता है, उसी प्रकार बीसा-यन्त्र का प्रयोग भी भिन्न-भिन्न तन्त्रों और यामल आदि ग्रथों में मिलता है। हमारे पास एक प्राचीन पाण्डुलिपि 'ब्रह्मयामल' भी है उसमें बीसा-यन्त्र के पहले बताये गए प्रयोगों के अतिरिक्त कुछ नये प्रयोग भी दिए गए हैं जिनका कुछ परिचय यहां देना आवश्यक समझकर दे रहे हैं।

इस ग्रन्थ में बीसा यन्त्र को अष्टसिद्धि-यन्त्र कहा गया है तथा अन्य तन्त्र-ग्रंथों के समान ही इसका आरम्भ निम्नलिखित पद्यों से हुआ है।

पार्वत्युवाच

कैलाशशिखरासीनं गौरी पृच्छति शङ्करम्।
अष्टसिद्धिविधिं ब्रूहि लोकानां हितकाम्यया ॥१॥

श्रीशिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि अष्टसिद्धिविधानकम्।
सन्ति नानाविधा लोके यन्त्राः सर्वेऽपि कीलिताः ॥२॥

अष्टसिद्धि-महायन्त्रं भूगोलं चाष्टसिद्धिदम्।
अष्टाङ्के, हयष्टकाद्यङ्काः स्युर्मन्त्रस्य च मूलकम् ॥३॥

नवकोष्ठे लिखेद् यन्त्रं कलौ सिद्धिप्रदायकम्।
अष्टाङ्गविंशसंख्यकं यन्त्रं गुह्यं महीतले ॥४॥

अर्थात्—पार्वती जी ने शिवजी से पूछा कि हे महादेव ! आप कृपा करके लोककल्याण के लिए 'अष्टसिद्धि-प्रद बीसा-यन्त्र' का विधान बतलायें। तब शिवजी ने कहा कि मैं तुम्हें उक्त यंत्र का विधान बतलाता हूं। लोक में बहुत से यन्त्र हैं; किन्तु वे सब कीलित हैं। यह 'अष्टसिद्धि महायन्त्र' अष्टसिद्धि[1] का दाता है। इसमें आठ अंगों में अंक लिखे जाते हैं तथा मध्य में मूलमन्त्र रहता है। इस प्रकार यह यन्त्र नौ कोष्ठकों में लिखा जाता है। कलियुग में यह सिद्धिप्रद है और यह अष्टाङ्ग बीसा-यन्त्र अत्यन्त गुप्त है। इतना बतलाकर आगे मन्त्र दिया है, जो इस प्रकार है—

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ह्रीं नमः। ॐ मनः ह्रीं क्लीं श्रीं अष्टसिद्धये सर्वमनोरथपूरण्यै पृथ्व्याधारायै रवितेजःकरायै कोटिचन्द्र-सुशीतलायै कामधेनवे कल्पवृक्षायै। महालक्ष्मि महासरस्वति महाकालि महामोहिनि सर्वलोकानां काम्येश्वरि कामधेनुस्वरूपिणि ब्रह्माणि वैष्णवि रुद्राणि जगन्मङ्गलदायिनि त्वमेव पर्यासवता पापसङ्घातहारिणि तुभ्यं नमः।"

तदनन्तर यन्त्रों को भूर्जपत्रादि पर लिखकर उनकी पूजा करे और लिखित यन्त्रों को जल, अग्नि और पृथ्वी में समर्पित करने का संकेत दिया है। मूल यन्त्र की आकृति इस प्रकार है[2]—

---

१. आठ सिद्धियां इस प्रकार हैं—१. अणिमा, २. महिमा, ३. गरिमा, ४. लघिमा, ५. प्राप्ति, ६. प्राकाम्य, ७. ईशित्व और ८. वशित्व। इनका विस्तृत परिचय हमारे 'योगशक्ति' ग्रन्थ से प्राप्त करें।

२. मूलयन्त्र के समान ही सातों वारों के यन्त्र केवल अंक परिवर्तन से बनते हैं। अतः आगे एक ही आकृति दी गई है।
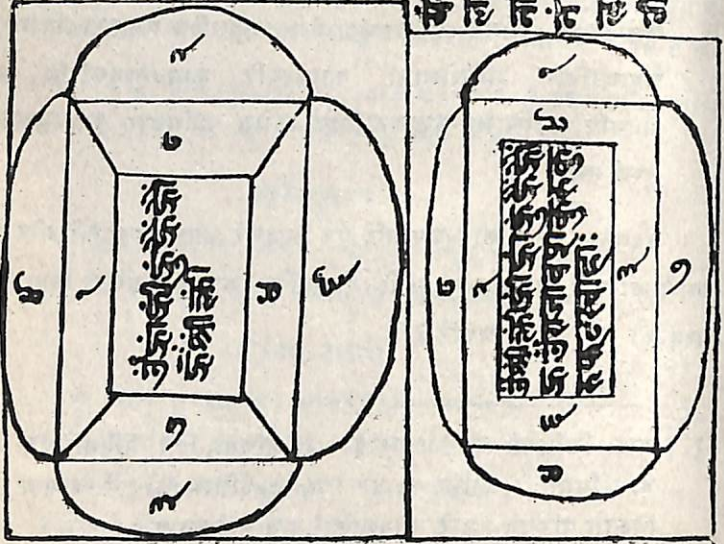
अष्टसिद्धिप्रद-अष्टांग विंशांक-यन्त्र

इस यन्त्र के अंकों का सूचन करके कहा है कि—

यह यन्त्र रविवार के लिए लिखा जाता है तथा इसकी विधि वहां इस प्रकार बतलाई है—

चन्द्रो १, नेत्र २ स्तथा, वह्नि ३ र्वेदो ४ रस ६ ऋषि ७ स्तथा।
नागा ८ ग्रहा ६ महायन्त्रे ह्यष्टसिद्धिः प्रकीर्तिता॥

सातों वारों के प्रयोग

(१) रविवार प्रयोग—(भगवत् प्राप्ति)

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं च महाद्भुतम्।
रविवारे रक्तगन्धं कर्पूरं कुङ्कमं तथा॥
दाडिमीशाखलेखन्या भूगोलं भूर्जके लिखेत्।
बाहौ कण्ठे धारयित्वा नरो नारायणो भवेत्॥

अर्थात् इस यन्त्र में १ से ४ तक तथा ३ से ६ तक के जो अंक हैं वे अष्टसिद्धि रूप हैं। अब इसका अत्यन्त अद्भुत प्रयोग बतलाता हूं—रविवार के दिन लाल चन्दन, कपूर और कुंकुम मिलाकर दाड़िम की शाखा की कलम से भोजपत्र पर भूगोल—बीच में चौकोर तथा चारों ओर से गोल आकार वाला यन्त्र लिखे। (तथा अन्य विधि करके) उसे भुजा अथवा कण्ठ में धारण करे तो मनुष्य नारायण के समान हो जाता है।

यहीं किसी अन्य विद्वान् ने प्राचीन हिन्दी भाषा में व्याख्या के रूप में पद भी दिये हैं जिनसे कुछ रहस्य-विधि का ज्ञान होता है। यथा—

एका कण्ठ सरस्वती वास, दोय वामभुज बल निवास।
तीन त्रिभुवन दक्षिण भुज जोय, चार चतुर्मुख नाभी होय।
छैई चरणकमल चित ध्यान, सात लिखिये दक्षिण कुच जाण।
अष्ट अंक वाम कुच धरिये, नौवा शीस जंत्र सी धरिये॥१॥
एक जंत्र भूगोल लिख, पंचदशी विन बीस।
एकामु नोवा तलक, अष्टघर अष्टसीध॥ २॥

अष्टप्रकार मिला जोड़ अंकड़ला देखुड़्या बीस ।
मनचिन्त्या कारज करें, आय मिले जगदीश ।। ३ ।।

इस कथन से स्पष्ट होता है कि—यन्त्र के आकार में ऊपर का भीतर से पहला भाग **'कण्ठ'**, आस-पास के दोनों बाहरी भाग **बाईं** और **दाई भुजाएं**, नीचे का भीतरी भाग **नाभि**, उसके नीचे का बाहरी भाग **चरण**, आस-पास के भीतरी दोनों भाग **स्तन** एवं सबसे ऊपर का बाहरी भाग सिर है। इस प्रकार यन्त्र भगवती के शरीर की ही आकृति है। इसमें पांच और दस के अंक नहीं लिखे जाते। एक से नौ तक आठ घर होते हैं जिन्हें आठ प्रकार से जोड़ने पर २०-२० की जोड़ हो जाती है। यह यन्त्र मन की कामना पूर्ण करने वाला है तथा इससे भगवान् का भी साक्षात्कार हो सकता है।

आठ प्रकार की जोड़ का प्रकार निम्नलिखित है—

(१) बाहर के अंक—९+२+६+३=२०, (२) भीतर के अंक—१+८+४+७=२०, (३) ऊपर के अंक—९+२+३+६=२०, (४) दोनों ओर आस पास के अंक—३+७+८+२=२०, (५) ऊपर और बाजू के ९+१+८+२=२०, (६) बाजू और नीचे के ८+२+४+६=२०, (७) नीचे के और बाजू के ४+६×३×७=२० तथा (८) बाजू के और ऊपर के ३+७+९+१=२०।

(२) सोमवार—प्रयोग (वशीकरण)

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वा च केसरम्।
श्वेतगुञ्जा-समायुक्तं कपिलापयमर्दनम् ।।

सम्यग् लिखित्वा यन्त्राणि बाहौ कण्ठे च धारयेत्।
राजानो वशमायान्ति अन्यलोकेषु का कथा ।।

अर्थात् सोमवार के दिन श्वेत दूर्वा, केसर, श्वेत चन्दन, कपूर और श्वेत गुंजा इन सबको एक साथ लेकर कपिला गौ के दूध में मिलाये। फिर उसकी

स्याही से उत्तम यन्त्रों का निर्माण करे। (विधिवत् पूजा आदि करके) उसे बाहू अथवा कण्ठ में धारण करे। इससे राजा भी वश में आ जाते हैं। फिर अन्य लोगों का तो कहना ही क्या ?

इस यंत्र में अंक लिखने की विधि हिन्दी पदों में इस प्रकार है—

यन्त्रराज सन्मुख रखूं, जंत्र अंग विधि जोय।
एका तो वाम भुजा लिख, कण्ठ धरिय तू दोय।
तीन अंक नाभी प्रमाण, चार लिखा दक्षिण भुज जाण।
छँई अंक दक्षिण कुच होय, सात चरण में सब सुख जोय॥
अष्ट अंक शीस प्रसिद्ध, नौवां वाम कुचा नव निध।
अंग अंग मैं ल्यावे बोस, इन्द्र आय नवावें सीस॥

इस यन्त्र के मध्य में '३ॐ श्रीं क्लीं ह्लीं ह्लां ह्लैं ह्लौं ह्लः ३ॐ **राजवशं कुरु कुरु फट् स्वाहा**' इतना मन्त्र लिखा जाता है। वैसे 'राज' के स्थान पर जिसका वशीकरण करना हो उसका नाम भी लिखा जा सकता है।

(३) **मंगलवार-प्रयोग** (सम्मान, विद्या, धन एवं मंगल-प्राप्ति)

भौमवारे गृहीत्वा तु भूगोले भूर्जपत्रकम्।
अष्टगन्धं लिखेद् यन्त्रं, कर्पूरं धूप-दीपकम्॥
तिल-तन्दुल-मधु च शर्करा-घृत-पयोदकम्।
हवनं मन्त्रसंयुक्तं मंगलं यन्त्रपूजनम्॥
धार्यं कण्ठे च बाहौ च भूमी-भोग विलासनम्।
त्रिलोके च भवेत् पूज्यः वेदपाठी धनाढ्यकः॥

अर्थात् मंगलवार के दिन चतुष्कोण भोजपत्र पर अष्टगन्ध से मन्त्र लिखे तथा विधिवत् पूजा करके तिल, चावल, चीनी, घृत, मधु, शहद, दूध और जल मिलाकर मन्त्र-पूर्वक हवन करे। फिर मंगलवार के यन्त्र को भुजा अथवा

कण्ठ में धारण करे। इससे भूमि, भोग एवं विलास की प्राप्ति होती है तथा तीनों लोक में पूज्य, वेदपाठी और धनवान् बनता है।

अंक लिखने की विधि इस प्रकार है—

मंगलीक जंतर लिखूं मंगल का दिन होय।
दक्षिण भुजा में एक लिख नाभी में लिख दोय॥

कण्ठ तीन त्रिगुणधरी चार वेद वाम भुज होय।
छैई लिखिए वाम कुच सात सीस पर सर्व जग मोय॥

अष्ट अंक चरण प्रसिद्ध, नोवां दक्षिण कुचा नव निध।
अंग अंग में गिण लेणा बीस, मंगल आय करे गौरीश॥

इसके बीच में "ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ह्रू ह्रै ह्रौं ह्रः ह्रैं ह्रां ॐ नमो महागौर्ये सर्वविघ्ननिवारणम्" इतना और लिखना चाहिए।

(४) बुधवार प्रयोग (गर्भस्तम्भन तथा पुत्रप्रद)

बुधवारे विधियुतं भूगोले भूर्जपत्रके।
शंखावलीं च सिन्दूरं कर्पूरं च गोरोचनम्॥

नागवल्ली-रसं चैव हर्तालं पयमर्द्दनम्।
सम्यग् लिखित्वा यन्त्राणि बाहौ कण्ठे च धारयेत्॥

नर इन्द्रो भवेदेव इन्द्रतुल्य-पराक्रमः।
कन्यकाकर्तिते सूत्रे नवग्रन्थिकबन्धनम्॥

स्त्रीकण्ठे धारयेद् यन्त्रं पुत्रस्तस्या भवेद् ध्रुवम्।
दीर्घायुश्च भवेत् सत्यं सत्यं वक्ति महेश्वरः॥

अर्थात् बुधवार के दिन विधिपूर्वक चौकोर भोजपत्र पर शंखावली, सिन्दूर, कपूर और गोरोचन को पान के रस में हरताल तथा गोदुग्ध डालकर स्याही बनाए। तदनन्तर यन्त्रों को लिखकर विधिवत् पूजा-साधना करे। बाद में यन्त्र

को भुजा अथवा कण्ठ में धारण करे। इससे मनुष्य इन्द्र के समान पराक्रम वाला बनता है।

कुंवारी कन्या के हाथ से काते गए सूत्र में नौ गांठें लगाएं और उसमें यन्त्र को बांधकर यदि स्त्री धारण करे तो उसका गर्भ स्थिर रहता है तथा दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होती है। यह सत्य है, ऐसा भगवान् शिव कहते हैं। अंक लिखने की विधि इस प्रकार है—

नाभिकमल में एक लिखि, दोय दक्षिण भुज धरिये।
तीन त्रिभुवन वाम भुज जाण, चार वेद कण्ठ परमाण ॥
छैई दर्शन शीश प्रकाश, सात अंक वाम कुच वास।
अष्ट अंक दक्षिण कुच धरणां, नोवां चरण बीस इम भरणां ॥
अग अंग में होवै बीस, पुत्र-पौत्र सुख-समृद्धि हमेस।
शुभमस्तु दीपदानं कृत्वा।

"ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रैं ह्रौं हः ह्रां ह्रूं ॐ गर्भस्तम्भनार्थं विन्ध्येश्वरी-कलंकरहितार्थं कुक्षिदोषनिवारणार्थं कुरु कुरु तुभ्यं नमः।" इतना बीच में लिखे तथा दीपदान भी करे।

(५) गुरुवार-प्रयोग—(आकर्षण)

गुरुवारे हरिद्रां च रोचनं नागरं घृतम्।
कस्तूरीं केतकीं चार्धं श्वेतचन्दनमर्द्दनम् ॥
यन्त्रराजं च संलिख्य मध्ये साध्याभिधां लिखेत्।
आसनाधः स्थापनेन ध्रुवमाकर्षणं भवेत् ॥

अर्थात् गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन, नागर मूथा, घृत तथा कस्तूरी और केवड़ा का आधा-आधा भाग एवं श्वेत चन्दन इन सभी को मिला कर स्याही बना ले। फिर उससे यन्त्रराज लिखे। बीच में साध्य-कार्य का उल्लेख करे तथा उसकी विधिवत् पूजा करके आसन के नीचे रखे तो निश्चित ही आकर्षण होता है।

अन्य प्रयोग—इस यन्त्र को भोजपत्र पर गुलाब की शाखा की कलम से लिखे और धूप-दीप पूर्वक पूजा करके यन्त्र धारण करे तो भी आकर्षण होता है।

अंक लिखने की विधि निम्नलिखित है—

देवदत्तकुं सुमिरिये कीजे फिर फिर जोग।
विधीवार जंतर लिखूं सिद्ध होय सब जोग॥
एक अंक चरणे लिखो, दक्षिण कुंख में दोय।
वाम कुचा में तीन लिखि, चार सीस पर होय॥
छैई कण्ठ षट् रस प्रमाण, सात लिखिये वाम भुज जाण।
अष्ट अंक दक्षिण भुज जोय, नाभि कमल में नौवां होय॥
अंग अंग गिण लेणा बीस, छेई कण्ठ मिले जगदीस।

इस यन्त्र बीच में "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्र ॐ **देवदत्त महावीराय नमः**" इतना लिखा जाता है।

(६) शुक्रवार-प्रयोग (सर्वसम्पत्ति तथा स्त्रीवशीकरण)

भृगुवारे च कर्पूरं वचाकुशमधुं लिखेत्।
लिखितं यन्त्रराज तु भोजपत्रे सुवर्णके॥
पूजयित्वा विधियुतं कण्ठे बाहौ च धारयेत्।
दृष्ट्वा स्त्रीवशमाप्नोति प्राणैरपि धनैरपि।
भूगोलं लिख्यते यन्त्रं भूमिभोगविलासनम्। (इत्यादि)

अर्थात् शुक्रवार के दिन कपूर, वचा, कुश अथवा कुट इन्हें मिला कर भोजपत्र-सुवर्णपत्र पर यन्त्र लिखकर विधिवत् पूजा करे और बाहु अथवा कण्ठ में धारण करे तो भूमि, भोग और विलास प्राप्त होते हैं। स्त्री इस यन्त्र के देखने मात्र से ही प्राण और धन सहित वश में हो जाती है। (इनके अतिरिक्त और भी बहुत से फल लिखे हैं जिनमें सुख-सम्पत्ति आदि हैं।)

अंक लिखने की विधि निम्निलिखित है ।

गुणी ज्ञान करि जंत्र लिखि, अष्टसिद्धि परकास ।
दक्षिण कुच में एक लिखि, दोय चरण की आस ।।
तीन अंक सीस त्रिपुरारी, वाम कुच में लिखिए चारी ।
वाम भुजा में छेई धरिये, सात कण्ठ वृद्धी सब करिये ।।
अष्ट अंक नाभी प्रसिद्ध, दक्षिण भुजा में नव निध ।।
अंग अंग गिण लेणा बीस, इन्द्र आय नवावे शीस ।

इस यन्त्र में "ॐ ह्रौं श्रीं ह्रँ क्लीं ह्रीं ह्रः ह्रां ह्रूं ॐ **महादेवाय नमः इन्द्र आकर्षणं भवेत्**" इतना लिखना चाहिए।

(७) **शनिवार-प्रयोग** (लक्ष्मीप्राप्ति एवं कामनासिद्धि)

शनिवारे शुद्धचित्तः सुवर्णे भोजपत्रके ।
लिखत्वाऽष्टविंशानि श्रीवृक्षस्य मूलकम् ।।
केशरं नागकस्तूरी मुण्डी कोई जलं तथा ।
मोथामधु कज्जलं च अष्टसिद्धिप्रदायकम् ।। (इत्यादि)

अर्थात् शनिवार के दिन शुद्ध चित्त से सुवर्णपत्र अथवा भोज पत्र पर विल्व वृक्ष की जड़, केशर, नागकेशर, मुण्डी, कोई, जल, मोथा, मधु और कज्जल इन सबको मिलाकर उससे अठ्ठाईस यन्त्र लिखे तथा उसकी अन्य विधि करके धारण करे तो लक्ष्मीप्राप्ति तथा कामनासिद्धि होती है।

अंक भरने की विधि---

वाम कुचा में एक लिख, दोय सीस पर होय ।
तीन अंक लिख चरण में, चार दक्षिण कुच होय ।।

दक्षिण भुजा में छेई लिख, नाभि कमल में सात ।
अष्ट अंक लिख कण्ठ में, वाम भुजा नव नाथ ।।
अंग अंग गिण लेणां बीस, सब भण्डार भरे जगदीस ।।

यहां यन्त्र में—"ॐ ह्लः क्लीं ह्लौं श्रीं ह्लैं ह्लीं ह्लां ह्लूं ॐ कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे। **गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि** ॐ ह्लः ह्लः ह्लौं ह्लैं ह्लं ह्लीं ह्लां क्लीं ॐ महालक्ष्मी देव्यै नमः" इतना लिखना चाहिए।

(८) सर्वसिद्धिकर हरसिद्धि बीसायंत्र

गोरोचनं च मन्दारं कदलीरसमेव च।
नागवल्लि च कर्पूरं मधुना सह मर्द्दयेत् ॥
वचालेखन्या च यन्त्रस्य लेखनं सर्वसिद्धिदम्।
हवनं मन्त्रशीर्षेण हरसिद्धेस्तु यन्त्रकम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत् ॥

अर्थात् गोरोचन, मदार, कदली, नागरबेल और कपूर का रस, इन सबको शहद में मिला कर स्याही बनाए तथा वचा की कलम से यन्त्र लिखे। इस यन्त्र की सिद्धि के लिए यन्त्र में लिखे हुए मन्त्र का हवन करे। यह हरसिद्धि का यंत्र सब सिद्धि देनेवाला है। गुप्त रखे और योग्य व्यक्ति को ही दे। इस यंत्र में अंक भरने की विधि इस प्रकार है—

एक सीस पर अंक लिख, वाम कुचा में दोय।
दक्षिण कुच में तीन लिख, चार चरण में होय ॥
नाभि-कमल में छै लिख, सात दक्षिण भुज जोय ॥
अष्ट अंक भुज वाम में, नौवा कण्ठ सर्वसिद्ध होय ॥

इसके बीच में—"ॐ ह्लः ह्लीं ह्लैं ह्लूं ह्लीं ह्लां श्रीं क्लीं अष्टसिद्धिकरं दत्त्वा चक्रपाणिर्नरो भवेत्। सर्वसिद्धिकरं यन्त्रं विशांकचरणोदकम् ॥ ॐ हरसिद्धये नमः ॥" यह मन्त्र लिखना चाहिए।

विशेष—जिस प्रकार पञ्चदशी-यन्त्र के लिए अनेक प्रयोगों का विधान पहले बतलाया गया है वैसा ही इस बीसा यन्त्र का भी समझना चाहिए।

बीसा-यन्त्र के लिए अन्य ज्ञातव्य

जिस प्रकार पन्द्रह के अंकयंत्र अनेक प्रकार के हैं और उनके विधान भी अनेक प्रकार के प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार 'बीसा यन्त्र' भी अत्यन्त व्यापक रूप में प्रसिद्ध होने के कारण अनेक रूपों में मिलता है और इसके विधान भी अलग-अलग मिलते हैं।

जैनाचार्यों द्वारा "बीसा-यन्त्र" का विधान एक स्वतन्त्र कल्प के रूप में बनाया गया है जिसे 'अर्जुन-पताका" नामक ग्रंथ में मुद्रित किया है। उसमें इस यन्त्र के लिए यह पद्य दिया है—

दश-दिव्याष्टचतु: सप्तनवषड्वेषव: शिव: ।
त्रयं चेत्यङ्कराजी स्यात् सा कस्माद् विंशयन्त्रके ॥ ६ ॥

इसके अनुसार क्रमशः १०, २, ८, ४, ७, ९, ६ और ५ और ३ इन नौ अंकों से बीसायन्त्र बनता है।

इसकी एक और विशेषता यह है कि यन्त्र लेखन में अंक लिखने के स्थानों की दृष्टि से शकुन और ग्रहों के फलों को लक्ष्य माना है। वहां कहा गया है—

एवं शकुनखेटानां स्थानाद् विंशतियन्त्रकम् ।
निश्चितं 'मेघविजय' श्रिया विभववृद्धिदम् ॥ २१ ॥

इसके अतिरिक्त वहीं बीसा यन्त्र के विस्तार की दृष्टि से गतियों के क्रम और रचना-व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला है। इस प्रकार यह ग्रंथ भी इस दिशा में एक अभिनव चिन्तन है, जिसकी ओर विद्वान् ध्यान देकर अपने ज्ञान और साधना को विकसित और उज्ज्वल बना सकते हैं।

हमारे पास प्राचीन पाण्डुलिपियों में कुछं और भी ऐसे प्रकार तथा प्रयोगों के संग्रह हैं, किन्तु विस्तार अधिक हो जाने से यहीं विराम करते हैं।

× × ×

बीसा-यन्त्र और अन्य साधनाएं

जिस प्रकार पञ्चदशी यन्त्र के अंकों को आधार बनाकर अन्य देवी-देवताओं की साधनाएं की जाती हैं, उसी प्रकार बीसा यन्त्र को भी माध्यम बनाकर अन्य साधनाएं करने का विधान है। उनमें से कुछ पहले दिये हैं और कुछ का उल्लेख आवश्यक समझकर यहाँ किया जा रहा है—

१. बाला त्रिपुरा बीसा यन्त्र (पहला)

ॐ	ऐं ५
क्लीं ९	सौः ६

यह यन्त्र आम के पट्टे पर अनार की कलम से गुलाल या कुंकुम पर एक साथ तीन-तीन यन्त्र लिखे और '**ॐ ऐं क्लीं सौः नमः**' इस मन्त्र का जप करता रहे। १०८ बार यन्त्र लिखने से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है।

इस यन्त्र की साधना करने से पूर्व नीचे बताए अनुसार विनियोग, न्यास, ध्यान आदि भी करने से शीघ्र सफलता मिलती है; परन्तु किसी गुरु से दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए।

विनियोग—अस्य श्रीबालात्रिपुरामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीदेवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं मम विंशांकयन्त्र-सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः (शिरसि), पंक्तिच्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीबालात्रिपुरादेवतायै नमः (हृदये), ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर हृदयादि षडंगन्यासः—

ऐं (अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः), **क्लीं** (तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा)

सौः (मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट्), ऐं (अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम्), **क्लीं** (कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्), **सौः** (करतलकर०, अस्त्राय फट्) ।

ध्यानम्—

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसां, समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ।
विद्याक्षमालाऽभयदानहस्तां, ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥

इस प्रकार ध्यान करके मूल मन्त्र का जप करें और यन्त्र लिखें ।

२. बाला त्रिपुरा का लक्ष्मीप्रद बीसा यन्त्र (दूसरा)

यह यन्त्र चांदी के पतरे पर शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठित करके प्रतिदिन विधिवत् इसकी पूजा करे और '**ॐ ऐं क्लीं सौः महालक्ष्म्यै नमः**' इस मन्त्र का १०८ बार जप करे । इससे लक्ष्मी प्राप्त होती है । यन्त्र इस प्रकार है—

इस यन्त्र की पूजा के समय महालक्ष्मी का ध्यान करना चाहिए ।

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे,
पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले,
त्वत्पादपद्मं मयि संनिधत्स्व ॥[1]
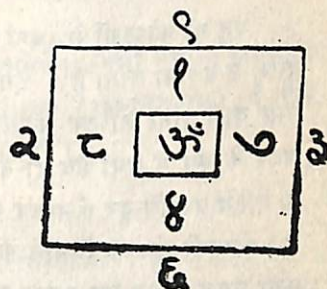
३-४. बालात्रिपुरसुन्दरी-बीसा-यन्त्र

नीचे बताये गये दोनों यन्त्र श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी के हैं । इन यन्त्रों की साधना का प्रकार ऊपर बताये अनुसार ही है । विशेष यह है कि इन यन्त्रों

---

१. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इन यन्त्रों को चांदी के पतरे पर बनाकर इनकी प्रतिष्ठा की जाए तथा बाद में प्रतिदिन गोदुग्ध से श्रीसूक्त के पाठ द्वारा अभिषेक करने का भी विधान है ।

के चारों ओर क्रमशः ॐ ऐं क्लीं सौः, मन्त्र का एक-एक अक्षर चारों दिशा में लिखना चाहिए।
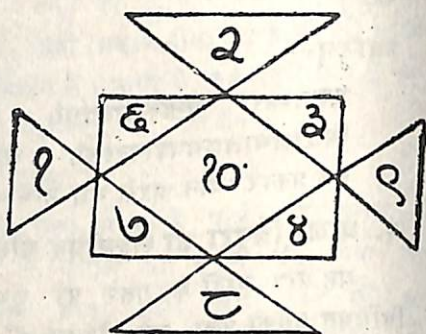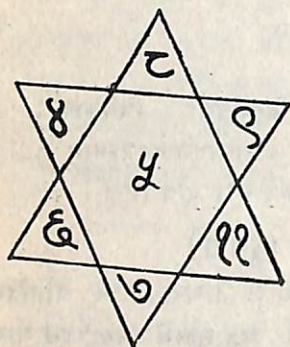
नवार्ण बीसा यन्त्र--(शरीराकार, नौ कोष्ठक, एवं नौ अंक)

यह नौ कोष्ठकों से बना हुआ बालायन्त्र ४ के समान दुर्गा के शरीर की दृष्टि से बनाया जाता है। इसमें बीच वाला कोष्ठक मुख का सूचक है, आस-पास वाले दोनों कोष्ठक भुजाओं के प्रतीक हैं। बीच का भाग वक्षःस्थल और उदर के रूप में तथा शेष दो नीचे के कोष्ठक दोनों चरणों के प्रतीक हैं। आम के पटिये पर सिन्दूर फैलाकर अनार की लेखनी से यह यन्त्र लिखा जा सकता है। पंचदशी यंत्र के विधान के समान ही इसका विधान करने से भगवती की कृपा प्राप्त होकर सब प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त होती है।

दुर्गा सप्तशती में प्रदर्शित 'नवार्णमन्त्र जपविधि' का प्रयोग इस यंत्र के लेखन के पश्चात् पूजा करके मन्त्रजप के समय करना चाहिए। यथा—

अथ नवार्णमन्त्रजपविधिः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुपश्छन्दांसि श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताः, ऐं बीजं

ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासाः—

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः (शिरसि), गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः (मुखे), महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः (हृदये), ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), ह्रीं शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

करहृदयादिन्यासाः—

ऐं (अंगु० हृदयाय०), **ह्रीं** (तर्जनी० शिरसे०), **क्लीं** (मध्यमा० शिखायै०), **चामुण्डायै** (अनामिका० कवचाय०), **विच्चे** (कनिष्ठिका० नेत्र०), **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** (करतल० अस्त्राय०)।

अक्षरन्यासः—

ऐं नमः (शिखायाम्)। ह्रीं नमः (दक्षनेत्रे), क्लीं नमः (वामनेत्रे), चां नमः (दक्षकर्णे) मुं नमः (वामकर्णे), डां नमः (दक्षनासायाम्), यै नमः (वामनासायाम्), वि नमः (मुखे), च्चे नमः (गुह्ये)।

दिशान्यासः—

ऐं प्राच्यै नमः। ऐं आग्नेय्यै नमः। ह्रीं दक्षिणायै नमः। ह्रीं नैऋत्यै नमः। क्लीं प्रतीच्यै नमः। क्लीं वायव्यै नमः। चामुण्डायै उदीच्यै नमः। चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।[1]

---

१. उपर्युक्त सभी न्यासों में नवार्णमन्त्र के साथ ॐ भी लगाया जाता है और कहीं इसका निषेध भी है। अतः जैसा मन्त्रोपदेश हो वैसा प्रयोग करें।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषु चापपारिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥
अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलज घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदत्यार्दिनीम् ॥ २ ॥

फिर 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।

ॐ अक्षमालाधिपते सुसिद्धिं देहि-देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

इसके बाद 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मन्त्र का १०८ बार जप करे और जप पूरा होने के पश्चात्—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इस श्लोक का पाठ करके यन्त्र के वामभाग में जप निवेदन करे।

इन्द्राक्षी बीसा यन्त्र

इन्द्राक्षी देवी की आकृति बनाकर उसमें नीचे लिखे अनुसार अङ्क भरें और भक्तिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करके धारण करें। इससे सब कार्य सिद्ध होते हैं। इस यन्त्र का मन्त्र इस प्रकार है—

पच बीज पुरुषाकारा। नवकोष्ठक गिन लो नव वारा॥
जहां घरमांहि होय सुबीसा। ताकी सहाय करे जगदीशा॥
सकल विघ्न क्षण में विनसावे। बिन उद्यम कमला चलि आवे॥
राज पंच में इज्जत पावे। वांझ कामिनी पुत्र खिलावे॥

अन्य बीसा-यन्त्र के कुछ प्रकार

(१)

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

(२)

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

१०
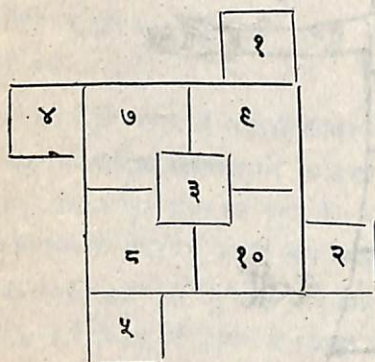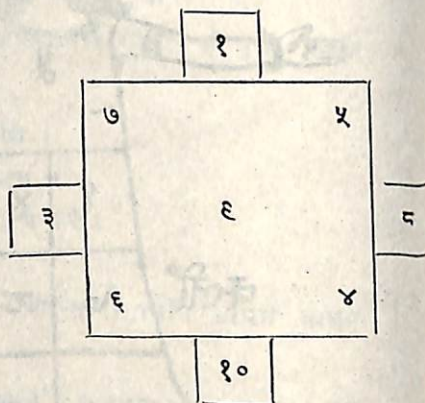
विविध रोग-नाशक यन्त्र

मनुष्य यदि बाहरी ढंग से स्वस्थ हो किन्तु शरीर में कुछ न कुछ रोग बना रहे तो उसका किसी भी कार्य में मन नहीं लगता। चित्त सरा अशान्त रहता है और द्रव्य भी व्यर्थ में बहुत खर्च होता रहता है। रोग दो प्रकार के होते हैं: १—जो रोग कुछ समय के लिए आता है और दवा लेने पर चला आता है और २—जो राजरोग की तरह शरीर में घर कर लेता है। जीवन भर साथ चलता है और कभी-कभी वंश-परम्परा में भी बढ़ता रहता है। इसी प्रकार इनमें कुछ रोग ऐसे होते हैं जिनका उपचार अन्य रोगों को भी जन्म दे देता है। अतः शास्त्रकारों ने इन रोगों से छुटकारा पाने के लिए कुछ यन्त्र बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

(१) प्रमेह (डायबिटी) नाशक यन्त्र

७०	:	७	७७
प्पी	G	७	७
य	७	G:	जप.
प्र	C-	८	९

भोज-पत्र पर लिखकर यह यन्त्र, विधिवत् प्रतिष्ठित करके चांदी के ताबीज में रखें और धारण करें। इससे प्रमेह (शुगर की बीमारी) अवश्य नष्ट होती है।

(२) आंव रोग-नाशक यन्त्र

६४	६	४	[illegible]
७	४	३S	[illegible]
	६॥	०॥	।W
।६	९०१	४८	॥६

यह यन्त्र ताम्बे के पात्र में हींग के रस से लिखकर विधिवत् इसकी पूजा करे और फिर धोकर रोगी को वह पानी पिलाये। इससे आंव-रोग नष्ट होता है। यह प्रयोग ७ दिन तक करना चाहिए।

(३) नाभि-स्थिरीकरण-यन्त्र—

हाजमे की खराबी अथवा चलते-फिरते ऊंचे नीचे स्थान पर पैर पड़ जाने से या भूखे पेट भारी वजन उठाने से नाभि अपने स्थान से खिसक जाती है और पेट में भयंकर दर्द होने लगता है। ऐसी स्थिति में नीचे लिखा हुआ यन्त्र लिखकर नाभि पर रखना चाहिए अथवा कमर में नाभि के पास बांध देना चाहिए। इससे नाभि ठिकाने पर आ जाती है। विशेष यह है कि यह यन्त्र लिखते समय ११५ की संख्या से आरम्भ होना चाहिए तथा अन्त में १२४ के अंक वाला कोष्ठक लिखना चाहिए। इस विधि से लिखकर आखिरी कोष्ठक में रेखा द्वारा इसे बन्द न करें। साथ ही यह यन्त्र लिखते समय बेरजा की धूप देवें। यन्त्र इस प्रकार है—

---

१. इन सभी यन्त्रों की सिद्धि के लिए जो सामान्य-विधान हमने 'यन्त्र-शक्ति' प्रथम भाग में दिया है, उसी के अनुसार करें। जहां कोई नवीन व्यवस्था अथवा सूचना होगी, वहां उसका निर्देश दिया गया है।

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११०	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१३६
१३६	१४०	१२४	११८	१४१	१४२	१४३
१४७	१२३	१४५	१२६	११६	१४६	१४७
१२२	१४८	१४६	११८	१५०	१२०	१२१

(४) नाभि-स्थापन का द्वितीय यन्त्र

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

यह यन्त्र जिस व्यक्ति की नाभि खिसक गई हो उसको सीधा लिटा कर नाभि पर अंगुली से ५ बार लिखें और फूंक मारें। रविपुष्य को भोजपत्र पर लिखकर रख लें तथा जब आवश्यकता हो तब रोगी की कमर में नाभि के पास बांधें। यन्त्रलेखक पहले इसे ग्रहण में लिखकर सिद्ध कर ले। यह चौंतीसा यन्त्र है। इसके और भी प्रयोग प्राप्त होते हैं जिन्हें हमने अन्यत्र

दिखाया है। इस यन्त्र के चारों ओर ऊपर क्रमशः 'श्रीरामचन्द्राज्ञा, श्रीलक्ष्मणाज्ञा, श्रीसीतामातुराज्ञा, श्रीहनुमदाज्ञा' में एक-एक पद लिखें।

(५) दृष्टिदोष (नजर) विनाशक यन्त्र

१५	२१	२७	१
२५	३	१३	२३
५	३१	१७	११
१९	९	७	२९

प्रायः बालकों को और कभी-कभी बड़ी आयु के स्त्री-पुरुषों को भी नजर लग जाती है और उससे खाने-पीने और कार्य करने में बाधा होती है। बेचैनी रहती है तथा अन्दर कष्ट होता रहता है। इससे मुक्ति पाने के लिए यह यन्त्र धारण करायें—यह ६४ अंक योग वाला यन्त्र है। इसे सिद्ध कर लेने से और भी अनेक कार्य सिद्ध होते हैं।

(६) बालक का रोना बन्द करने वाला यन्त्र—

१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥

छोटे बच्चों को अनेक प्रकार के कष्ट रहते हैं और बोल न सकने के कारण बहुत रोने लगते हैं। माता भी उसका कारण न समझ कर विकल हो जाती है। ऐसी स्थिति में इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर धूप देवें और बालक के गले में बांध दें। वह रोना बन्द करके खेलने लगेगा। यह ५० की संख्या का यन्त्र है।

(७) बांला (नारू) जलकीट-नाशक यन्त्र

अस्वच्छ जल पीने से अथवा कीड़े वाले पानी के पीने से शरीर में (प्रायः पैरों में) यह जलकीट बढ़ता रहता है। बड़ा होने पर चमड़ी फोड़कर बाहर

निकलता है तथा बड़ा कष्ट देता है। यह आकार में बहुत पतला सूत (डोरे) जैसा होता है और कभी कभी तो यह कई स्थानों पर एक साथ निकल जाता है। इस में रोगी को बहुत कष्ट होता है। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर रोगी के गले में बांधना चाहिए।

७६	६२	२	७
६	३	६०	६७
६१	७७	८	१
४	५	४	७

(८) शीघ्र प्रसव होने का यन्त्र

प्रायः गर्भ में बालक के बढ़ने पर रहन-सहन की अव्यवस्था अथवा शारीरिक दुर्बलता के कारण जब प्रसव का समय होता है तो गर्भवती स्त्री को बड़ा कष्ट होता है। ऐसे समय में शल्य क्रिया (ऑपरेशन) से अनेक नए उपद्रव खड़े होने का डर रहता है। अतः ऐसे समय इस यन्त्र को कांसे के पात्र में अष्ट-गन्ध से लिखकर कष्ट वाली स्त्री को यन्त्र धोकर पिलायें। शीघ्र सुखपूर्वक प्रसव हो जाएगा।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१३

(९) उदर शूल निवारण-यन्त्र

पेट में शूल चलकर दर्द होने पर कांसे की थाली में यह यन्त्र अष्टगन्ध से लिखकर उसमें पानी डाले और यन्त्र को धोकर पिलाये। शूल मिट जाएगा।

३	५	१	६	५	५	६	३
७	४	५	४	३	६	६	९
५	१	१	३	१	१	७	७
३	४	१	२	२	२	८	८
९	८	६	७	१३	११	३४	१७
१०	१०	७	३	१९	२०	७०	११
५५	५५	४	८	८	५०	१३	११
७७	७७	९	४	७	५०	६५	४०

(१०) बवासीर (पाइल्स) नाशक यन्त्र

यह यन्त्र भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर ताम्बे के ताबीज में रखें और धूप देकर गले में धारण करें। इससे खूनी अथवा बादी जैसा भी हरस मसा हो, नष्ट हो जाता है।

७	३७ ७०	५३	त इ
त न	१७	१२	ट ९
७	७१ १	त २	त १
म त	१ त	०	११

(११) मृगी रोग नाशक यन्त्र

मृगी रोग वाले व्यक्ति को अचानक मूर्छा आ जाती है। मुंह में झाग आने लगते हैं। यह रोग किसी भी समय किसी भी स्थान पर अपना प्रभाव दिखा देता है। अतः इस प्रकार के रोगी के गले में यह यन्त्र अष्टगन्ध से मृगचर्म पर लिख कर बांधें। रोग शान्त होगा।

1	४	३	1	६	६	४	
४	२	11	१	१	३	१	४
६	1४	1	1	1५	३०	1	४
२	२	11	11६१	५1	1१८	४	

(१२) शीघ्र प्रसव के लिए यन्त्र एवं प्रयोग

'यन्त्र प्रकाश' नामक ग्रंथ में लिखा है कि—

गजाग्निवेदा उडुराट् शराङ्का रसर्षिपक्षा इति हि क्रमेण ।
लिखेत्प्रसूतेः समये गृहे वँ सुखेन नार्यः प्रसवन्ति शीघ्रम् ॥

इसके अनुसार नीचे लिखे पञ्चदशी यंत्र को किसी पात्र में चन्दन से लिखकर पानी मिलाकर पिलायें। इससे शीघ्र प्रसव होगा।

(१३) अन्य प्रयोग

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इसके अतिरिक्त नीचे लिखे हुए मन्त्र को बोलते हुए ३१ दूर्वांकुरों से थोड़ा सा तिल्ली का तेल अभिमन्त्रित करे। फिर दूब से दक्षिणावर्त क्रम से तेल को कटोरी में घुमाते हुए १०८ बार मन्त्र जप करके कुछ बूंदें प्रसविनी स्त्री को पिलाये। इससे भी शीघ्र प्रसव होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शबरी नाम यक्षिणी।
तस्या नूपूरशब्देन विशल्या स्यात्तु गर्भिणी ॥ (स्वाहा)

(१४) कष्टनिवारक बत्तीसा यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

यह 'सर्वतोभद्र' यन्त्र है। इसे रविवार के दिन पूर्व की ओर मुख करके हल्दी के चन्दन से, अनार की लेखनी द्वारा भोजपत्र पर लिखे। फिर पन्त्र की विधिवत् पूजा करके एक स्वयं धारण करे और एक अन्य यन्त्र पर बीच में घी की बत्ती जलाये। फिर हल्दी की माला से ११०० मन्त्र 'ॐ ह्रीं हंसः' का जप करे। यह प्रयोग ११ दिन तक करना चाहिए। इससे सूर्यदेव प्रसन्न होकर सभी.कष्टों का निवारण करते हैं तथा सभी कार्य सफल करते हैं।

(१५) स्वास्थ्यवर्धक तथा लक्ष्मी-प्रदायक चौंतीसा यन्त्र

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

इस यन्त्र को दाड़िम की लेखिनी से केसर द्वारा रविपुष्य के दिन अथवा गुरुपुष्य को भोजपत्र पर लिख कर दूकान या घर में रखे और नित्य पूजा करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसे लिखकर धारण करने से शरीर स्वस्थ बना रहता है तथा कान्ति बढ़ती है।

११

विविध कार्य-साधक अंक-यन्त्र

१ सर्व सुख प्राप्ति कर पैंसठिए यन्त्र की स्थापना

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस पैंसठिए यन्त्र का जो स्तोत्र आठ श्लोक[1] का बताया है उसका पाठ करते हुए जिन-जिन तीर्थंकर का नाम आये उनकी संख्या का अंक लिखने से पैंसठिया यंत्र तैयार हो जाता है, इस यन्त्र का माहात्म्य भी बहुत है।

इस यन्त्र को बताये गये यंत्र के विधानानुसार ही तैयार करना चाहिए। जिस घर में ऐसे यन्त्र की स्थापना-पूजा हुआ करती है, उस घर में आनन्दमंगल रहा करता है। जो मनुष्य इस यंत्र की आराधना करते हैं उनको प्रत्येक प्रकार के सुख मिलते हैं और

---

१. यह स्तोत्र 'पंचषष्टि यन्त्रगर्भित—चतुर्विंशति जिनस्तोत्र' के नाम से जयतिलक सूरि के शिष्य 'शिवनिधान' ने बनाया है। इसमें 'आदौ नेमिजिनं नौमि' से आरम्भ करके ५ पद्यों में २४ तीर्थंकरों के नाम हैं तथा २ पद्यों में स्तोत्र का प्रभाव और अन्तिम पद्य में कर्ता के गुरु का नाम दिया है। यह ७२ प्रकार के समान योग ६५ देने से 'महासर्वतोभद्रयन्त्र' कहलाता है।

जिस मकान में स्थापना की हो वहां भूत, प्रेत, पिशाच का भय नहीं होता, हुआ हो तो नष्ट हो जाता है। इस यन्त्र का जितना आदर करेंगे उतना ही अधिक सुख पा सकेंगे। इस यंत्र को अपने पास रखना हो तो भोजपत्र पर तैयार करके रखना चाहिए। ऐसे यन्त्र शुद्ध अष्टगन्ध से लिखने से लाभ देते हैं।

(२) लक्ष्मी प्रदानकारी अड़सठिया यन्त्र

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

यह अड़सठिया यन्त्र बहुत प्रसिद्ध है, कई लोग दीवाली के दिन शुभ समय दुकान में मंगल स्थान पर लिखते हैं, इस यंत्र में यह खूबी है कि किसी भी ओर से चार कोष्ठकों के अंक गिनने से अड़सठ का योग आता है, ऊंचे। नीचे, आड़े, टेढ़े किसी तरह से चार कोठे का योग देख लो बराबर अड़सठ का योग आ जाएगा। इस यंत्र को लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु चमेली की कलम लेकर अष्टगंध से लिखना चाहिए और समेट कर रेशमी सूत से लपेट कर अपने पास रखें और व्यापार करते समय यंत्र को पास में रखकर ही कार्य करना चाहिए। व्यापार सत्यनिष्ठा व ईमानदारी और न्याय से फलते हैं। इष्टदेव के स्मरण-ध्यान को नहीं भूलना चाहिए।

(३) नित्य लाभदाता बहत्तरिया यंत्र

२५	२०	२७
२६	२४	२२
२१	२८	२३

इस बहत्तरिया यंत्र के लिए कई मनुष्य खोज करते रहते हैं, यंत्र का मिल जाना तो सहज बात है, परन्तु विधान का मिलना कठिन बात है। इस यंत्र को सिद्ध करते समय जहां तक हो सके सिद्धपुरुष की संनिधि में कर्म करना चाहिए, और सिद्धपुरुष का योग नहीं मिल सके तो किसी यंत्र के जानकार

की निकटता में करना चाहिए। शुभ दिन देखकर शरीर वस्त्र की शुद्धता का उपयोग कर अधिष्ठायक देव का सांनिध्य समझ कर प्रातःकाल से ढाई घड़ी कच्ची दिन चढ़े पहले अष्टगंध से कागज पर बहत्तर यंत्र लिखना चाहिए। कलम जैसी अनुकूल आवे चमेली की या सोने के निब से लिखे। जब यन्त्र लिखने बैठे तब पूर्व दिशा की ओर मुख रहना चाहिए, आसन सफेद लेना उत्तम बताया है, लिखते समय मौन रहकर यंत्र लिखने के विधान को पूरा कर लेवें। जब यंत्र लेखन पूरा हो जाए तब यंत्र को एक स्वच्छ पटिये पर स्थापन कर अगरबत्ती लगा दे, दीपक स्थापना करे और ढाई घड़ी दिन बाकी रहे तब अर्थात् सूर्यास्त से ढाई घड़ी पहले लिखे हुए यंत्रों को औंधे रखकर पानी से धोकर कागज सहित जलाशय में डाल दे, यह सब क्रिया समय पर ही करने का पूरा ध्यान रखे। एक विधान ऐसा भी है कि बहत्तर यंत्र अलग-अलग कागज पर लिखना चाहिए और कोई एक कागज पर लिखना बताते हैं। जैसा जिसको ठीक मालूम हो सुविधा के अनुसार लिखे। इस प्रकार से बहत्तर दिन तक ऐसी क्रिया करनी चाहिए, और बहत्तर दिन तक ब्रह्मचर्य पालन, सत्यनिष्ठा से रहना और कुछ तपस्या भी करे जिससे क्रिया फलवती होगी। इस प्रकार से बहत्तर दिन पूरे हो जाएं और तिहतरवें दिन प्रातःकाल ही बहत्तर यंत्र लिखकर एक डिब्बी में रख ले। यंत्र को पूजा कर धूप-दीप रखना, कुछ भेंट भी रखना और दिन रात अखण्ड जोत रखकर प्रातःकाल में डिब्बी लेकर दुकान में, गले में, तिजोरी में या ताक में रखकर नित्य पूजा कर नमस्कार कर लिया करे। इस तरह करते रहने से धन की आय और इज्जत मान-सम्मान की वृद्धि होगी, सुख-सौभाग्य बढ़ता रहेगा। इष्टदेव का स्मरण, सत्यनिष्ठा तथा धर्मनीति को नहीं छोड़ना चाहिए।

(४) सर्प-भयहर अस्सीया यन्त्र

इस यन्त्र को एक से लेकर आठ तक और बत्तीस से लेकर उन्चालीस तक के अंक में पूरा किया है। इस यन्त्र के बनाने में यह विशेषता है कि ऊपर-नीचे या आड़े-टेढ़े चाहे किसी ओर से चार कोठे के अंक गिनने से योग बराबर अस्सी

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

का आता है। इस यन्त्र को विशेष करके सर्प के उपद्रव में काम में लेते हैं। जब सर्प का भय उत्पन्न हुआ हो अथवा मकान में बराबर निकलता हो, अथवा घर नहीं छोड़ता हो तो अस्सीया यन्त्र सिन्दूर से मकान की दीवार पर लिखे, और जहां तक हो ऐसी जगह लिखना चाहिए कि जहां सर्प की दृष्टि यन्त्र पर पड़ जाय, अथवा कांसी की थाली में लिखा हुआ तैयार रखे और सर्प निकले तब उसे थाली बता दे तो सर्प भय मिट जाएगा, और उपद्रव नहीं करेगा। विधान तो बताता है कि सर्प उस मकान को छोड़कर ही चला जाएगा; किन्तु समय का फेर हो और इतना फल नहीं दे तो भी उपद्रव – भय तो नहीं रहेगा, और ऐसे समय घर में सर्पहरणी नाम की औषधि जो कश्मीर में वहुतायत से मिलती है—मंगवा कर घर में रखने से सर्प भाग निकलेगा। लेकिन सर्प को मारने की बुद्धि नहीं रखना चाहिए। सर्प को सताने से वह क्रोध कर के काटता है, वह समझता है कि ये मुझे मारते हैं। सताया न जाए तो वह अपने आप चला जाता है।

(५) भूत-प्रेत भयहर पिच्यासिया यन्त्र

३४	४२	२	७
६	३	३९	३९
४१	३५	८	१
४	५	३६	४०

अक्सर जब मकान में कोई नहीं रहता हो, और बहुत लम्बे समय तक बेकार-सा पड़ा हो तो ऐसे मकान में भूत-प्रेत अपना स्थान बना लेते हैं। भूत-प्रेत नही भी वसते हों और मकान में रहने लगे उसके बाद कुछ अनिष्ट हो जाय और कुछ दिन बाद फिर हो जाए तो उस मकान के लिए भ्रम सा हो जाता है, और मकान को खाली कर देते हैं। लोकवाणी फैल

जाती है. और ऐसे मकान में कोई बिना किराये भी रहने को तैयार नहीं होता। ऐसी अवस्था में इस यन्त्र को यक्षकर्दम से मकान की दीवार पर अंदर के भाग में लिखे और आवश्यकता हो तो प्रति मकान में लिखना भी बुरा नहीं है। यन्त्र लिखने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे कि 'हे देव स्वस्थानं गच्छ' इस तरह करने से उपद्रव शांत हो जाएगा और सुख पूर्वक मकान में रह सकेंगे। देव धूप-दीप से प्रसन्न होते हैं, और प्रार्थना स्वीकार करते हैं, इसलिए इक्कीस दिन तक सायंकाल में एक घी का दीपक कर धूप कर देना चाहिए। स्वच्छता, पवित्रता, दीपक का प्रकाश एवं हनुमान जी के चित्र के रहने से मकान में प्रेत नहीं रहते हैं।

(६) सुख-शान्तिदाता इक्काणवे का यन्त्र

३७	४५	२	७
६	४२	४२	४०
४४	३८	८	१
४	५	३६	४३

कभी-कभी ऐसा भ्रम हो जाता है कि इस मकान में आने के बाद बीमारी नहीं निकलती या घर के लोग सुख से नहीं रह पाते, कोई न कोई आपत्ति आ ही जाती है। इस तरह के कारण से उस मकान को छोड़ने की भावना हो जाती है। ऐसा प्रसंग आ जाए तो इस यन्त्र को यक्षकर्दम से मकान के अन्दर व दरवाजे के बाहरी भाग पर शुभ दिन में लिखना चाहिए और सायंकाल को धूप देकर प्रार्थना करना चाहिए कि "हे यंत्राधिष्ठायकदेव सुखशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा" इस तरह से इक्कीस दिन तक करने से सुख-शान्ति रहेगी और बहम मिट जाएगा।

(७) गृह क्लेशहर निन्याणवे का यंत्र

३६	२६	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

गृहस्थी के घर संसार में व्यवसाय के लिए अथवा विशेष कुटुम्ब के कारण या यों कह दीजिए कि स्त्रियों के स्वभाव के कारण जरा सी बात पर मनमुटाव हो जाता है, और उसे न संभाला जाये तो घर में क्लेश बढ़ जाता है। जिस घर में इस

तरह के क्लेश होते हैं उनकी आजीविका कम हो जाती है और व्यवहार में शोभा भी कम हो जाती है। बाहर के दुश्मन से मनुष्य सचेत रह सकता है, किन्तु घर का दुश्मन खड़ा हो तो आपत्ति रूप हो जाता है। धन, वैभव, मकान मिलकियत, बही, दस्ता, खत, खतूत, सबूत जिसके हाथ आई वह दबा देता है और ऐसी अवस्था हो जाने से घर की आबरू कम हो जाती है। इस तरह की परिस्थिति हो तब इस यंत्र को यक्षकर्दम से मकान के अन्दर और खासकर पनिहारे पर और चूल्हे के पास वाली दीवार पर लिखे और अगरबत्ती या धूप सायंकाल को कर दिया करे। इस तरह से इक्कीस दिन तक करे और बाद में आपस में फैसला करने बैठें तो कार्य निवट जायेगा। साथ ही स्मरण रखना चाहिए कि न्याय-नीति और कर्तव्य पूर्वक कार्य करें तो सफलता मिलेगी। घर की बात को बाहर नहीं फैलाना चाहिए। इसी में शोभा है और इज्जत की रक्षा है।

(८) पुत्र-प्राप्ति और गर्भरक्षाकर सौ अंक का यन्त्र

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

यह सौ का यन्त्र है और इसको आशा पूर्ण यन्त्र भी कहते हैं—जिसके सन्तान नहीं होती हो या गर्भ स्थिति के बाद पूर्णकाल में प्रसव न होकर पहले ही गिर जाता हो तो यह यन्त्र काम देता है। इस यन्त्र को षड्गन्ध से लिखना चाहिए, षड्गन्ध बनाने में (१) केसर (२) कपूर (३) गोरोचन (४) सिंदूर (५) हींगलु और (६) खैरसा—इन सबको बराबर लेना, परन्तु केसर विशेष डालना जिससे लिखने जैसा गन्ध रस तैयार हो जाएगा। इतना कार्य शुद्धता पूर्वक करके भोजपत्र पर दीवाली के दिन मध्यरात्रि में तैयार कर स्त्री के गले में या हाथ पर जहां ठीक मालूम हो बांध देवें। पुत्र के इच्छुक हों तो पति-पत्नी दोनों को वांधें। वैसे कर्म तो प्रधान हैं, जैसे कर्म उपार्जित किए होंगे वैसा ही फल मिलेगा; परन्तु उद्यम उपाय भी आप्त पुरुषों के

बताये हुए हैं। करने में हानि तो है नहीं। अपने इष्टदेव का स्मरण करते रहना, पुण्य प्राप्त करना, धर्म उपार्जन करना, क्रिया फल देगी। स्त्री गर्भ-धारण करेगी, पूर्णकाल में प्रसव होगा। अपूर्ण समय में गर्भपात नहीं होगा। ऐसा इस यन्त्र का प्रभाव है। श्रद्धा, विश्वास रखने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। दान, पुण्य, धर्म, साधन, नीति-व्यवहार से आशा फलती है।

(९) ज्वरपीडाहर एक सौ पांच अंक का यंत्र

५६	७	४२
२१	३५	४९
२८	६३	१४

यह 'एक सौ पांचिया यन्त्र' ताव, एकान्तरा, तिजारी को रोकने में काम देता है। भोजपत्र या कागज पर लिखकर धागे या डोरे से हाथ पर बांधने से ताव-ज्वरादि जाते हैं। यन्त्र तैयार हो जाये तब धूप से खेव कर इक्कीस बार ऊपर फिरा कर पीड़ावाले के बांधना, जब ज्वरपीड़ मिट जाये तब यंत्र को कुवे के पानी में डाल देना, विश्वास रखना और इष्ट देव का स्मरण करते रहना।

(१०) सिद्धिदायक एक सौ आठिया यन्त्र

४६	५३	२	७
६	३	५०	४९
५२	४७	८	१
४	५	४८	५१

यह सोलह खाने का एक सौ आठिया यन्त्र है, खाने में चाहे किसी तरफ से घुमाकर अंक गिनने से योगांक एक सौ आठ हो जाता है। यंत्र में विशेष कर यही खूबी जानने योग्य होती है। इस यंत्र को अष्ट गन्ध से भोजपत्र या कागज पर लिखना चाहिए। कलम चमेली की लेना या सोने का निब वाला पैन हो तो और भी अच्छा है, यंत्र तैयार कर बाजोट पर रख धूप, दीप कर पुष्प चढ़ाकर वासक्षेप से पूजा करे और सामने फल नैवेद्य चढ़ाकर नमस्कार कर यंत्र को समेट कर पास में रखे, यंत्र जिस काम के लिए बनाया हो उसका संकल्प यन्त्र की पूजा करने के बाद कहकर नमस्कार कर

लेवे और जहां तक कार्य सिद्ध न हो वहाँ तक प्रातःकाल में नित्य प्रति धूप से या अगरबत्ती से खेव लिया करे। इष्टदेव का स्मरण कभी नहीं भूलें, कार्य सिद्ध होगा।

(११) भूत-प्रेत भय-कष्ट निवारण एक सौ छत्तीसा यंत्र

४	५६	१६	६०
३१	४४	२०	४०
५२	७	६४	१२
४८	२८	३६	२४

यह सोलह कोठे का **'एक सौ छत्तीसा यंत्र'** है। इसके चार कोठे के अंक किसी भी तरफ से गिनने से एक सौ छत्तीस का योगांक आता है। इस यंत्र को मकान के बाहर भी लिखते हैं और पास में रखने के लिए भी बनाया जाता है। वैसे तो लिखने का दिन दिवाली की रात्रि को बताया है, परन्तु आवश्यकता अनुसार जब चाहें लिख लें, और हो तो अमावस्या की रात्रि में लिखें जिससे यन्त्र लाभदायी होगा। जब भूत-प्रेत या डाकिनी का भय उत्पन्न होता हो तो इसके बांधने से मिट जायेंगा और दूसरी तरह के कष्ट हों तो वे भी इस यन्त्र के प्रभाव से कम हो जावेंगे और सुख प्राप्त होगा। इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज पर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए और मकान की दीवाल पर सिंदूर से लिखना चाहिए।

(१२) पुत्रोत्पत्तिदाता एक सौ सित्तरिया यंत्र

७७	८४	२	७
६	३	८१	८०
८३	७८	८	१
४	५	७९	८२

यह सोलह कोठे का **'एक सौ सित्तरिया यंत्र'** है। इस यंत्र के चार कोठे के अंक गिनने से एक सौ सित्तर का योगांक आता है। इसकी महिमा बहुत बताई है। यहां तक कहा है कि इसकी महिमा का वर्णन तुच्छ बुद्धि नहीं कर सकता। धन-प्राप्ति में, जय-विजय में और पुत्र-प्राप्ति के हेतु बनाना हो तो अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए। भोजपत्र पर काला दाग न हो और स्वच्छ हो, कागज पर लिखें तो अच्छा कागज लेवें और शुक्ल पक्ष

की पूर्णा तिथि पंचमी, दशमी या पूर्णिमा को अच्छा योग देखकर तैयार करें। लेखनी चमेली की या सोने की निब वाली से लिखें और पास में रखें तो मनोकामना सिद्ध होगी और सुख प्राप्त होगा। धर्म पर दृढ़ रहकर पुण्योपार्जित करने से आशा शीघ्र फलती है, इष्टदेव के स्मरण को न भूलें।

(१३) एक सौ सित्तरिया (दूसरा यन्त्र)

४६	३६	५०	३९
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४९
४८	४१	४३	३८

यह 'एक सौ सित्तरिया' दूसरा यन्त्र भी सोलह कोठे का है। इस यन्त्र के चार कोठे के अंक को चाहे जिधर से गिनने से एक सौ सित्तर का योगांक आता है। लक्ष्मी-प्राप्ति के हेतु या जय-विजय के निमित्त इस यन्त्र को भी काम में लेते हैं। गर्भ रक्षा और अन्य प्रकार की पीड़ा मिटाने के लिए भी इस यन्त्र को अच्छे दिन (शुभ समय) अष्टगन्ध से भोजपत्र अथवा कागज पर लिखना चाहिए। एक सौ सित्तरिये दोनों यन्त्र लाभदायी हैं। नीति-न्याय पर चलने से सदा इष्टदेव प्रसन्न होकर मनोकामना सिद्ध करेंगे। यन्त्र मादलिए में रखे या मोम के कागज में लपेट कर पास में रखें।

(१४) व्यापार वृद्धि कर दो सौ का यन्त्र

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

यह सोलह खाने का 'दो सौ का यन्त्र' है। चार कोठे के अंकों को चाहे जिधर से गिन लें, दो सौ का योगांक आएगा। इस यन्त्र के दो विधान हैं। पहला विधान तो यह है कि दीवाली के दिन अर्धरात्रि के समय सिंदूर या हिंगुल से दूकान के बाहर लिखे तो व्यापार की वृद्धि होती रहती है। दूसरा विधान यह है कि इस यंत्र को भोजपत्र अथवा कागज पर पंचगन्ध से लिखें जिसमें केसर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, और चंदन का मिश्रण हो।

उत्तम पात्र में पंचगन्ध रस तैयार कर चमेली की कलम से लिखे। यह यंत्र विशेषकर दीवाली के दिन अर्धरात्रि के समय लिखना चाहिए। यदि ऐसा समय निकट नहीं हो और कार्य की आवश्यकता हो तो अमावस्या की अर्धरात्रि के समय लिखे। यह जिसके लिए बनाया हो उसी समय या प्रातःकाल उसे दे देवे। यन्त्र को पास में रखने से ऋतुगन्धी का स्राव नहीं रुकता हो तो रुक जाएगा, गर्भ धारण करेगी और गर्भरक्षा होगी। इष्टदेव का स्मरण नित्य करना चाहिए।

(१५) लक्ष्मीप्रद सर्वतोभद्र-यन्त्र (२३० का)

१	३२	३४	६३	९	२४	४२	५५
३८	५९	५	२९	४६	५१	१३	२०
३१	२	६४	३३	२३	१०	५६	४१
६०	४७	२७	६	५२	४५	१९	१४
३	३०	३६	६१	११	२२	४४	५३
४०	५७	७	२६	४८	४९	१५	१८
२९	४	६२	३५	२१	१२	५४	४३
५८	३९	२५	८	५०	४७	१७	१६

(दीपावली के दिनों में) धन तेरस, रूप चौदस और दीपावली के दिन इस यन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार लिखें तथा नीचे लिखे मन्त्र के १२०० जप करें। जप के समय यन्त्र पर १-१ चावल चढ़ाता जाए। यन्त्र लेखन के लिए चन्दन का पडिया, चांदी की कलम और यक्षकर्दम का प्रयोग करे। दूसरे दिन उन चावलों को इकट्ठा कर गाय के दूध में खीर बनाये और इसी का भोजन करे।

मन्त्र—ॐ नमो भगवओ गोअमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अरकीण महाणसस्स ॐ अवतर अवतर अरकीण महाणसस्स स्वाहा।

यह मन्त्र शिवरात्रि के दिन भोजपत्र पर गोरोचन से लिखकर धारण करने से इच्छा सिद्ध होती है।

उपर्युक्त मन्त्र का अन्य प्रयोग

यह मन्त्र लिखकर इस पर ३७॥ हजार चावल शुभ दिनों में चढ़ाएं। १-१ चावल चढ़ाते जाएं और **"आं ह्रीं क्रौं छ्रीं श्रीं नमः"** इस मन्त्र का जप करें। फिर चावलों की खीर बनाकर खाएं। इससे लक्ष्मी प्राप्त होती है।

(१६) लक्ष्मीदाता पांच सौ का यन्त्र

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

इस **"पांच सौ के यंत्र"** के चार कोठे के अंक गिनने से पांच सौ की गिनती आती है। इस यंत्र को पास में रखने से लंक्ष्मी प्राप्त होगी। इसका विधान यह है कि पुत्र की इच्छा वाले पति-पत्नी पास में रखें तो आशा फलेगी। शुभ काम के लिए अष्टगन्ध से लिखना चाहिए। कलम चमेली की लेना और यंत्र को मादलिए में रख पास में रखना अथवा कागज में लपेट कर जेब में रखना। धर्म के प्रताप से आशा फलेगी। दान-पुण्य करना। धर्म में निष्ठा रखना।

(१७) सम्मानवर्धक सात सौ चौबीसा यंत्र

१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१

इस यंत्र को **'एक सौ इक्कासिया यन्त्र'** कहते हैं और **'सात सौ चौबीसा'** भी कहते हैं। चार कोठे के अंक गिनने से सात सौ चौबीस का योग आता है, यह यंत्र प्रभाव बढ़ाता है और राजमान, समाजमान, व व्यापारी वर्ग में आगवानी प्राप्त कराता है। इस यंत्र को अष्टगन्ध से लिखना चाहिए और प्रातःकाल धूप खेवना चाहिए। इस यंत्र को **'वशीकरण यंत्र'** भी कहते हैं। जिस कार्य के लिए उपयोग करना हो, करें; किन्तु नीति न्याय को नहीं छोड़े। यन्त्र को चांदी के पतरे पर तैयार कराकर प्रतिष्ठा कराकर पूजा करने से भी लाभ होता है। जिसको जैसा योग्य मालूम हो करा लेवे। धर्म पर श्रद्धा रखे, इष्टदेव का स्मरण किया करे।

(१८) विविध फलदाता लाखिया यन्त्र (पहला)

यह **'लाखिया यंत्र'** है। इसके चार खानों के अंकों को किसी भी तरफ से गिनने से लाख का योग आता है। इस यंत्र को लिखने के विधान तथा स्वरूप इस प्रकार से बताये हैं—

४९९९२	४९९९९	२	७
६	३	४९९९६	४९९९५
४९९९८	४९९९३	८	१
४	५	४९९९४	४९९९७

(१) सोनागेरु से लिखकर अपने पास रखने से अग्निभय से बचाव होता है।

(२) जिन लोगों को मातेहती में काम करना पड़ता हो और ऊपरी अधिकारी बार-बार नाराज होते हैं तो वे इस यंत्र को पंचगंध से लिखकर अपने पास रखें तो अधिकारी की कृपा रहती है।

(३) प्राय: कई जगह पति-पत्नी के आपस में वैमनस्य हो जाया करता है। वह भी अल्पसमय का हो तो दु:खदायी नहीं होता। परन्तु बार-बार क्लेश होता हो तो इस यन्त्र को कुंकुम से लिखकर पुरुष पास में रखे तो पत्नी के साथ प्रेम बढ़ता है और शान्ति रहती है।

(४) इस यंत्र को हल्दी से लिखकर पास में रखे तो पत्नी के साथ पति का प्रेम बढ़ता है।

प्राय: ऐसे यन्त्र दीवाली के दिन मध्यरात्रि में लिखते हैं और धनप्राप्ति अथवा दूसरे किसी काम के लिए बनवाना हो तो पंचगंध से लिखते हैं जिसमें केसर, कस्तूरी, चन्दन, कपूर और मिश्री का मिश्रण होना चाहिए।

(१९) लाखिया यन्त्र (दूसरा)

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००	४५०००	४७०००

यह दूसरा 'लाखिया यन्त्र' है। इसको भी दीवाली के दिन मध्य रात में अष्टगन्ध से लिखते हैं और जिसके लिए बनाया गया हो उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय-विजय होती है। व्यवसाय करते समय जिस गद्दी पर बैठते हों उसके नीचे रखने से व्यवसाय में लाभ होता है, ऊपर बताया हुआ लाखिया यंत्र ऐसे कार्यों में लाभ देता है। जिसको जो यन्त्र ठीक लगे उसी का उपयोग करें।

परन्तु विधान यह है कि दीवाली की मध्य रात्रि में यंत्र लिखकर उसके सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। और फिर समय आये बनखण्ड में या बाग में अथवा जलाशय के किनारे बैठ कर यंत्र के सामने एक पहर तक इष्ट मंत्र का जप करे जिससे यंत्र सिद्ध हो जाएगा। क्रिया करते समय लोबान का धूप बराबर रखना चाहिए तो यन्त्र सिद्ध हो जाएगा। और भी इन दोनों यंत्रों के कई चमत्कार हैं। श्रद्धा रखकर इष्टदेव के स्मरण को करते रहना जिससे कार्य सिद्ध होगा।

दुर्लभ अक्षय सिद्धिप्रद यन्त्र

(१) जयपताका यंत्र (पहला)

५१	८	५३	६४	१	४६	६९	६	७१
४६	४४	६२	१९	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	१०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३९	५७	२३	४१	५९	२१	४३	६१
३०	७५	१२	३२	७७	१४	३४	७९	१६
६७	४	४९	७२	९	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२९	७४	११

यह **'जयपताका यन्त्र'** है जिसका माहात्म्य इसके नाम से ही सम सकते हैं। जो मनुष्य महात्माओं की कृपा प्राप्त कर लेता है उसी को इस यन्त्र का आम्नाय मिलता है। सामान्य रूप से इस यन्त्र के लिए कहा है कि यंत्र को पंचगंध अथवा अष्टगंध से लिखे और किसी खास काम पर विजय प्राप्त करने के लिए बनाना हो तो यक्षकर्दम से लिखे। लिखते समय इक्यासी कोठे बनाकर चढ़ते अंक से अर्थात् छोटी संख्या से बड़ी लिखने का आरम्भ करे, जैसे प्रथम पंक्ति के पांचवें कोठे में एक का अंक लिखे, सातवीं लाइन के आठवें कोठे में दो का अंक लिखे, चौथी लाइन के दूसरे कोठे में चार का अक लिखे, चौथी लाइन के पांचवें कोठे में पांच का अंक लिखे, प्रथम लाइन के आठवें कोठे में छः का अंक लिखे। प्रथम लाइन के दूसरे कोठे में आठ का अंक लिखे, सातवीं लाइन के पांचवें कोठे में नौ का अंक लिखे, और तीसरी लाइन के छठे कोठे में दस का अंक लिखे। इस तरह से सम्पूर्ण यन्त्र को चढ़ते अंक से लिखकर पूर्ण करे और तैयार हो जाने पर जिस मनुष्य के लिए बनाया हो उसका नाम व कार्य का नाम संक्षेप में यन्त्र के नीचे लिखे। इस तरह से तैयार कर लेने के बाद यन्त्र को एक बाजोठ पर स्थापित कर अष्ट-द्रव्य से पूजा कर यथा शक्ति भेंट भी रखे और हनुमान जी से यंत्र को लेकर पास में रखे तो लाभदायी होता है। नीति न्याय को नहीं छोड़े। चरित्र शुद्ध रखें जिससे फल मिलेगा।

(२) विजयपताका यंत्र (दूसरा)

इस यंत्र को लिखने का विधान जय-पताका यंत्र की तरह समझना चाहिए। शेष इस यंत्र में यह विशेषता है कि प्रत्येक पंक्ति के पांचवें खाने में अन्त्याक्षर एक है, चौथे में बिन्दु और छठी पंक्ति में प्रत्येक खाने में अंत का अक्षर दो का अंक है। आठवें कोठे में अन्त्याक्षर तीन का अंक है और दूसरे कोठों में कहीं सात का, कहीं छः का, कहीं आठ का अधिक बार आया है। इस यंत्र को विधि से लिखकर पास में रखने से विजय मिलती है, वाद-विवाद करते समय, मुकदमे की बहस करते समय और संग्राम में तथा इसी तरह के

दूसरे कामों में प्रवास, प्रयाण या प्रवेश किया जाय तब इस यंत्र को पास में रखने से सहायता मिलती है। इस यंत्र का लेखन अष्टगंध अथवा यक्षकर्दम से हो सकता है। बाकी विधान जयपताका यंत्र की तरह समझ लेना। श्रद्धा से कार्य सिद्ध होता है, विजय पाते हैं। हिम्मत रखने से आशा फलती है।

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४१
५७	६८	७९	९०	११	२२	३३	४४	४६
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	५६
७३	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६
६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६
१६	२७	२९	४०	५१	६२	७३	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	८२	३	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२५	३५

(३) संकट मोचन यन्त्र

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१५६
१३९	१४०	१२४	११८	१४१	१४३	१४३
१४४	१२३	१४५	१२९	११९	१४६	१४७
१२२	१४८	१४९	१२६	१५०	१२०	१२१

इस यन्त्र का जैसा नाम है वैसा ही गुण है। शरीर अस्वस्थ हो गया हो या और भी किसी प्रकार का कष्ट आ गया हो तो यह यन्त्र काम देता है, इस यंत्र में सबसे छोटा अंक एक सौ पंद्रह का और वड़ा अंक एक सौ छप्पन का है, इन दोनों अंकों के बीच के अंकों मे यह यंत्र बना है। प्रथम के कोने में अन्त के कोने तक एक सौ पंद्रह से एक सौ इक्कीस तक के अंक हैं, दूसरे कोने के नीचे से एक सौ वाइस से एक सौ सत्ताइस तक के अंक हैं। इस तरह की योजना से पेट का दर्द, हो टुण्डी या गोला खिसक गया हो तो उस समय अष्टगंध से कांसी की थाली में यंत्र लिखकर धोकर पिलाने से दर्द मिट जाता है। इस तरह के विधान हैं जिन्हें समझकर उपयोग करें।

(४) विजय यन्त्र

इस यन्त्र को विजय यन्त्र कहते हैं और वर्द्धमान पताका भी कहते हैं, हमारे संग्रह में इसका नाम **'वर्द्धमान पताका'** है परन्तु इस यंत्र को 'विजयराज यन्त्र' समझना चाहिए क्योंकि यही नाम इस यन्त्र के मन्त्र में आया है।

७२	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४६
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२०	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

इस यन्त्र के नौ विभाग हैं, प्रत्येक विभाग में नौ कोठे हैं। सभी का योग इक्यासी कोष्ठकों का होता है, जिनमें एक से लेकर इक्यासी के अंक द्वारा खानापूरी की गई है, जिनको लिखने का विधान इस तरह बताया है कि बीच में एक विभाग के नौ खानों को प्रथम के बीच के खाने में एक अंक लिख अनुक्रम से चढ़ते अंक लिखते जाना, फिर नीचे का नौवां विभाग लिखना, फिर बीच का चौथा विभाग लिखना, फिर नीचे का सातवां विभाग लिखना, फिर मध्य का पांचवां विभाग लिखना, बाद में तीसरा विभाग लिखना, फिर छठा विभाग लिखना, फिर पहला विभाग लिखना और फिर आठवां विभाग लिखना—इस तरह से नौ विभाग के इक्यासी कोठों को भर देना। इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखना चाहिए और ऐसा भी लेखा है कि पूंछवाला तारा उदय होने तक लिखना चाहिए। जब यन्त्र तैयार हो जाय तब एक बाजोट पर स्थापन कर धूप दीप की व्यवस्था शुद्धतासहित रखकर कुछ भेंट रखना और नीचे बताये हुए मन्त्र की एक माला फिराना।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः विजययन्त्रराज—धारकस्य ऋद्धि वृद्धि जयं सुखं सौभाग्यं लक्ष्मीसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

इस तरह की माला के बाद पंचामृत मिश्रित शुद्ध वस्तुओं का हवन करना भी बताया है।

इस यन्त्र के नौ विभाग बताये हैं और प्रत्येक विभाग के अलग-अलग यन्त्र भी बनते हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है :—

(१) प्रथम विभाग के यन्त्र से दृष्टि दोष, शाकिनी-डाकिनी, भूत-प्रेत आदि का भय नष्ट होता है।

(२) दूसरे विभाग के यन्त्र से अधिकारी आदि की प्रसन्नता रहती है।

(३) तीसरे विभाग के यंत्र ते अग्निभय और सर्प का उपद्रव नष्ट हो जाता है।

(४) चौथे विभाग के यन्त्र से ताव, एकांतरा, तिजारी, आदि नष्ट होते हैं।

(५) पांचवें विभाग के यन्त्र से नवग्रह पीड़ा आदि नष्ट होती है।

(६) छठे विभाग के यन्त्र से विजय पाते हैं।

(७) सातवें विभाग का यंत्र मंदिर आदि की ध्वजा पर लिखने से दिनों-दिन उन्नति होती है।

(८) आठवें विभाग का यंत्र धनुष आदि शस्त्र पर बांधने से विजय पाते हैं।

(९) नौवें विभाग का यन्त्र दिवाली के दिन दुकान की दीवाल पर लिखने से जय-विजय होती है।

इस तरह से नौ विभाग के यन्त्रों का वर्णन है। प्रथम विभाग अंक गिनती के अनुसार प्रथम पंक्ति के मध्य का समझना, इसी तरह से दूसरा तीसरा विभाग चढ़ते अंकों से समझना चाहिए।

अन्य विधान

इस यंत्र का दूसरा विधान इस प्रकार है कि विधि सहित यंत्र तैयार करके एकांत स्थान में शुद्ध भूमि बनाकर कुम्भस्थापना कर अखण्ड ज्योति रखे और एक चौकोर पटिये पर यन्त्र स्थापना कर सामने चौकोर पटिये पर नंदि-वर्धन साथिया करे। साथिया करने के चावल सवा सेर देशी तौल के केसर से रंगे हुए अखण्ड हों। उनसे साथिया पूर कर फल, नैवेद्य और रुपया नारियल चढ़ावे, फिर सामने बैठकर मंत्र के साढ़े बारह हजार जप पूरे कर लेवे, नियमित जप-संख्या प्रतिदिन की एक सी हो। इस तरह से विभाग कर जप पांच दिन अथवा आठ दिन में पूरा कर ले. जप करने के दिनों में एकासना या आयंबिल तप करे, जप पहर दिन चढ़ने से पहले पूरा कर ले। भूमिशयन, ब्रह्मचर्य-पालन और आराम का त्याग कर नित्य स्थापना स्थान में ही सो जाये। जिस दिन जप पूरा हो जाय साथिया में से चावल चमटी भर कर ले और सिरहाने रख कर मंत्र की माला फेर कर सो जावे तो रात्रि के समय स्वप्न में शुभाशुभ कथन देव द्वारा मालूम होंगे, धन वृद्धि होगी, कार्य सिद्ध होगा। श्रद्धा और पुण्य से आशा फलती है; पुण्य धर्म साधन से उपार्जित होता है, इसका पूरा ध्यान रखें।

(५) चौसठ योगिनी यन्त्र

आगे जो चौसठ योगिनी यन्त्र है, यह कई तरह के कार्य सिद्ध करने में काम आता है, इस यन्त्र के लिखने में यह खूबी है कि एक का अंक दो का अंक तिरछा एक कोठा बीच में छोड़कर लिखा गया है। इसी तरह से तमाम अंक तिरछे कोठों में एक एक छोड़ते हुए लिखे हैं और अंत में चोसठवें अंक पर समाप्ति की है। इस यन्त्र की लेखनविधि को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, और यंत्र लिखकर जिस कार्य की पूर्ति के लिए बनाया हो उसकी विगत और जिसके लिए वनाया हो उसका नाम यंत्र में लिखना चाहिए। जब यन्त्र विधि सहित तैयार हो जाय तब शुभ समय मे पास रखना और हो सके वहां तक कार्य सिद्धि तक धारण किये रहना। धूप नित्य देने से यंत्र का प्रभाव

चौसठ योगिनी यंत्र (पहला)

४६	७	२०	३३	४४	५	१८	३१
२१	३४	४५	६	१९	३२	४३	४
८	४७	६०	५७	६२	५३	३०	१७
३५	२२	६३	५४	५९	५६	३	४२
४८	९	५८	६१	५२	४१	१६	३९
२३	३६	५१	६४	५५	२८	१३	२
१०	४९	३८	२५	१२	१५	४०	२७
३७	२४	११	५०	३९	२६	१	१४

बढ़ता है, कष्ट भी शीघ्र मिटता है और भावनायें फैलती हैं। इष्ट देव-देवी की पूजा करना और दान पुण्य की चेष्टा रखने से कार्य सिद्ध होगा।

(६) चौसठ योगिनी यंत्र (दूसरा)

इस यन्त्र में एक से लेकर चौसठ तक के अंक इस तरह से लिखे हुए हैं कि ऊपर के कोठों की सीधी ओर अंकगणना करने से दो सौ साठ का अंक आता है। इस तरह से आठ कोठों की गिनती प्रत्येक लाइन की दो सौ साठ आती

७	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४२	४१	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	३४	२	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

है । लिखने में यह खूबी है कि एक कोठे का अंक अपने पास के दूसरे कोठे में पास की गिनती के अंक लिए हुए है, इस तरह बायीं तरफ के दो कोठों की और दाहिनी तरफ के दो कोठों की लाइन में लेखन पद्धति है, बीच में चार कोठों में चार चार अंक पास की गिनती वाले लिखे हैं, इस तरह से चौसठ योगिनी के स्थानों की पूर्ति कर यंत्र बनाया है । इस यंत्र की महिमा कम नहीं है, यह यंत्र बहुत से कार्यों में काम आता है, लिखने का विधान पूर्ववत् समझना चाहिए । इस यंत्र को तांबे के पतरे पर बनवा कर पूजा करने से भी लाभ होता है । इष्टदेव की सहायता से कार्य सिद्ध होता है, मनुष्य का प्रयत्न करने का काम है ।

इस प्रकार संक्षेप में यहां अंक यन्त्रों के स्वरूप एवं प्रयोग-विधान हमने दिखाये हैं । वैसे अंकयन्त्रों की योजना के अनन्त प्रकार हैं और उनसे होने वाली सिद्धियां भी अनन्त हैं । इसी दृष्टि से हमने लिखा है कि—

अङ्कैरङ्कितयन्त्रराजनिवहो नानाविधो दृश्यते,
पारं यान्ति न तत्र यन्त्ररचनाविज्ञा अपि प्रायशः ।
तस्माक्ष्दात्मनि विश्वसन् भुवि सदा साध्ये रतः साधकः,
श्रेयो विन्दतु साधनासरणितः कामप्यथैकां श्रयन् ॥

१३

अक्षर यन्त्र और अक्षरांक यन्त्र

जिस प्रकार केवल रेखात्मक, मन्त्रात्मक तथा अङ्कात्मक यन्त्र बनते हैं, उसी प्रकार केवल अक्षरात्मक और अक्षर तथा अङ्कों से बनाए गए यन्त्र भी बहुत प्राप्त होते हैं। अभिव्यक्ति के लिए स्वीकृत लिपि की वर्णमाला में आये हुए सभी अक्षर अपना-अपना महत्त्व दो प्रकारों से रखते हैं—१. स्वतन्त्र अक्षर के रूप में तथा २. समुदाय के रूप में। समुदायात्मक अक्षर के भी दो प्रकार होते हैं—१. कूटाक्षर रूप तथा २. पद रूप। कूटाक्षरों में कुछ अक्षर एक दूसरे से अभिन्न होकर बीजमन्त्र बन जाते हैं और अक्षरों का मिला-जुला रूप पद-वाक्यादि बनकर हमारे प्रयोग में आता है।

यहां १-स्वतंत्र अक्षरों से बने हुए यंत्र और २-अक्षर एवं अंक दोनों से बने हुए यंत्रों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं। साथ ही साथ यत्र-तत्र इन दोनों प्रकारों में कहीं-कहीं कुछ चिह्नों का प्रयोग भी दिखाई देता है, जिसे हम तीसरा प्रकार भी मान सकते हैं।

(१) भाग्यवृद्धिकर-यन्त्र

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर कस्तूरी और कपूर से लिखे। धूप दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करे। चांदी या ताम्बे के ताबीज में रखकर दाहिने हाथ में धारण करे तो भाग्यवृद्धि हो। सुख-सम्पदा बढ़े और मानसिक प्रसन्नता बढ़ती रहे।

(२) सर्वरोग-निवारण यन्त्र

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	दे	व	द्रीं
श्रीं	द	त्त	श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

सभी प्रकार के रोगों से छुटकारा पाने के लिये इस यन्त्र को भोज-पत्र पर केसर से लिखकर धूप-दीप करे और धारण करे। यन्त्र के बीच में 'देवदत्त' इन चार अक्षरों की जगह रोगी का नाम लिखें।

(३) गर्भस्तम्भन-यन्त्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्लीं	ह्लीं	ह्ली	ह्लीं
ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं

जिस स्त्री का गर्भ पूर्ण न होकर बीच में ही गिर जाता हो अथवा गर्भ रहता ही नहीं हो, उसके लिए यह यन्त्र बहुत लाभकारी है। जिस दिन रविवार और मूल नक्षत्र हो उस दिन यह यन्त्र लिखकर स्त्री के बांए हाथ पर बांध दें। कार्य सिद्ध होगा।

(४) कर्णपीडाहर-यन्त्र

भ	ज	व
क	ग	जः
छः	छः	दः

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर जिस कान में दर्द होता हो, उस पर बांध दें। रोग दूर होगा।

(५) उदर रोग निवारण-यन्त्र

अ	ग	स्त्य	ऋ
ष	ये	न	मः
प	च	प	च

प्रातःकाल स्नान करके गोरोचन से कांसे की थाली में यह यन्त्र लिखे तथा नीचे लिखे मन्त्र से उसकी पूजा करके यन्त्र को धोकर पी जाये अथवा जिसके पेट में दर्द होता हो उसे पिला दे। इससे रोग शान्त होगा। मन्त्र इस प्रकार है—ॐ अगस्त्य ऋषये नमः पच पच'।

(६) चेचक शान्तिकर-यन्त्र

४	श्री०	श्री०	श्री०
श्री०	श्री०	श्री०	श्री०
श्री०	श्री०	श्री०	श्री०
००	००	००	००

यह यन्त्र पीपल के पत्ते पर अष्टगन्ध से लिखे और चूल्हे के ऊपर बांध दें अथवा ऐसे सात पत्तों पर लिखकर उन्हें दरवाजे के ऊपर बीच में बांध दें। जैसे-जैसे पत्ते सूखेंगे आराम होगा।

(७) स्वप्नभय-नाशक-यन्त्र

हं	सं	षं	फं
पं	दं	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	दं

जिस बच्चे को सोते समय बुरे-डरावने सपने आते हों उसके सिरहाने यन्त्र लिखकर रखने से वैसे सपने नहीं आते हैं। इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोज-पत्र पर लिखकर धूप देवें और प्रयोग करें।

(८) बालरक्षा यन्त्र
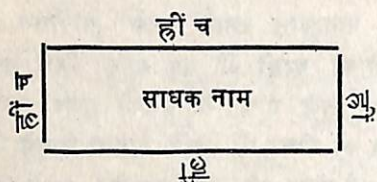
इस यन्त्र को रविवार को भोजपत्र पर लिखकर तीन धातु से बने हुए ताबीज में रखें और धूप देकर बालक के गले में पहना दें। इससे दांत निकलना, नजर लगना आदि दूर होते हैं।

(९) नौकरी प्राप्त कराने वाला यन्त्र

रविपुष्य के योग में गोरोचन, कपूर, केशर और गंगाजल को मिलाकर उससे भोजपत्र पर चमेली की लेखनी से यह यन्त्र लिखे और लिखते समय मुंह में मिश्री की डली रखे। फिर इस यन्त्र को दाहिनी भुजा पर धारण करे। इससे नौकरी प्राप्त हो जाती है—

यन्त्र के नीचे अपना नाम अथवा जिसके लिए यंत्र बनाया हो उसका नाम तथा राशि लिखें।

ॐ	नं	ज	ऽ।
दं	डं	ह्रीं	ऽ ☰
वं	डं	जगत्	।।ऽ
नाम तथा राशि			

(१०) शिव-चतुर्दश सूत्र-यन्त्रम्

महर्षि पाणिनि ने घोर तपस्या करके भगवान् शिव को प्रसन्न किया और तब शिवजी ने अपने डमरू के नाद से चौदह सूत्रों को प्रदान किया। इसके बारे में यह पद्य प्रसिद्ध है—

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव पञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामान् सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

इन चौदह सूत्रों की सनकादि-सिद्धों ने भी उपासना करके सिद्धि प्राप्त की थी, जिसके फलस्वरूप उन्हें अध्यात्म, मंत्र, तंत्र और यंत्रादि का ज्ञान हुआ । इन सूत्रों से निम्नलिखित 'अक्षर-यंत्र' का निर्माण होता है—

इस यंत्र के अनेक प्रयोग वहुत ही सिद्ध माने गये हैं—उनमें से कुछ का निर्देश इस प्रकार है—

अइउण्	ऋलृक्	एओङ्	ऐऔच्
हयवरट्	लण्	ञमङणनम्	झभञ्
घढधष्	जबगडदश्	खफछठथ चटतव्	कपय्
शषसर्	हल्	देवदत्त	ॐनमः शिवाय

(१) **आपद्‌निवारण के लिए**—जिस समय अपने ऊपर कोई आपत्ति आई हो तो यंत्र को भोजपत्र पर केशर अथवा लाल चन्दन से अनार की लेखिनी द्वारा शुभ मुहुर्त में लिखे और इसकी प्रतिष्ठा-पूजा आदि करके यंत्र को शहद अथवा घृत में रख दे और प्रतिदिन सूत्र सहित 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र को एक माला जपकर यंत्र पर इसी मंत्र को बोलते हुए षोडशोपचार पूजा करके बिल्व पर चढ़ाए । कार्य सिद्धि होगी ।

(२) **शत्रु निवारण के लिए**—उपर्युक्त विधि से यत्र लिखकर सरसों के तेल में रखे और पूजनादि करे । यदि शत्रु अधिक कष्ट देता हो तो तेल पात्र को प्रतिदिन तपाकर बाद में पूजा करे ।

(३) **सर्वरोग शांति के लिए**—ऊपर बताई हुई विधि से यंत्र को प्रतिष्ठा करके गले में अथवा भुजा पर धारण करने से सब तरह के रोग नष्ट होते हैं।

(४) **परदेश में गए व्यक्ति को शीघ्र बुलाने के लिए**—यह यंत्र पीपल के पत्ते पर लाल चन्दन से लिखे और यदि यत्र न बन सके तो १६ पत्तों पर एक-एक सूत्र और 'देवदत्त' के स्थान पर 'बुलाए जाने वाले व्यक्ति का नाम' प्रत्येक सूत्र के साथ लिखकर एक कोरी हंडिया (जिसमें काले दाग न हों) में वे पत्ते डाल दे और साथ ही किसी नदी के किनारे से या पानी में से १४ कंकर लाकर उन्हें भी इसी में डाले। बाद में मिट्टी के ढक्कन से उसका मुंह ढक दे। तदनन्तर उसकी विधिवत् प्रतिष्ठा और पूजा करके धूप देवे। इस हंडिया को प्रातः और सायं १४ बार हिलाए और साथ में ॐ **अइउण्-ऋलृक्-एओङ्-ऐऔच्-हयवरट्-लण्-ञमङणनम्-झभञ् - घढधष् - जबगडदश्-खफछठथ-चटतव्-कपय्-शषसर्-हल् ॐ नमः शिवाय हे शिव ! अमुकं आनय आनय"** यह मंत्र १४ बार बोलता रहे। यह प्रयोग इक्कीस दिन तक करने से अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

(५) **सर्वकामना सिद्धि के लिए**—बिल्व पत्र १४ लाकर उनके प्रत्येक पत्र पर एक एक सूत्र चन्दन से लिखे और ऊपर लिखा हुआ मंत्र बोलते हुए शिवजी के ऊपर प्रतिदिन चढ़ाए। यह प्रयोग ५६ दिन का है।

इन शिवसूत्रों से सम्बन्धित और भी अनेक प्रयोग प्राप्त होते हैं। पातञ्जल-महाभाष्य' एवं 'काशिका' ग्रन्थ में भी इन सूत्रों को वेदतुल्य बतलाया है। इन सूत्रों से प्रतिदिन शिवजी पर दुग्धाभिषेक भी किया जाता है। यह ठीक ही कहा गया है कि—

यदा चैकश्वासे कठिनसमये सूत्रनिचयं,
परं मन्त्रं शम्भोः पठति मनुजो निश्चलमनाः।
तदा यान्ति त्वस्मिन् जगति विलयं तस्य विपदो,
न किञ्चिद् दुःसाध्यं कठिनमपि कार्यं प्रभवति ॥

अर्थात् इस संसार में जब कोई कठिन समय आए तब इन सूत्रों को एक ही श्वास में जो मनुष्य स्थिरभाव से बोलता है, उसकी विपत्तियां टल जाती

हैं और ऐसा कोई दुःसाध्य कार्य भी नहीं रहता जो इनके प्रभाव से सुसाध्य नहीं बन जाती।

अक्षरांक-यन्त्र

जिन यंत्रों में अक्षर और अङ्क दोनों ही मिले हुए रहते हैं उन्हें यह संज्ञा दी गई है। ऐसे यंत्रों का प्रभाव भी कम नहीं है। अतः यहां कुछ ऐसे यंत्र दिए जा रहे हैं—

१. व्यापार-वृद्धिकर-यन्त्र

यह यंत्र ताँबे, चाँदी अथवा सोने के पत्र पर शुभ मुहूर्त में खुदवाकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि को शुद्ध स्थान पर स्थापित करे। फिर श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन और श्वेत माला का प्रयोग करते हुए 'ॐ ह्रीं श्रीं नमः' इस मंत्र की १० माला जपे। श्वेत पुष्प यंत्र पर चढ़ाए। यह प्रयोग २१ दिन तक करने से यंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर इसे तिजोरी या पेटी में रखें। व्यापार में लाभ होगा।

ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
हैं	भुर	भुर	भुर	भुर

(२) स्वप्नदोष निवारक-यन्त्र

इस यंत्र को रविपुष्य को भोजपत्र पर लिखकर धूप देवें और कमर में बांधने से उक्त दोष दूर होता है ।

ही	सो।।	हो।।
ल़ ओ	सो।।	ल ओ
क ल	क ल	क ल
२	२५	३

(३) फोड़े-फुन्सी नाशक-यन्त्र

यह यंत्र अष्टगन्ध अथवा केशर से भोजपत्र पर लिखकर भुजा में बांधने

हाक ७स्वा		खा ६	पा स्वं
८	घं	ग	३
र म	६ ५	२ १	घ य
ट	भ	घ	क्ष

से फोड़े फुन्सी आदि नष्ट होते हैं। यही यंत्र पीपल के पत्ते पर लिख कर दरवाजे पर बांधने से भी लाभ होता है।

(४) विवाह-कारक-यन्त्र

'यंत्र-महार्णव' में यह प्रयोग दिया गया है। जिस कन्या अथवा बालक का ग्रहदोष अथवा अन्य किन्हीं प्रतिबन्धक कारणों से विवाह नहीं होता हो, तो उसे यह प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—संक्रान्ति के दिन १२ बजे बिना सिले हुए वस्त्र पहनकर श्वेत कागज पर नीचे बताया हुआ यत्र हल्दी की स्याही से दाड़िम की लेखिनी द्वारा लिखकर पूजा में रखे। तदनन्तर उसके बाद जो रविवार आये उस दिन पुनः उसी पद्धति से एक यंत्र और लिखे और हल्दी की माला से 'ॐ ह्रीं हंसः' मंत्र का १००८ बार जप करे। उसके बाद उस यंत्र की बत्ती बनाकर जलाए। ऐसा सात रविवार तक करे और वैसे ही प्रतिदिन पूजा में रखे हुए यंत्र की पूजा करके यंत्र के सामने ही प्रातः ७ बजे १० माला नित्य जप करे। इससे अवश्य कार्यसिद्धि होती है। यह मंत्राक्षर सहित बत्तीसा यंत्र है।

८	१५	२	७
६	३ ॐ	१२ह्रीं	११
१४	६हं	८सः	१
१	५	१०	१३

मम विवाहो भवतु

(नाम) राशि

१४

विविध आकृति-यन्त्र

(१) शत्रु-मारण-यन्त्र

'रत्नचिन्तामणि के अनुसार यह यंत्र काजल, नीम का रस, विष और चिता की राख इन सबको मिलाकर उससे कौए के पंख की लेखिनी द्वारा
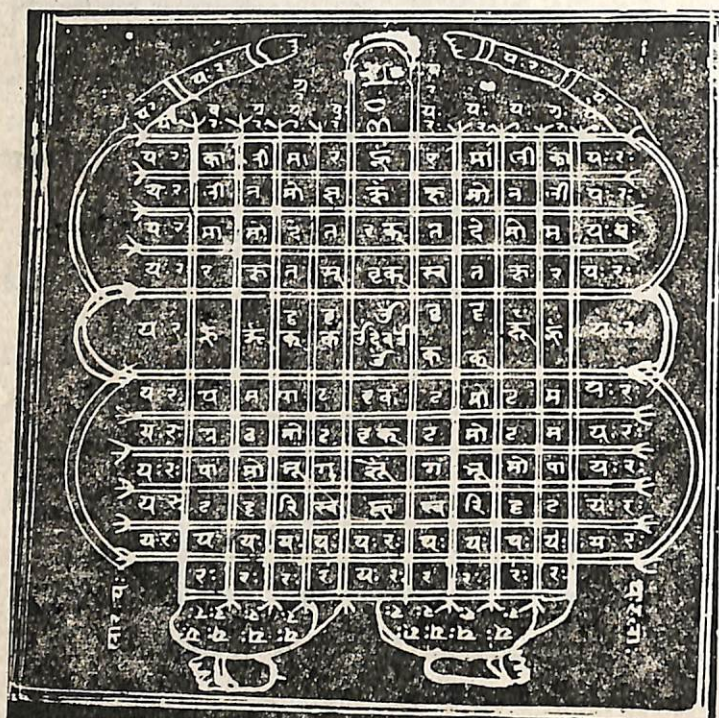
किसी चौकोर पत्थर पर लिखकर श्मशान में चिता के नीचे रख दे और बाद में १०८ बार प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल के समय निम्नलिखित मंत्र का जप करे—ॐ (दुश्मन का नाम) मारय २ फट् स्वाहा। इससे शत्रु की मृत्यु हो जाती है। इसी प्रकार जपादि करने से शत्रु की सेना का भी निवारण होता है। प्रयोग के लिए कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा रविवार का दिन लेना चाहिये।

(२) वांछित लक्ष्मीप्रद हस्ती यन्त्र

यह यंत्र केशर, कस्तूरी, अष्टगन्ध से लिखे और बाद में (प्रतिष्ठा करके) धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य और सुपारी से नित्य पूजा करे तो वांछित लक्ष्मी

प्राप्त होती है। इस यंत्र में लिखे 'देवदत्त' अक्षरों के स्थान पर साधक का नाम लिखना चाहिए।

(३) पति-वश्यकर यन्त्र

यह यंत्र भोजपत्र पर लिखकर बीच में पति का नाम लिखे और इसको धूप देकर मुर्गी के अण्डे के बीच में रखकर गाड़ दे। इससे जिसका पति बहुत कष्ट देता हो वह वश में हो जाता है।

(४) बन्दी छुड़ाने का यन्त्र

यह यंत्र ताडपत्र पर लिखकर एक मटके में बंद करके एकान्त में रख दें। कुछ दिनों में वह अपने आप उघड़ जाएगा और बन्दी छूट जाएगा। देवदत्त के स्थान पर बन्दी का नाम लिखना चाहिए।

यंत्र संख्या ४ यंत्र संख्या ३
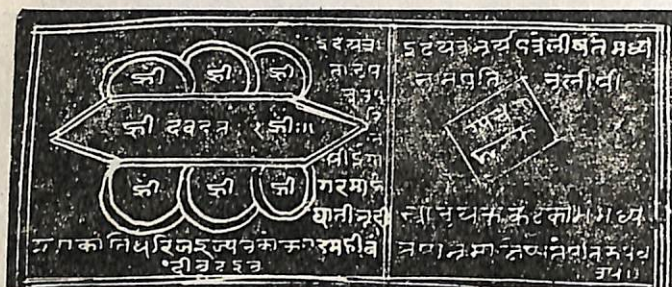
५६	६८	२	७
६	३	६२	६१
६४	५९	८	१
४	५	६०	६३

(५) एक सौ बत्तीस का सर्वकार्य साधक यन्त्र

यह यंत्र लिख कर पास रखने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। लिखने की विधि सामान्य यन्त्रों के समान है।

(६) सुख-शान्तिकारक ओङ्कार यन्त्र

यह यंत्र लिख कर पास रखने से घर में सुख-शान्ति रहती है। साथ ही ओंकार का जप भी करते रहना चाहिए।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

(७) रावण-पताका-यन्त्र (मृतवत्सा दोष निवारक)

यह राजा रावण का यंत्र बिना धुला हुआ कोरा वस्त्र पहन कर अष्टगंध और कस्तूरी से लिखे। बाद में १ कोरा वस्त्र १२ हाथ, लाल वस्त्र १ गज, सेविया लड्डू २१, सुपारी, लाल सूत्र १ सेर ये सब वस्तुएं भेंट करें। फिर यंत्र की पूजा-धूप करके जिस स्त्री का बालक गर्भ में ही मर जाता हो, उसे धारण करवायें। बालक जीवित रहता है। बीच में स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

श्रीरावण-पताकायन्त्रम्

(८) ऋद्धि कारक यन्त्र

यह यंत्र लिख कर जिस वस्तु की अधिकता चाहते हों, उसमें रख दें। इससे उस वस्तु की ऋद्धि बढ़ेगी।

४५	८०	१५	४०
२०	४५	३०	७५
७०	३५	६०	५
५५	१०	६५	४०

(९) लक्ष्मी लाभकारी ह्रींकारयन्त्र

यह यंत्र लिखकर पास रखने से लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

अथवा

(१०) शत्रु-वशीकरण-यन्त्र (वृषभ यन्त्र)

मिट्टी का एक बैल बनाकर पास में रख ले। फिर कुंकुम और गोरोचन से भोजपत्र पर यह यंत्र लिखे और उसके नीचे जिसको वश में करना हो उसका नाम लिख कर यह मन्त्र लिखे—ॐ नमो कुकुणा डाउ पढं पीड़ नाथि

नाथः अमुकं (नाम) आणि माहरइ पाइतलि घालि देडइ वेगि वाप क्वं-कुणाडाउतणी शक्ति फुरइ क्ष्म्वरयूं । बाद में एक पुतला मिट्टी का बनाए और उसको बैल के ऊपर बिठा दे।। यन्त्र को धूप देकर बैल के पेट में लपेट कर रख दे। किसी जीवित बैल के सिर के कुछ बाल लाकर बैल के सिर पर लगा दे। इस बैल सहित पुतले को पटिये पर रखकर पूजा करे, धूप दे और ५ सेर चावल भेंट चढ़ाए। लाल कनेर के पुष्प १०८ लाकर ऊपर बताए हुए मन्त्र को बोलते हुए १-१ फूल चढ़ाता जाए। ऐसा करने से शत्रु अथवा जिसे

चाहें वह वश में हो जाता है। चढ़ाए हुए चावल कुंवारी कन्या की पूजा करके उसे दक्षिणा सहित दे देवें।

(११) महासिद्ध श्रीदत्तात्रेय यन्त्र

यह यन्त्र ताम्रपत्र पर खुदवा कर अथवा भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में लिख कर प्रतिष्ठापूर्वक पूजा में रखे। नित्य इस यंत्र की पूजा करके 'ॐ ह्रां दत्तात्रेयाय नमः' इस मंत्र का यथाशक्ति नियमित जप करे। इससे सब प्रकार की सुख-शान्ति एवं धन-धान्य प्राप्त होते हैं।

महासिद्ध श्री दत्तात्रेय यंत्र

—×—

१५
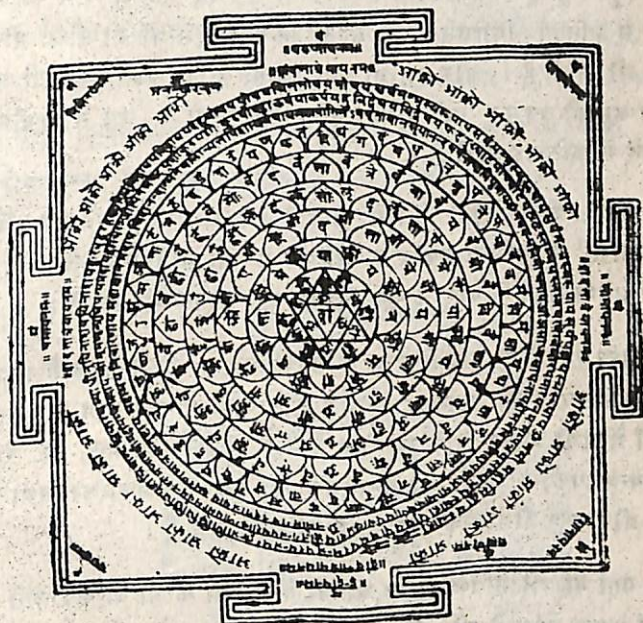
गायत्री यन्त्र और उनके प्रयोग

वेदमाता गायत्री का महात्म्य सर्वविदित है। द्विजमात्र के लिए तो यह कामधेनुरूप ही है। यज्ञोपवीत-संस्कार के पश्चात् गायत्री मन्त्र की दीक्षा हो जाने से कतिपय विशिष्ट मन्त्रों को छोड़कर शेष मन्त्रों की दीक्षा भी इसी में मान ली जाती है। और यह भी कहा जाता है कि जिसने गायत्री जप द्वारा अपने-आपको तपःपूत नहीं बनाया उसे अन्य मन्त्रों के जप से अभीष्ट सिद्धि मिलने में कठिनाई होती है।

हमने 'यन्त्र-शक्ति' ग्रंथ में गायत्री जप का मान्त्रिक विधान दिया है। 'तंत्र-शक्ति' में विभिन्न प्रकार के तान्त्रिक प्रयोगों का विवेचन किया है। अतः अब 'गायत्री-यंत्र' के बारे में कुछ विचार यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

तन्त्र शास्त्रों में गायत्री-मन्त्र के अनेक प्रकार प्राप्त होते हैं। भारतीय आस्तिक समाज की उपासना का मूल आधार ही गायत्री मन्त्र है, अतः इसके यन्त्रों में सभी प्रकार परिष्कृत हुए हैं—१. केवल रेखात्मक, २. रेखा एवं नाममन्त्रात्मक, ३. रेखा एवं मन्त्रात्मक, ४, रेखा एवं अंकात्मक तथा ५. रेखा अंक और मन्त्र-बीजात्मक यन्त्र इनमें अधिक प्रसिद्ध हैं।

यहां यह भी ज्ञातव्य है कि शास्त्रों में गायत्री के भी दो रूप माने गये हैं। उनमें पहला सूक्ष्म है और दूसरा स्थूल। सूक्ष्म-गायत्री पंचदशी-श्री विद्या है जिसका यन्त्र 'श्रीयन्त्र' के नाम से प्रसिद्ध है और स्थूल-गायत्री चौबीस अक्षरों वाली है।

हमने श्रीयन्त्र के बारे में 'यन्त्र-शक्ति' के पहले भाग में कुछ विवेचन करके यन्त्र और पूजा विधान बतलाया है। अब प्रस्तुत स्थूल गायत्री से सम्बद्ध यन्त्रों के दो प्रकार यहां दिये जा रहे हैं—

गायत्री-यन्त्र (पहला)

यह यन्त्र त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल तथा भूपुर से बना है तथा इसमें बीसा-यन्त्र के अंक, बीजमंत्र और गायत्री मन्त्र लिखा हुआ है। इसकी पूजा विधान अन्य बीसायन्त्रों के समान ही है; किन्तु विशेष यह है कि इसकी पूजा के प्रत्येक विधान में गायत्री मन्त्र का उच्चारण भी आवश्यक है। साथ ही इसकी पूजा करके इसके समक्ष गायत्री का जप करने से सभी प्रकार की मनोवाञ्छित कामनाएं पूर्ण होती हैं। यन्त्र इस प्रकार है—
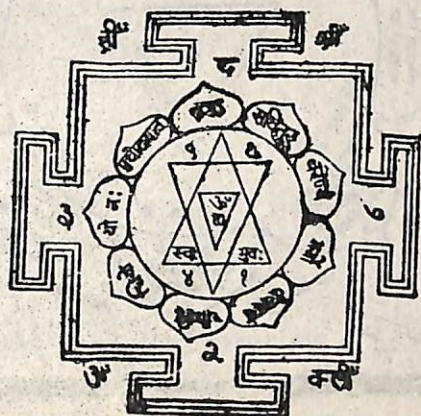
गायत्री-यन्त्र (दूसरा)

यह यन्त्र पूजा-यन्त्र है। इसका विधान विस्तार पूर्वक किया जाता है। पुरश्चरण के समय इस यन्त्र में आवरण-पूजा की जाती है, तथा इसमें छपे हुए नामों के मन्त्रों से ही प्रत्येक स्थान पर उन-उन देवियों की आवाहन से लेकर अन्त तक पूजा होती है। साधक अपने उपासना के दिनों में इस यन्त्र को चांदी आदि के पत्र पर तैयार करवाकर प्राण प्रतिष्ठा करे तथा पूजा करके कुंकुम से लाल बनाये अक्षरों से अथवा पूजादि से गायत्री-सहस्रनाम के नाम-

मन्त्रों से अर्चन करें। इससे गायत्री माता की कृपा प्राप्त होती है तथा आत्म-तेज की अभिवृद्धि होकर सभी प्रकार की सुख-समृद्धि सहज उपलब्ध होती है। इसका विस्तार अन्य अनुष्ठान-सम्बन्धी ग्रन्थों से प्राप्त करें।
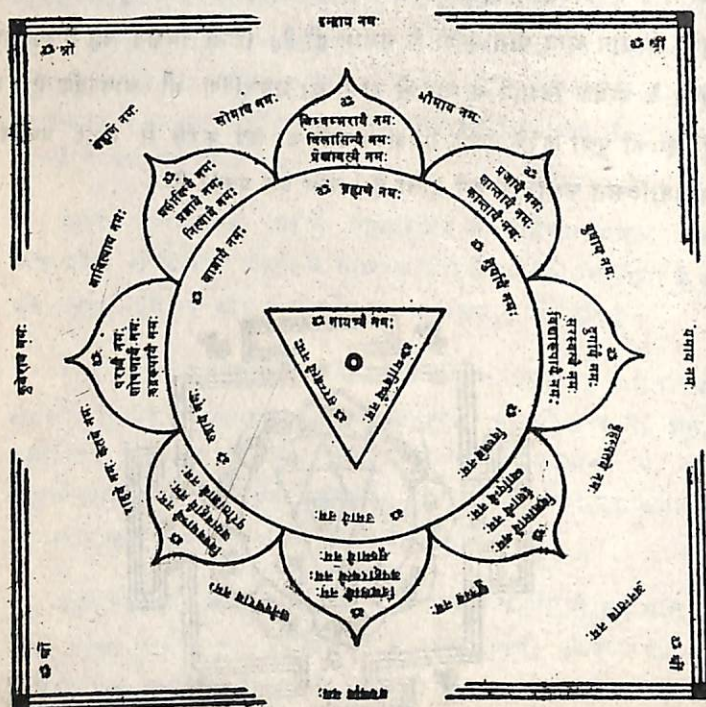
गायन्तं त्रायते या विषमविषमयैः संसृतेः दुःख जालै—
राबाल्याद् विप्रवृन्दैरनिशमिह मुदोपास्यते या प्रयत्नात्।
वेदानां सारभूतां निखिलभुवि सतां रक्षिणी मातृरूपा,
गायत्री-यन्त्ररूपा वितरतु कुशलं सर्वदा सा प्रसन्ना॥ १॥
—शास्त्र

---

१. गायत्री-यन्त्र और उनके मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, योग एवं स्तोत्र रूपी 'पञ्चामृत' से युक्त सभी विषयों का एक बृहद् ग्रन्थ 'गायत्री पञ्चामृत' नाम से हम तैयार कर रहे हैं। मां की कृपा रही तो वह शीघ्र प्रकाशित होगा। (लेखक)

१६

श्रीघण्टाकर्ण-महायन्त्र-साधना

भारतीय वैदिक, जैन और बौद्ध संस्कृतियों में अनेक देवी-देवताओं की उपासना समान रूप से होती है। उनके नाम तथा मन्त्रों में कहीं-कहीं कुछ अन्तर भी रहता है। परन्तु बहुत-से ऐसे देव भी हैं जिनके न तो मन्त्र में अंतर है और न यन्त्र में। घण्टाकर्ण देव भी ऐसे ही एक देव हैं। वैदिक संस्कृति के अनुसार पुराणों में घण्टाकर्ण को एक शिवभक्त के रूप में बतलाया गया है। यह ऐसा भक्त था कि अपने इष्टदेव के नाम-गुण सुनने के अतिरिक्त किसी अन्य देव की महिमा नहीं सुनना चाहता था और इसी से बचने के लिए उसने अपने कानों में दो घण्टे बांध लिये थे। जब भी कोई अन्य देव की प्रशंसा करता कि वह अपना सिर हिलाकर घण्टे बजाता जिससे कान में अन्य देव की महिमा के शब्द नहीं पहुंचते। ऐसी अनन्य भक्ति के कारण ही भगवान् शिव ने 'घण्टाकर्ण' को वरदान दिया कि तेरा स्मरण और पूजा जो करेगा उसका कार्य मैं सिद्ध कर दूंगा। इसी आधार पर घण्टाकर्णदेव की पूजा और उसका मन्त्र-जप प्रसिद्ध है तथा यह तत्काल सिद्धि देने वाला है।

घण्टाकर्ण की पूजा मीन संक्रान्ति में करने का विधान है। लिखा है कि—

> चैत्रे मासि च सम्पूज्यो घण्टाकर्णो घटात्मकः।
> आरोग्याय स्नुहीमूले सङ्क्रान्त्यां तत्र कारयेत्॥

अर्थात् चैत्रमास में स्नुही वृक्ष के मूल में घट के रूप में आरोग्य की प्राप्ति के लिए घण्टाकर्ण की पूजा करनी चाहिए।

इसी प्रकार जैन ग्रंथों में भी घण्टाकर्ण की महिमा बताई गई है। वहां घण्टाकर्ण के यंत्र कई प्रकार के प्राप्त होते हैं—जिनमें ६४ योगिनी और बावन भैरव सहित भी यंत्र हैं। कुछ कल्प भी इसके प्राप्त होते हैं जिनमें से एक का संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है।

घण्टाकर्ण-कल्प

प्रणम्य गिरिजाकान्तं देहि सिद्धि-प्रदायकम् ।
घण्टाकर्णस्य कल्पं यत् सर्वकष्ट-निवारणम् ॥ १ ॥

भगवती पार्वती ने भगवान् शिव को प्रणाम करके उनसे कहा कि 'मुझे सब प्रकार के कष्टों को दूर करने वाला घण्टाकर्ण का कल्प प्रदान कीजिए।

इस प्रकार आरम्भ करके इस कल्प के प्रयोगों तथा सिद्धि देने वाले कार्यों के फलों का निर्देश बड़े विस्तार से किया गया है, जिसका सारसंग्रह इस प्रकार है—

घण्टाकर्ण देव की प्रसन्नता एवं अपने कार्य की सिद्धि के लिए शुभ मास, शुक्लपक्ष पंचमी, दशमी, पूर्णिमा आदि शुभ तिथि, उत्तम वार, सिद्धि प्रदान करने वाले हस्तार्क, पुष्यार्क को अथवा अन्य उत्तम नक्षत्र, अमृत, आनन्द, श्रीवत्स जैसे सिद्धिप्रद योग तथा शुभ चन्द्रबल आदि देखकर कर्म आरम्भ करें। जप के लिए पवित्र एकान्त स्थान चुनें और उसमें शुद्ध वस्त्र पहन कर भूशुद्धि, भूत-शुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा आदि करके **'घण्टाकर्ण-महामंत्र'** का जप करे। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ घण्टाकर्णो महावीरः सर्वव्याधिविनाशकः ।
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षर-पंक्तिभिः ॥

रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्तकफोद्भवाः ॥

तत्र राज्यभयं नास्ति यान्ति कर्णेजपाः क्षयम् ।
शाकिनीभूतवेतालराक्षसाः प्रभवन्ति न ।

नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंशनम् ।
अग्निचौरभयं नास्ति घण्टाकर्ण ! नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ठः ठः ठः स्वाहा ।

इसका पुरश्चरण ३३ हजार जप करने से पूर्ण होता है तथा दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन का भी विधान हैं। प्रतिदि यन्त्र की पूजा करके १०८ से १००८ तक जप किया जाता है। यथासम्भ प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों काल जप करना चाहिए। घण्टाकर्ण क मूलयन्त्र इस प्रकार है।

श्रीघण्टाकर्ण-यन्त्रम्

इसके भिन्न-भिन्न प्रयोगों में बनने वाले यन्त्र तथा हवन सामग्री में कई वस्तुओं का समावेश होता है जिनका क्रमशः परिचय इस प्रकार है—

(१) दुष्ट देवभय हर

दुष्ट देव, राक्षस, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी के उपद्रव को मिटाने के लिए घंटाकर्ण का स्मरण बयालीस दिन तक करना चाहिए। प्रातः काल, मध्यान्ह और सायंकाल में मंत्र की एक-एक माला फिराना, और जप करते समय घी का दीपक व अगर धूप अवश्य रखना चाहिए। जब जप पूरे हो जायें तब अच्छा दिन शुभ मुहूर्त देखकर उत्तरांग क्रिया करना जिसमें एक चौकोर हवनकुण्ड बनाकर पास में ही घंटाकर्ण देव की स्थापना करना, आह्वान, पूजन आदि करके हवन करना चाहिए। हवन की सामग्री में काली मिर्च, सरसों, पुरानी साल, (जिसमें से चावल निकलते हैं), घृत और शक्कर शुद्ध लेकर एक तांबे के बरतन में अथवा तांबे की थाली में लेकर मन में मंत्र बोलना और आहुति देते समय स्वाहा शब्द ऊंचे स्वर से कहे। हवन-मंडप में पुरुषाकार यंत्र की स्थापना भी करनी चाहिए जिससे कार्य-सिद्धि शीघ्र होगी। और उसी दिन भोजपत्र, कागज या कपड़े पर अष्टगंध से लिखकर यन्त्र तैयार कर पास में रखा जाए तो फलदायी होता है। यह यन्त्र ग्यारह लाइनों के बारह-बारह कोष्ठकों में एक-एक मन्त्राक्षर लिखने से बनता है।

(२) भयहर पुरुषाकार यन्त्र

बहुधा देखा जाता है कि तामसी प्रकृतिवाले और मलिन मन के लोग दूसरे को पीड़ा पहुंचा कर आनन्द मानते हैं, और इस तरह के मनुष्य साधारण समुदाय के बड़े आदमी, धनवान और राजकीय पुरुषों के पीछे लग जाते हैं। इस तरह व्यक्तिगत वैरी खड़े हो गये हों और विविध प्रकार से यातना पहुंचाते हों तो घंटाकर्ण देव का जप अधिक से अधिक बयालीस दिन में तैंतीस हजार पूरा करना चाहिए और सम्पूर्ण होने के बाद शुभ मुहूर्त देख हवनादि क्रिया करे। जिसमें दूध, दही, घृत, केसर और गुग्गल को मिलाकर हवन करे। सामने सिद्ध पुरुष की जगह **'पुरुषाकार यंत्र'** की स्थापना करे जिससे भय नष्ट हो जायगा और वैरी की पराजय होगी।

(३) लक्ष्मी के लिए पुरुषाकार यन्त्र

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए घंटाकर्ण का सवा लाख जप करना चाहिए। इस कार्य के लिए दिन की मर्यादा नहीं है, परन्तु जप नियमित कर पूरा कर लेवे और सम्पूर्ण होने के बाद शुभ मुहूर्त देख हवनादि क्रिया करे। हवन में बादाम, पिश्ता, दाख, चारौली, कपूर, केसर, घृत, शक्कर और चन्दन इस तरह शुद्ध वस्तु को मिलाकर हवन क्रिया पूरी करे और पुरुषाकार यंत्र की स्थापना हवन मंडप में अवश्य स्थापित करे।

यह यन्त्र पुरुषाकार बनता है, जो सर्वसुलभ है। इस तरह का यंत्र ऊपर बताये हुए तीन विधानों में काम आता है। जिस मनुष्य को घंटाकर्ण देव का इष्ट हो उसे चाहिए कि सोने का, चांदी का, तांबे का अथवा सर्वधातु का यन्त्र बनवा कर नित्य पूजा किया करे। विधि इस प्रकार है—

एक पुरुषाकार चित्र बनाना। उसके अवयव, मान, उपमान-प्रमाण बना कर उदर विभाग पर बारह कोठे का यंत्र बनाकर उसमें अनुक्रम से ये अक्षर लिखना—

॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वदुष्टनाशनेभ्यः ॥

ऊपर बताये अनुसार बारह अक्षर लिखे। बाद में कंठ विभाग में 'श्रीं नमः' लिखना, बायीं भुजा में 'सर्व ह्रीं नमः' लिखना और दाहिनी भुजा में 'शत्रुनाशनेभ्यो नमः' दाहिने पांव में 'रीं रां रूं नमः' लिखना, बांयें पांव में 'ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः' लिखकर पुरुषाकार के आस पास घंटाकर्ण मन्त्र को वेष्टित रूप में लिखना। इस तरह भोजपत्र आदि पर अष्टगन्ध से लिखकर साध्य करने के लिए बादाम की गिरी, खारक और दाख लेकर घृत-शक्कर मिश्रित कर हवन करना और सिद्ध करने के बाद यंत्र को अपने पास रखना जिससे राजभय, देवभय मिट कर यश की वृद्धि होगी, सुख-सम्पत्ति और लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। इस तरह के यंत्र को कल्पवृक्ष के समान बताया गया है।

(४) लक्ष्मी प्राप्त्यर्थ षट्कोण यन्त्र

मन्त्र का जप तो पहले बताया है, उसी तरह करे और **'षट्कोण यन्त्र'** अष्टगंध से लिखे। छह कोने में छह अक्षर इस प्रकार लिखना, 'ॐ **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः'**। लिखकर चौकोर घंटाकर्ण मन्त्र लिखना, विधि सहित तैयारी करके साधक पुरुष की सिद्धि कराना, क्रिया करते समय पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठना, सफेद वस्त्र पहनना, आसन व माला भी श्वेत होनी चाहिए, साधन करने के दिनों में ब्रह्मचर्य पालन करे और सवा लाख जप बहत्तर दिन में सम्पूर्ण कर ले, हो सके तो दूध के आहार पर रहे और शक्ति न हो तो नित्य एकासन करे जिसमें श्वेत वस्तु विशेष काम में ले। जप करते समय धूप-दीप अवश्य रखना, उत्तर क्रिया में बादाम की गिरी, दाख, चारोली और घृत शक्कर, कपूर, चंदन का हवन करके यंत्र को अपने पास रखे तो छः महीने में ही धनप्राप्ति होगी और सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होगी।

(५) वशीकरण के लिये षट्कोणगर्भ चतुष्कोण-यन्त्र

घंटाकर्ण देव प्रभावशाली हैं। अतः इसका आराधन शुभ कार्य में ही करना चाहिए। जिनकी मति मलिन होगी वैसे पुरुष को सिद्ध भी नहीं होगा। अतः जब ऐसा कार्य हो तो साधन करते समय उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें, लाल रंग के वस्त्र पहिन कर आसन व माला बयालीस दिन तक फेरे। इस विधान में जप सवा लाख बताया है। अतः जैसा काम और समय हो वैसा उपयोग करे। सामने स्थापना के सिवाय **चतुष्कोण यन्त्र** जिसके अंतर्गत **षट्कोण** हो, पटिये पर स्थापित करे। धूप, दीप, नैवेद्य, फल भेंट रखें और काली मिर्च, रक्तचंदन तथा घृत का हवन कर जिस कार्य के लिए आराधना की हो घंटाकर्ण देव से प्रार्थना करे तो कार्य सिद्ध होगा।

(६) शत्रु उच्चाटनार्थ प्रयोग

शत्रु विशेष प्रकार से पीड़ा पहुंचाता हो, तो घंटाकर्ण मंत्र का विधि सहित चवालीस दिन में चवालीस हजार जप पूर्ण करे। पश्चिम दिशा में मुंह करके

बैठे। पीले रंग की वस्तु काम में ले, हवन-क्रिया में सरसों, बहेड़ा और कड़ुआ तेल का हवन किया जाय। इससे शत्रु भय पाकर परास्त होगा और पीड़ा मिटेगी।

(७) पुत्र प्राप्ति प्रयोग

पुत्र प्राप्ति के लिए इक्कीस दिन तक त्रिकाल एक-एक माला जप करे और विशेष साधन में दस महीने तक जप करे। साधन करते समय वायुकोण विदिशा की ओर मुंह करके बैठे। सफेद वस्त्र, आसन और माला काम में ले। इक्कीस दिन जप करे तब साथ ही दशांग धूप की घटा रखे, तो पुत्र प्राप्ति हो, और दस महीने तक ध्यान-स्मरण करने वाले को तो गया हुआ राज्य, गई लक्ष्मी भी वापस प्राप्त हो और सुख, सौभाग्य, यश, कीर्ति संपादन हो।

(८) कुबुद्धिनाशन प्रयोग

किसी मनुष्य की बुद्धि बिगड़ गई हो और दूसरे मनुष्यों का अनिष्ट चिंतन किया करता हो, तो उसकी बुद्धि ठिकाने लाने के लिए पच्चीस दिन में दस हजार जप पूर्ण कर ले और गुग्गल, घृत, शक्कर, कपूर मिश्रित कर हवन करने से बुद्धि ठिकाने आ जाती है। रोग मिटे, सुख बढ़े और शत्रु की पराजय हो। विशेष में चार सौ जप नित्य पच्चीस दिन तक जाई के पुष्प से करे तो शीघ्र सिद्धि होगी। पुष्प स्थापना पर जप पूर्ण होते ही सीधा चढ़ाता जाय जिसका डण्ठल ऊपर रहे।

(९) कूंख छुड़ाने का प्रयोग

किसी स्त्री की कूंख बंध गई हो तो घंटाकर्ण देव का आराधन करके सात वृक्षों के पत्ते मंगवाना—चम्पा, चमेली, मोगरा, नारंगी, नींबू, लाल फूलों का कनेर तथा सफेद फूलों का कनेर। इस तरह सातों वृक्षों के पत्ते शुद्ध कर ले और २१ कुओं का पानी मंगवाकर और एक तांबे के घड़े में भर लेना। घड़े के ऊपर पांच (ह्रीं) कार लिखना और एक (श्रीं) कार

लिखना। घड़े के ऊपर सात बार मध्यमा उंगली की अंगूठे से फटकारना। इतनी क्रिया के बाद घड़े के मौली बांधना, बाद में घंटाकर्ण मंत्र पढ़ते जाना और सात भांति के पत्ते उसके ऊपर बांधना। फिर चावल का स्वस्तिक बनाकर उसके ऊपर सात बार कलश को उतार कर स्वस्तिक पर रख देना। दीपक चार बत्ती का रखना, धूप अखंड चलता रहे ऐसी योजना करना। फिर घण्टाकर्ण मंत्र का जप करता जाय और साथ ही बादाम की गिरी, दाख, खारक, चारौली, पिश्ता, जव, तिल, उड़द, शहद, शक्कर, अबीर, चावल और घृत मिश्रण कर हवन करता जाय। क्रिया सम्पूर्ण होने पर अबोले कलश को लेकर घुटने प्रमाण पानी में रख आवे, इस तरह सात दिन तक करे और साथ ही सातों दिन की क्रिया में नीला डोरा मंत्रित करते जाना। उस डोरे को सातवें दिन स्त्री को स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिने बाद गले में बांध देना जिससे कूख चलने लगेगी और सौभाग्य बढ़ता जायगा, पुत्र प्राप्ति होगी।

(१०) मृतवत्सा-दोषनिवारक प्रयोग

मृतवत्सा का अर्थ यह है कि किसी के बालक होकर जीवित नहीं रहता हो और अल्प आयु में ही मृत्यु हो जाती हो, उसे मृतवत्सा-दोष कहते हैं। इसका निवारण करने के लिए घंटाकर्ण देव की आराधना में बत्तीस कुओं का पानी मंगवाना और उसे एक शुद्ध बरतन में भर लेना और नौ वृक्षों के पत्ते मंगवाना—(१) अनार, (२) फालसा, (३) अड़ूसा, (४) आम, (५) लाल फूलों का कनेर, (६) सफेद फूलों का कनेर, (७) सेवंती, (८) नारंगी और (९) अंजीर के पत्ते एक थाली में रख जाई, चम्पा, चमेली, कदम्ब और अनार के पुष्प मंगवाना और बत्तीस कूओं के पानी को मंत्रित कर उससे पांच रास्ते मिलते हों वहाँ जाकर या मकान में ही स्त्री को उस पानी से स्नान करने के लिए कहना। स्नान करने के साथ ही वृक्षों के पत्ते व पुष्प पानी के साथ ही ऊपर गिरते जाएं ऐसी व्यवस्था करे और शुद्ध वस्त्र पहिनने के बाद

एक डोरा मंत्रित कर गले में बांध दे तो मृतवत्सा-दोष अवश्य टल जाता है और संतान दीर्घ आयु वाली होगी।

(११) सर्व प्रयोग विधान

घण्टाकर्ण मंत्र के प्रभाव से रोग का नाश होता है। मृगी रोग जाता है, मार्ग में स्मरण करने से तस्कर, हिंसक जानवर आदि का भय टल जाता है। ताव, एकांतरा, तिजारी आती हो तो कसुंबल रंग का डोरा इक्कीस बार मंत्रित कर गले में बांधने से ताव चला जाता है, और शाकिनी, डाकिनी, भूत-प्रेत, पिशाच के उपद्रव, चौरासी वात आदि का सात दिन तक झाड़ने से सारा उपद्रव मिट जाता है, और शरीर में पीड़ा होती हो तो वह नष्ट हो जाती है।

(१२) एक सौ बत्तीस कोष्ठक यंत्र

ऊपर बारह कोठे से बना और वहीं से नीचे की ओर ग्यारह कोठे बनाने से कुल एक सौ बत्तीस कोठे होंगे, जिनमें ऊपर एक कोठा अलग बनाकर उसमें (ह्रीं) लिखना और फिर प्रथम कोठे से "ॐ घण्टाकर्णो महावीर" इस तरह एक कोठे में एक-एक अक्षर लिखते जाना। यंत्र अष्टगंध से लिखना। पवित्रता आदि का वर्णन ऊपर के विधानों में कहा है उसी प्रकार रखकर विधान करना और पंचामृत हवन करना जिसमें दूध, शक्कर, घृत और खारक इन सबको मिश्रित करना। फिर यंत्र को पास में रखना जिससे रक्षा होगी, सहायता मिलेगी, सर्प का भय जाएगा, शाकिन्यादि दोष मिटेगा और सुख सौभाग्य धन-सम्पत्ति की वृद्धि होगी।

(१३) चतुष्कोण यंत्र प्रयोग

चौकोर यंत्र बनाकर उसको घंटा के आकार में वेष्ठित करना और ऊपर व बीच में (ॐ) लिखना। बाद में दूसरे मंत्राक्षर लिखते जाना। भोजपत्र या कपड़े अथवा कागज पर अष्टगंध से लिखे। बाद में दशांश हवन कर यंत्र को

पास में रखे तो धन, धान्य, लक्ष्मी की वृद्धि होगी और कष्ट-उपद्रव के समय में रक्षा होगी। सोने और चांदी के पतरे पर भी यह यंत्र बनाकर पास में रखने का विधान है। जैसे जिसकी शक्ति व इच्छा हो वैसा करे।

(१४) अष्टदल कमल यन्त्र प्रयोग

अष्टदल कमल बनाकर उसके बीच में इस तरह लिखना।

ॐ घंटाकर्ण महावीर देवदत्तस्य
सर्वोपद्रवक्षयं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इतना लिखकर कमल के आठ कोष्ठों में "ॐ ह्रीं, ॐ ह्रीं, ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं" इस तरह आठ अक्षर लिखना और उन सब कोठों के ऊपर गोलाकार लकीर खींचकर उसमें गोलाकार ही एक सौ पैंतीस अक्षर का मंत्र 'ॐ

श्रीघण्टाकर्णअष्टकमलयन्त्रम्

घण्टाकर्ण महावीर' आदि लिखना। इस तरह का यंत्र चांदी, सोने, तांबे के पतरे पर या भोजपत्र, कपड़ा, कागज आदि पर लिख सकते हैं। यंत्र को अष्टगंध से ही लिखना चाहिए। बाद में मंत्रित कर दही, दूध, घृत, शक्कर, शहद, दाख, खारक, खोपरा, बादाम, चारौली इस तरह दश वस्तु को मिश्रित कर हवन करना जिससे यंत्र सिद्ध होगा और यंत्र को पास में रखना या जनता के लिए अथवा गांव के लिए खास उपद्रव हटाने के लिए हो तो टोकरी में बांधकर गांव के मध्य में लटका देने से भय दूर होगा, समस्त भय मिटेगा, सुख की वृद्धि होगी, सौभाग्य बढ़ेगा और आयु यश कीर्ति फैलेगी।

(१५) राजभय हरण प्रयोग

किसी के ऊपर आपत्ति आ गई हो तो घण्टाकर्ण के मंत्र का जाप करे और पहले बताए अनुसार ध्यान करे तब लाल रंग के वस्त्र पहिने। लाल आसन, लाल वस्त्र, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठे, लाल कनेर के पुष्प से दस हजार जप करे, पुष्प घंटाकर्ण यंत्र पर या चित्र पर चढ़ाए जायें और दस हजार गुग्गल की गोलियां बनाकर हवन करता जाए। इस तरह यह क्रिया सात दिन में पूरी कर लेवे। नित्य एकाशन करे और श्वेत वस्तु का भोजन करे तो राजभय नहीं होगा।

(१६) बन्दी मोक्षकारक प्रयोग

बंदी को छुड़ाने के निमित्त जप किया जाता हो तो वस्त्रादि तो लाल ही चाहिएं; परन्तु मुख पश्चिम दिशा की ओर करके बैठे और स्वयं के लिए हो तो "मम मोक्षं कुरु कुरु" कह कर जप करता जाए और किसी दूसरे के लिए हो तो उसका नाम लेकर "अमुक वंदिनः मोक्षं कुरु कुरु" कहता जाए। सात दिन तक जप करे। पंचामृत सेवन करे तो सर्व प्रकार की सिद्धि प्राप्त होगी।